ऊर्जा के स्त्रोत हैं बच्चे, इनके साथ रहने से मिलती है हमें नई ऊर्जा : एस.पी.

बचपन ऊर्जावान होता है। बच्चों की तोतली बोलियों में ऊर्जा छिपी होती है। इन लोगों के बीच आने से हमें नई ऊर्जा मिलती है और यही कारण है कि ऐसे कार्यक्रमों में आना मैं अक्सर पसंद करता हूँ। उक्त बातें जहानाबाद के आरक्षी अधीक्षक श्री मनीष ने पी.पी.एम. स्कूल के वार्षिकोत्सव में कहा। इस कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि संस्कारित युवा समाज की जरूरत है और ऐसे शैक्षणिक संस्थानों के बदौलत ही ऐसी जरूरतें पूरी की जा सकती है। ऐसे विद्यालयों के कार्यक्रम बताते हैं कि इन संस्थानों में बच्चों को संस्कार आधारित शिक्षा उपलब्ध करायी जा रही है। संस्कारविहिन छात्र देश व समाज के लिए नासूर बन जाता है। अत: अभिभावकों को भी चाहिए कि समय-समय पर बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए इनके ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने का खुद भी प्रयास करे।

इस अवसर पर एसडीपीओ प्रशांत भूषण श्रीवास्तव ने कहा कि बच्चे देश के भावी भविष्य हैं। जिन्हें गढ़ने की जिम्मेवारी शिक्षकों के ऊपर है और शायद यही कारण है कि शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्ति के गौरवप्राप्त विद्यालय की प्रशासिका इंदू कश्यप ने संस्कारयुक्त शिक्षा का संकल्प दोहराते हुए अभिभावकों एवं समाज को आश्वस्त किया कि आप निश्चिंत रहे और इस संस्था पर आप यू ही विश्वास बनाये रखे, हम आपको संस्कारवाण युवा देंगे, जो नैतिकता व राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत होगा। वही विद्यालय के अध्यक्ष डॉ० एस.के. सुनील ने आगत अतिथियों का स्वागत अंगवस्त्र तथा पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए कहा कि आप सबों के प्रेम के कारण ही हम अपने मिशन में लगातार सफल हो रहे हैं। आपका स्नेह के बदौलत पी.पी.एम. विद्यालय जिला ही नहीं पूरे राज्य में पहचान बना रखा है और अपना 16वाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है। इसके लिए समाज के हर वर्ग व हर क्षेत्र के लोगों के साथ-साथ विद्यालय परिवार मीडिया के बंधुओं का खास आभारी है।

कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन विद्यालय के संरक्षक श्री श्री सुदर्शनाचार्य जी महराज ने दीप प्रज्वलित करते हुए किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री महराज जी ने बच्चों को आर्शीवाद देते हुए कहा कि संस्कारों का बीजारोपण बचपन से परिवार से ही शुरू हो जाता है परन्तु संस्कार का यह बीज तब तक प्रस्फुटित व प्रफुल्लित नहीं हो सकता, जब तक की हम अपने संस्कृति का न जाने। गुरूकुलों में संस्कृति आधारित संस्कार व संस्कार आधारित विद्या की सिख दी जाती रही है। यही कारण रहा है कि पौराणिक काल के विद्यार्थी विद्यावाण के साथ-साथ उच्च चरित्र व संस्कारवान हुआ करते थे। इस कार्यक्रम में बच्चों ने अपनी एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर उपस्थित समूहों का मन मोह लिया। समाज में बदल रही युवाओं के सोच पर आधारित नाटक प्रस्तुत कर समाज को जहां सिख देने का प्रयास किया गया, वही डी.जे. व सस्वर में गाये गये गीतों पर आकर्षक नृत्य प्रस्तुत कर बच्चों ने दर्शकों को वाह-वाह करने पर मजबूर कर दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ० अरूण कुमार, प्रो० चन्द्रभूषण कुमार उर्फ भोला बाबू, प्रो० कृष्णा मुरारी, अक्षय कुमार सहित बड़ी संख्या में जिले के जाने-माने विद्यालय संचालक भी उपस्थित थें।

बनाया गया है। इस अवसर पर भोला बाबू ने अपने विद्यालय के वार्षिक क्रियाकलापों का लेखा-जोखा भी रखा। इस कार्यक्रम में शहर के जानेमाने चिकित्सक डॉ० के. राजन, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित भाजपा नेत्री इंदू कश्यप, बाल विद्या मंदिर विद्यालय के संचालक अक्षय कुमार, संत कोलंबस विद्यालय के निदेशक राकेश कुमार, मानस इंटरनेशनल शैक्षणिक ग्रुप के चेयरमैन प्रो० अरूण कुमार सिन्हा, रेडक्रॉस सोसायटी के कोषाध्यक्ष राजकिशोर, सुभाष शर्मा सहित अनेकों गणमान्य अतिथि उपस्थित थें।

बच्चों ने कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती वंदना से किया। बाद में एक से बढ़कर एक राष्ट्रभक्ति और समाजिक शिक्षा से ओतप्रोत नृत्य और गीत प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। ●

गोली का जवाब गोली से : डीजीपी

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

मौजूदा बिहार को कभी भी वैसा खुशहाल, सम्पन्न नहीं देखा, जितना प्राचीन काल और मध्यकालीन इतिहास में बिहार आर्थिक प्रशासनिक, सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न दिखता है। बिहार प्रदेश अब कब आत्मनिर्भर सम्पन्न सुरक्षित और खुशहाल बनेगा। यह प्रश्न हम सबके सामने है। बिहार वासियों की गरिमा और प्रतिष्ठा कब स्थापित होगी। बिहार का चौमुखी विकास कौन करेगा? अप्रैल 1912 को बिहार राज्य की स्थापना से लेकर आज तक का इतिहास उपेक्षा पिछड़ेपन, जातिगत, संघर्ष, गरीबी, शोषण, उत्पीड़न का इतिहास है। धान, गेहूं, मक्का, जौ, गन्ना, तिलहन, दहलन, आलू तम्बाकु, आदि फसलों को उत्पादन करने वाला बिहार प्रदेश आज सरकारी उपेक्षा के कारण कृषि कार्य से लगभग विमुख हो चुका है। कभी बिहार में पूर्वी सोन नहर, पश्चिमी सोन नहर, त्रिवेणी नहर, कमला नहर, कोशी नहर, राजपुर नहर आदि सिचाई के लिए भी वे अधिकांश नहरें बंद हो चुकी है। बिहार में तेरह विश्वविद्यालयों, तीन शोध संस्थानों छह चिकित्सा महाविद्यालयों, नौ विधि महाविद्यालयों एवं पांच आयुर्वेद महाविद्यालयों की स्थिति दयनीय है। राज्यस्तरीय पुस्तकालय, पशु चिकित्सा महाविद्यालय, इंजीनियरिंग महाविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, तकनिकी महाविद्यालय तथा शोध प्रयोगशालाएं और अनुसंधान केन्द्रों की स्थिति भी लचर है। आज बिहार में शिक्षा की बदहाली के कारण शिक्षा प्राप्त छात्रों को संदेह की दृष्टि से और उनके प्रमाण-पत्र को जी समझा जाने लगा है। यह जमीन सम्राट अशोक, गौतम बुद्ध, राजा जनक, सीता, जरासंघ, महावीर, कौटिल्य, चन्द्रगुप्त, मौर्य, राहुल सांस्कृत्यान, आर्यभट्ट, रामवृक्ष बेनीपुरी, रेणु, बीर कुँअर सिंह, राजेन्द्र प्रसाद, श्री कृष्ण सिंह, जयप्रकाश नारायण, दिनकर, नागर्जुन, शिवपूजन सहाय, जैसी विभूतियों की जमीन है किंतु आज बिहार अपराधियों और भ्रष्टाचारियों का शरण स्थल बन गया है। नये-नये तरह के अपराध फल-फूस रहे है। बिहार अपराध अनुसंधान संस्थान बन गया है। राजनीतिज्ञों की नजरों में किसान जायेगा कहां भोजन की आवश्यकता के चलते किसान खेती करेगा ही, किसानों को मजबूर बनाए रखों। राजनीतिज्ञों का एक ही एजेंडा है कि किसी प्रकार सत्ता पर काबिज रहें। उन्हें न तो राज्य के विकास से कुछ लेना देना है, और नहीं आमजनों की सुरक्षा से उनकी कमाई और सुरक्षा में दिनों दिन वृद्धि हो

रही है। अत: उन्हें चारों ओर विकास और सुरक्षा का माहौल नजर आ रहा है। सत्ता प्राप्ति के लिए सत्ताधीश अपने कार्यकताओं और नौकरशाहों द्वार प्रस्तुत आकड़ों का धुंआंधार प्रचार करने और सत्ता के हासिल करने को ही अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं। आजादी के सत्तर सालों में न जाने कितने चुनाव हुए परन्तु हालात दिन प्रतिदिन विगड़ते ही जा रहे है। इस स्थिति को देखकर ही सर्वोच्च न्यायालय को यह कहना पड़ा कि देश भगवान भरोसे ही चल रहा है, अर्थात व्यवस्था नगण्य है फिर क्या आवश्यक है। नेताओं को पालने की। लोकतंत्र में राजनीतियों को जनसेवक का दर्जा प्राप्त है और मालिकाना हक जनता के पास है। वास्तविक स्थिति सबको मालूम है। सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों दिखाते के लिए नुराकुश्ती करते रहते है। राजनीति एक ऐसा व्यापार गया है कि जिसमें एक लगाओं करोड़ों पाओं की नीति है। अत: टिकट पाने के लिए साम-दाम-दंड-भेद सभी का प्रयोग किया जा रहा है इससे सिद्ध होता है कि राजनीति सेवा का नहीं, बल्कि कमाई का क्षेत्र बने कर रह गया है। आज बिहार अपराध और भ्रष्टाचार की नगरी बन चुकी है। नये नये प्रकार के अपराध हो रहे हे। अधिकांश जनप्रतिनिधि और नौकर शाह अपनी गरिमा को त्यागकर सरकारी सम्पत्ति की लूट में लगे हुए है। बालिका सुरक्षा गृह को यौण आपूर्ति केन्द्र बना दिया गया, यह ऐसी घृणात्मक घटनाएं पूरी दुनिया में शायद पहली हो इस घटना से सरकार को छोड़कर समूचे बिहार का सर शर्म से झुक गया। यह समाचार लिखने के समय तक जदयू एवं भाजपा के मुख्यि देखने तक नहीं गए और नहीं तत्कालीन डी जी पी गए। सुप्रीम कोर्ट को बिहार सरकार पर भरोसा ऐसा टूट गया कि इस मुकदमें को बिहार न्यायालय से दिल्ली ट्रांसफर कर दिया गया। सुप्रीम कोर्ट ने मुजफ्फरपुर बालिका गृह मामले में बिहार सरकार और सी बी आई को फटकार लगाते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने इस केस को बिहार से नयी दिल्ली के साकेत पॉस्को कोर्ट में ट्रांसफर कर दिया। बड़े-बड़े पद पर निष्ठावान के बदले भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों को बैठा दिया जाता है। जिसमें गंभीर मामला उजागर नहीं हो सके। यदि भूल से अनजाने में ईमानदार लोग आ जाते है तो उन्हें संटिंग पोस्ट देकर उनके उत्साह को क्षरित कर दिया जाता है।

बिहार सरकार द्वारा शराब बंदी की खूब ढ़ोल पीटी गयी परन्तु लोग बतातें है कि पहले से शराब मिलना आसान हो चुका है। पहले शराब की दूकान पर लाने के लिए जाना पड़ता था और अब फोन से घर पर ही मंगवा लेते है। बताया जाता है कि जो शराब जप्त की जाती है वह शराब थाने से बेच दी जाती है। यह मामला अधिकांश थानों की है। थानेदार पकड़े भी जा चुके है। इसका उदाहरण है मुज्जफरपुर में मोतीदपुर का थानाध्यक्ष कुमार अमिताभ और जमादार अमेरिका प्रसाद को जप्त शराब बेचने के आरोप में मुकदमा दर्ज कर 38 पुलिसकर्मी को लाईन हाजिर कर दिया गया सबसे ज्यादा चर्चा का विषय था कि थानेदार अपने चैम्बर के आगे लिखवा रखा था कि बिहार की जनता की पुकार नशा मुक्त हो मेरा बिहार शराब का जो हुआ शिकार उजड़ा उसका घर परिवार। आँकड़ों का खेल बिहार में लगातार जारी है। आँकड़ों में अव्वल बिहार का जमीनी सच देख-सुनकर कोई भी चौंक सकता है। शराब बंदी के साथ-साथ स्वच्छता अभियान भी कागजी घोड़ा बनकर रह गया है। अन्य योजनाएं भी बिहार में दम तोड़ चुकी है। सड़क दुर्घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य तथा पुलिसिया तंत्र भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ चुका है। ऐसे में भले लोगों का जीना हराम हो चुका है। सुशासन का सपना बिहार में चकनाचूर हो चुका है। डीजीपी बनते ही श्री गुप्तेश्वर पाण्डेय एक्शन में आये तथा अपराधियों को स्पष्ट कहा कि अपराधियों को गोली की जबाव गोली से पुलिस देगी। उन्होंने पुलिस अधिकारियों और कर्मियों को स्पष्ट संदेश दिया कि कोताही और भ्रष्टाचार में लिप्त बर्दास्त नहीं किया जाएगा। पुलिस के सस्पेण्ड से पुलिस पर अंकुश नहीं लगा सकता है। पुलिस अधिकारी को भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाने पर बर्खास्त या जेल भेजना होगा। निर्दोष को जेल तथा दोषी को बचाने वाले पुलिस कर्मी को जेल भेजना होगा। ●

पर्यावरण प्रेमियों तथा स्कूली बच्चों ने बनायी वृहत मानव श्रृंखला

● मुन्ना पाण्डेय

पर्यावरण संरक्षण व पेड़ों के बचाने के उद्देश्य से शुक्रवार को हरित हरनौत के सदस्यों व पर्यावरण प्रेमियों की ओर से प्रखंड मुख्यालय स्थित डाकबंगला परिसर में पर्यावरण बचाने के लिए मानव श्रृंखला बनाई गई। सुबह 7:30 बजे से ही स्कूली बच्चे सड़कों पर पोस्टर-बैनर लिए चलते दिखाई देने लगे थे। मानव श्रृंखला में शामिल लोगों ने पर्यावरण और पेड़ों के संरक्षण के लिए बैनर-पोस्टर हाथों में लेकर लोगों को संदेश दिया। सुबह 8 बजे से 9:30 बजे तक मैदान में मानव श्रृंखला में हाथ से हाथ मिलाकर खड़े होकर संस्था के सदस्यों और पर्यावरण-प्रेमियों सहित छात्र-छात्राओं ने विभिन्न नारों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। निजी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं और शिक्षकों ने हिस्सा लेकर न केवल लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा का संदेश दिया बल्कि छात्र-छात्राओं को पर्यावरण की सुरक्षा के लिए शपथ भी दिलाई गई। इस दौरान स्कूली बच्चे सहित अन्य लोगों को कुल आठ हजार अमरूद का पौधा निःशुल्क बांटा गया, कार्यक्रम का संचालन मार्गदर्शक समाजसेवी चन्द्र उदय कुमार ने किया। वहीं धन्यवाद ज्ञापन हरित हरनौत संस्था के संयोजक रवि कुमार ने किया।

इस अवसर पर हरित हरनौत के संयोजक रवि कुमार ने कहा कि सीमित संसाधनों का असीमित उपयोग से समस्याएं बढ़ रही है। जल, जमीन और जंगल तीनों समाप्त होते जा रहे हैं। पेड़ों के बिना प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसलिए हमारे पूर्वजों ने पेड़ों को पूरा महत्व दिया था। वेदों-पूराणों और शास्त्रों में भी पेड़ों के महत्व को बताया गया है। उन्होंने कहा कि आज पेड़ों को बचाने की और अधिक से अधिक पौधे लगाने की जरूरत है। पर्यावरण, ईश्वर द्वारा प्रदत एक अमूल्य उपहार है, जो संपूर्ण मानव समाज का एकमात्र महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। प्रकृति द्वारा प्रदत अमूल्य भौतिक तत्वों-पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि से मिलकर पर्यावरण का निर्माण हुआ है। यदि मानव समाज प्रकृति के नियमों का भली-भांति अनुसरण करें तो उसे कभी भी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं में कमी नहीं रहेगी। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वायु, जल, मिट्टी, पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं आदि पर निर्भर है और इनका दोहन करता आ रहा है। अब लोगों को चाहिए कि बेकार पड़े जमीन पर अधिक से

अधिक पौधे लगाये जायं तो पर्यावरण का संतुलन सम्भव हो सकेगा। वायुमंडल में 78.08 प्रतिशत नाइट्रोजन, 20.95 प्रतिशत ऑक्सीजन, 0.03 प्रतिशत कार्बन डाई ऑक्साइड तथा करीब 0.96 प्रतिशत अन्य गैसें है। गैसों का यह अनुपात सभी प्रकार के जीवों के पनपने के लिए उपयुक्त है। व्यापक तौर पर देखें तो ऑक्सीजन जीवों के लिए अतिआवश्यक है। यह हमारे शरीर की कोशिकाओं को ऊर्जा प्रदान करती है। ऑक्सीजन की कमी से सारी क्रियाएं और अभिक्रियाएं गड़बड़ा जाएगी। इसके साथ-साथ जीवन के लिए जरूरी वनस्पति तथा हाइड्रोकार्बन के अणुओं का भी नाश शुरू हो जाएगा, यानि ऑक्सीजन की कमी जीवन के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। अब भी ऑक्सीजन का प्रतिशत 20 से कम हो तो हमें सांस लेने में तकलीफ हो जाएगी। सारी सृष्टि की गतिविधियां रूक जाएगी और ऊर्जा न मिल पाने से जीवन का नामो-निशान मिट जाएगा।

इस मौके पर संस्था के अध्यक्ष प्रो. सूर्य कुमार ने कहा कि वर्तमान युग में औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण का युग है। जहाँ आज हर काम को सुगम और सरल बनाने के लिए मशीनों का उपयोग होने लगा है। वहीं पर्यावरण को नुकसान भी पहुँचा रहे हैं। ऐसे में पेड़ लगाने के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है। मौके पर पर्यावरणप्रेमी बिहारी शर्मा ने कहा कि पौधारोपण और पर्यावरण का संदेश देने के लिए आयोजित की गई हरित हरनौत के द्वारा पर्यावरण जागरूकता अभियान हेतु मानव श्रृंखला लोगों में पौधे लगाने के प्रति पूर्ण जागरूकता फैलाने में अपनी भूमिका दर्ज करेगी। उन्होंने कहा कि ऐसे श्रृंखलाओं का पूरे समाज में सार्थक संदेश जाता है और लोग इसके उद्देश्यों से जल्दी से जुड़ते चले जाते हैं। भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रलय द्वारा प्रति वर्ष 19 नवम्बर को इंदिरा गाँधी पय्यावरण पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के तहत व्यक्ति या संगठन को एक लाख रूपए की प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाती है।

कार्यक्रम के मार्गदर्शक समाजसेवी चन्द्र उदय कुमार न कहा कि मानव के स्वार्थी गतिविधियों के कारण पर्यावरण को जो नुकसान हो रहा है। उसका खामियाजा मानव को ही भोगना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि प्रकृति का दोहन नहीं संरक्षण और संवर्द्धन की जरूरत है। जैसा कि हर चीज को जहाँ में कुदरत ने दिल बरी दी, परवाने को तपिस दी, जुगनू को रोशनी दी। इस मौके पर डॉक्टर मणिकांत गुप्ता ने कहा कि अगर हमें पूरे विश्व की पर्यावरण की सुरक्षा करनी है, तो पेड़ लगाना होगा नहीं तो आने वाले समय में पर्यावरण ज्यादा प्रदूषित हो जाएगा और फिर पृथ्वी पर मानव और अन्य जीवों का जीवन मुश्किल हो जाएगा। कवि एतवारी पण्डित ने अपने कवितओं के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि प्रकृति संरक्षण ही जीवन संरक्षण है, प्रकृति बचाएं जीवन को खुशहाल बनायें इस

संकल्पना के साथ-साथ सभी समाजसेवियों एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रकृति संरक्षण संदर्भ में शपथ ली गयी। इस पर्यावरण जागरूकता अभियान में मुख्य रूप से हरित हरनौत के अध्यक्ष सूर्य कुमार, हरित हरनौत के संयोजक रवि कुमार, कार्यक्रम के मार्गदर्शक समाजसेवी चंद्र उदय कुमार, पर्यावरणप्रेमी राकेश बिहारी शर्मा, फिल्मकार एस.के. अमृत, फिल्मकार जयंत अमृत, कोषाध्यक्ष निरंजन नारायण, प्रोफेसर धनंजय कुमार, शिक्षक संघ हरनौत के अध्यक्ष सुनील कुमार, कवि एतवारी पण्डित, पत्रकार सुनील कुमार, प्रो. अशोक कुमार, पूनम लाल, शैलेन्द्र कुमार, सचिन कुमार, डॉ. गोपाल, कनीय अभियंता तरूण कुमार, मुखिया मनीष कुमार, सजेश कुमार, गुड्डू कुमार, धर्मवीर कुमार, छोटे लाल, मुन्ना पाण्डेय, छोटे प्रसाद, रंजन कुमार, डॉ. मणिकांत कुमार, सुनील कुमार, छोटे लाल, सन्नी कुमार, विक्की कुमार, जनक कुमारी, आस्था प्रकृति, शिखा, सलोनी सहित नालन्दा के कई समाजसेवी तथा पर्यावरण प्रेमी मौजूद रहे।

☞ **ये रहे सहयोगी :-** इस दौरान हरित हरनौत के सदस्यों के साथ जी.एस.एम. एकेडमी, आर. पी.एस. कॉलेज, दिल्ली पब्लिक इंगलिश स्कूल, पी.जी. इंटरनेशनल स्कूल, वैष्णवी क्लासेस कॉसेप्ट स्कूल, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जीवन ज्योति स्कूल, शारदा इंटरनेशनल स्कूल, कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय, सेंट्रल पब्लिक स्कूल, गाँधी मेमोरियल स्कूल, माँ भारती शिशु मंदिर, ए.सी. सी. स्कूल, मेरिट पब्लिक स्कूल, न्यू कैम्ब्रिज स्कूल, नेत्र निदान आँख अस्पताल, तन्नू हड्डी क्लिनिक, नटरान मोबाइल, आरूषि फैशन, गौरव कुमार (जी.पी.एस.), गहना घर, आराम घर, गौरव ड्रेसेज, मित्र फार्मा, संजयकान्त सिंन्हा (जदयू प्रवक्ता), दुर्गा औटोमोबाईल, आर्या स्कूल, आर. आई.एम. स्कूल, विक्की घी भंडार, रूपवर्षा जेनरल स्टोर, सोनू स्वीट्स अपना सर्जिकल, आस्था एग्रोटेक, समग्र विकास मंच, ड्यूक, मालाकार वाच एण्ड मोबाईल सर्विसिंग सेंटर, आयुष इलेक्ट्रॉनिक्स, नालन्दा इलेक्ट्रॉनिक्स, सरस्वती पुस्तक भंडार, गुप्ता टेलीकॉम, अनुराग प्रेस, मिशन हरियाली, किड्स केअर स्कूल, साहिल डिजिटल स्टूडियो, संत प्लाई, पी.एन.बी. बैंक, नालन्दा कोऑपरेटिव बैंक, माता जी ईंट उद्योग, पाण्डे डी.जे., गायत्री एच.पी., मिथलेश किराना, डॉ. मणिकांत चाइल्ड हॉस्पीटल, प्राथमिक विद्यालय मंझौली, सहित कई संस्थानों के लोगों ने हाथ से हाथ मिलाकर अपने सहयोगियों और इष्टमित्रें के साथ मिलकर मानव श्रृंखला का निर्माण किया।

☞ **क्या है हरित हरनौत :-** हरित हरनौत एक निजी संस्था है, जो पर्यावरण के लिये कार्य करती है। इस संस्था में कुछ चौबीस सदस्य हैं, जो निजी खर्च से पौधा खरीदकर दूसरे स्कूलों के छात्रों के बीच व अन्य जगहों पर लगाते हैं। यह संस्था अब तक पाँच हजार पौधा बाँटने और लगाने का कार्य किया है।

☞ **ड्रोन कैमरा से रखी गई नजर :-** पूरे कार्यक्रम को ड्रोन कैमरा से भी नजर रखी जा रही थी। कार्यक्रम का पूरा कवरेज के वीडियोग्राफी सहित दो ड्रोन कैमरा भी तैनात की गई थी, ताकि किसी भी तरह का समस्या उत्पन्न न हो। सभी लोगों पर नजर रखी जा सके।

☞ **प्रशासनिक अधिकारी रहे नदारद :-** पर्यावरण के प्रति सरकारी अधिकारियों का रवैया नकारात्मक देखने को मिली। लिखित सूचना देने के बावजूद भी प्रखंड स्तरीय अधिकारी कार्यक्रम में भाग लेना मुनासिब नहीं समझा। ऐसे में विकास की कहानी अधूरी लगती है। ●

मशरूम उत्पादन कर युवा करें बेरोजगारी दूर

स्थानीय कृषि विज्ञान केन्द्र हरनौत में किसानों को मशरूम के लिये प्रशिक्षण दी जा रही है। जिसमें नालंदा जिला के विभिन्न प्रखंडों के पच्चास किसान भाग ले रहे हैं। उन्हें प्रशिक्षणोपरांत मशरूम का उत्पादन कर आर्थिक क्षेत्र में मदद मिलेगी। बिहार कौशल विकास मिशन के तहत यह प्रशिक्षण दी जा रही है। कृषि के वैज्ञानिक सह मशरूम प्रशिक्षक डॉ. एन.के. सिंह ने बताया कि वर्तमान परिवेश में खेती का जोत प्रति किसान कम हो जाने से सिर्फ खेती पर निर्भर नहीं रहा जा सकता है। ऐसे में मशरूम उत्पादन कर किसान आर्थिक रूप से मजबूत बन सकते हैं। बहुत सारे लोग बेरोजगार होकर घूमते रहते हैं। वे भी मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में कदम रख रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। इस दौरान के.वी.के. के वैज्ञानिक डॉ. संजीव रंजन सहित प्रशिक्षणकर्त्ता मौजूद थे। **प्रस्तुति :-मुन्ना पाण्डेय**

शहीद जवानों के याद में कैंडिल मार्च

कश्मीर के पुलवामा में हुई आतंकवादी हमले में शहीद अमर जवानों के प्रति श्रद्धांजलि देते हुए स्थानीय बाजार में कैंडिल मार्च का आयोजन किया गया, कार्यक्रम के दौरान हरित हरनौत के सदस्य, परिवर्तनकारी प्रारम्भिक शिक्षक संघ, इसीआरकेयू, व्यवसायी संघ, राजनीतिक दल, छात्र, बुद्धिजीवियों ने सैंकड़ों की संख्या में शामिल हुए। इस दौरान पाकिस्तान मुर्दाबाद एवं हिंदुस्तान जिंदाबाद के नारा लगाए। कैंडिल मार्च चंडी मोड़ से शुरू होकर बीच बाजार, गोनावां रोड, डाकबंगला रोड होते हुए प्रखंड परिसर में सम्पन्न हुआ। जहाँ कैंडिल मार्च सभा में बदल गई। इस दौरान शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देते हुए दो मिनट का मौन रखा गया। साथ ही साथ अमर जवानों के याद में एक-एक राष्ट्रीय वृक्ष बरगद लगाने का संकल्प लिया गया। यह कार्यक्रम हरित हरनौत के द्वारा किया गया। **प्रस्तुति :- मुन्ना पाण्डेय**

राजघाट से निकाली गई रैली का भव्य स्वागत

● मुन्ना पाण्डेय

महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती पर सड़क सुरक्षा के तहत राजघाट से निकलकर नालन्दा पहुँची। जिला के प्रवेश द्वार कहे जाने वाले धोबा पुल के समीप परिवहन विभाग के अधिकारियों के द्वारा बुके देकर भव्य स्वागत किया गया। रैली का नेतृत्व अरूण भाटिया कर रहे हैं। अरूण भाटिया ने बताया कि रैली में ग्यारह वाहनों में कुल 27 सदस्य शामिल हैं। जिसमें सात महिलाएं एवं बीस पुरूष शामिल हैं। उन्होंने बताया कि यह रैली सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा आयोजित की गई है। यह कार्यक्रम 30 वें सड़क सुरक्षा सप्ताह का हिस्सा है। यह रैली गाँधी सर्किट से होते हुए बांग्लादेश, म्यांमार तक जाएगी। इस दौरान कुल 7250 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। यात्रा के दौरान पूरे मार्ग में सड़क सुरक्षा से संबंधित प्रचार-प्रसार करेंगे।

☞ **गाँधी की वाणी से सड़क सुरक्षा में मिलेगी सहायता** :- रैली का नेतृत्व कर रहे अरूण भाटिया ने बताया कि वे सभी गाँधी के वाणी को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। गाँधी जी के द्वारा अपनाये गए अहिंसा, धैर्य, शांति से ही सड़क सुरक्षा में मदद मिलेगी।

☞ **गाँधी सर्किट से होकर इन राज्यों से गुजरेगी** :- महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती पर सड़क सुरक्षा के तहत राजघाट से निकली रैली कई राज्यों से होकर गुजरेगी, जिसमें दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहर, झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल होते बांग्लादेश एवं म्यांमार के यांगून शामिल है। जहाँ 24 फरवरी को यह कार्यक्रम समाप्त होगी। महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती पर दिल्ली स्थित राजघाट, साबरमती, पोरबंदर, डांडी, यरवदा, सेवाग्राम, चौरीचौरा, चंपारण, शांतिनिकेतन, पटना स्थित गाँधी मूर्ति शामिल है।●

साढ़े तीन सौ साल पुराना मंदिर का लोकार्पण

● मुन्ना पाण्डेय

प्रखंड के पोआरी गाँव में महाशिवरात्रि के मौके पर शिव मंदिर का जिर्णोद्धार किया गया, ग्रामीणों के मुताबिक यह मंदिर साढ़े तीन सौ साल पुराना है। कहा जाता है कि संभवत: इसकी स्थापना गाँव की बसावट के समकालीन हुआ है। अनुमान के आधार पर पंचाने नदी का बहाव गाँव के ही वाहा पर से सीधे उत्तर की ओर रहा होगा, जिसके पश्चिम तट पर यह स्थित रहा होगा। मंदिर का निर्माण स्व. हरिवंश नारायण सिंह के पूर्वज ने मंदिर का निर्माण कराया था। जिसमें पंडित बालेश्वर झा के पूर्वज पुजारी नियुक्त थे। गाँव के सभी किसान और मजदूर परिवार अपनी उपज का कुछ अंश सबैया के रूप में देकर इसका संचालन करते थे। कालांतर में इस मंदिर के जीणोद्धार का कार्य ग्रामीणों के सहयोग से शुरू हुआ। आठ वर्ष के कठिन मेहनत के बाद सोमवार को मंदिर का लोकार्पण किया गया। मंदिर के पहला तल्ला गर्भ गृह जहाँ प्राचीन शिवलिंग, माँ पार्वती व नंदी यथावत हैं, दूसरा तल्ला पर शिव पार्वती का प्रतिमा, तीसरा तल्ला शिवम ग्रन्थालय बनाया गया है, जहाँ विश्व के सभी धर्मो का ग्रंथ रखने की योजना है। यहाँ श्रद्धालु आकर ग्रंथों का अध्ययन कर सकेंगे। सबसे ऊपर तल्ला पर पाँच गुम्बद है, जो साधना कक्ष है, जहाँ धर्म ग्रन्थों का अध्ययन के साथ ही ईश्वर का साधना कर सकेंगे। बड़ी बात यह है कि यहाँ जातीय बंधन को तोड़ एक साथ पूजा अर्जना करते देखा गया। ग्रामीण उदय शंकर सिंह ने बताया कि सदियों से चली आ रही मंदिरों में जातीय बंधन के बावजूद भी यहाँ गाँव के चौबीस जातियों के लोग एक साथ पूजा अर्चना करते हैं। मौके पर भजन कीर्ति का भी आयोजन किया गया। इस मौके पर शिव बारात भी निकाला गया, महिला श्रद्धालुओं ने गाजे-बाजे के साथ शिव बारात में भाग लिया। मौके पर कौशल किशोर, कृष्णनन्दन सिंह, रौशन सिंह, बम जी, नीतीश कुमार, अजय सिंह, प्रो. अशोक कुमार सिन्हा, चंद्र उदय कुमार सहित सैंकड़ो ग्रामीण मौजूद थे। ●

रंगों का त्योहार होली एवं पावन पर्व रामनवमी के शुभ अवसर पर बिहारशरीफ की समस्त जनता सहित नालंदावासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

कुमुद शेखर प्रसाद

कनीय अभियंता,

प्रखंड-बिहारशरीफ, नालंदा

रंगों का त्योहार होली एवं पावन पर्व रामनवमी के शुभ अवसर पर बिहारशरीफ की समस्त जनता सहित नालंदावासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

अजीत कुमार

कनीय अभियंता, L.E.O,

बिहारशरीफ, नालंदा

बेगूसराय सीट गयी भाजपा के कोटे में

गिरिराज या रजनीश हो सकते हैं लोकसभा के उम्मीदवार

● नंदकिशोर सिंह

सूबे बिहार के 40 लोकसभा सीटों में सबसे हॉट सीन बेगूसराय का ही लोकसभा सीट माना जा रहा है। बेगूसराय सीट भाजपा के कोटे में चला गया है। इस सीट के लिए प्रमुख रूप से नवादा के सांसद व केंद्रीय राज्य मंत्री गिरिराज सिंह का प्रबल दावेदारी यहाँ से अब तय माना जा रहा है। लेकिन इस सीट से एक और अपने मिट्टी के लाल टिकट की रेस में भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री व विधान पार्षद रजनीश कुमार भी चल रहे है। वर्ष 2014 में जब लोकसभा का चुनाव होने वाला था ,तो उस समय गिरिराज सिंह बेगूसराय लोकसभा सीट से ही चुनाव लड़ना चाह रहे थे। लेकिन भाजपा ने उन्हें टिकट नवादा की सीट से दिया था। जहां से उन्होंने चुनाव लड़कर जीत दर्ज किया था, और सांसद बने। इस बार भाजपा, जदयू और एलजेपी ने मिलकर बिहार में गठबंधन किया है। मुंगेर सीट से लोजपा की सांसद वीणा देवी 2014 में चुनाव लड़कर जीती,और सांसद बनी थी। वीणा देवी मुंगेर सीट से दुबारा चुनाव लड़ना चाहती थी। लेकिन मुंगेर सीट से इस बार अब जदयू के ललन सिंह चुनाव लड़ेंगे और वीणा देवी को नवादा की सीट से चुनाव

लड़ाया जाएगा। गिरिराज सिंह नवादा सीट से ही चुनाव लड़ना चाहते थे। लेकिन वीणा देवी को नवादा सीट संभवत मिलने के कारण अब उन्हें बेगूसराय सीट से चुनाव भाजपा लडाएगी। इधर महागठबंधन में भी बेगूसराय सीट को लेकर घमासान मचा हुआ है। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ तनवीर हसन बेगूसराय सीट से चुनाव लड़ने के लिए ताल पहले से ठोके हुए हैं। इधर वामदल के उम्मीदवार जेएनयू के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार को भी बेगूसराय सीट से ही चुनाव लड़ाने के मूड में है। अब देखना है कि वामदल के साथ बेगूसराय सीट के लिए कोई समझौता महागठबंधन के बीच सीटों के बटवारा को लेकर फिलहाल कुछ स्पष्ट नही हुआ है। एनडीए और महागठबंधन के बीच सीटों के नामों के सथ बटवारे का ऐलान 17 मार्च रविवार दिन तक होने की संभावना लग रही है।●

ज्ञान ज्योति पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव संपन्न

● मिथिलेश कुमार/बिरंची कुमार

कनगर के राजेन्द्र नगर स्थित ज्ञान ज्योति पबिलक स्कूल के तीसरे वर्षगांठ पर बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति से उपस्थित अतिथियों एवं अभिभावकों का मन मोह लिया। आगत अतिथियों का स्वागत विद्यालय के प्रबंध निदेशक राजेश कुमार वर्मा ने बुके देकर किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरीय पत्रकार मिथिलेश कुमार एवं मनीष कुमार तथा राजेन्द्र कुमार ने विद्यालय के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए सांस्कृतिक प्रस्तुति की सराहना किया। विद्यालय के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपनी मोहक प्रस्तुति देकर दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। कार्यक्रम में एकल डां, समूह डांस स्पीच के साथ कई सांस्कृतिक प्रस्तुति बच्चों के द्वारा प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर अतिथियों ने कहा कि नवादा शहर में शैक्षिक संस्थानों में बढ़ते स्पर्धा में ज्ञान

ज्योति पब्लिक स्कूल भी अपनी अलग पहचान बनाई है। कम संसाधनों के बावजूद विद्यालय प्रबंधन बच्चों में गुणवता पूर्ण शिक्षा देने के लिए संकल्पित है। बच्चों में शिक्षा के साथ नैतिक गुणों का भी संस्कार दिया जाता है। वक्ताओं ने विद्यालय के शिक्षकों एवं प्रबंधन समिति के सदस्यों से कहा कि आपके विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के प्रथम गुरू आप ही है। आप बच्चों में जैसा संस्कार भरेंगे वैसे ही बच्चे चरित्रवान बन कर अपने परिवार, समाज एवं देश का नाम रौशन करेंगे। विद्यालय के प्राचार्य पूनम कुमारी आगत अतिथियों एवं अभिभावकों को प्रति अभार प्रकट किया। मौके पर प्रिंसी, खुशी, श्यामली, आयुष, पियूष, सहित कई बच्चे को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस बीच विद्यालय के शिक्षक राजेश रौशन, शिक्षिका खुशबू, कृष्ण कुमार, सलोनी, सोनी, सहित नगर के कई प्रबुद्ध नागरिक मौजूद थे। ●

कौन होगा सीमांचल का खेवनहार?

कहने को तो बिहार में सुशासन की सरकार कायम है। सुशासन की सरकार में कितना सुशासन कायम है और किस हद तक कायम है। यह आप भी जानते हैं। हम भी जानते हैं और जानती है बिहार की जनता। फिर बात चाहे जी.एस.टी. की हो या नोटबन्दी की, बात चाहे शराबबंदी की हो या दहेज बन्दी की या बालू से लेकर बाढ़ी की या फिर बात हो बेरोजगारी की और अफसरशाही की या फिर विकास में शौचालय निर्माण की, भवन उपलब्ध कराने की, सड़क, पुल का हो। या फिर बीजेपी के दावे आयुष्मान भारत कार्ड और उज्जवला गैस सिलेंडर वितरण का दावा मुद्दे बनकर उभरेगी। लेकिन, लड़ेंगे तो सभी, पर जीतेगा कोई एक। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का बार-बार बिहार का दौरा भी फीकी राजनीति को मजबूत बनाने की रही हो या कार्यकर्ताओं के मनोबल को बढ़ाने की या फिर विपक्ष को ललकारने की। बिहार की राजनीति और आगामी लोकसभा चुनाव पर सीमांचल विशेष रूप से किशनगंज की राजनीति में चुनावी घमासान पर पत्रिका ब्यूरो चीफ सुमित राज यादव की खास रिपोर्ट :-

बिहार लोकतंत्र की जननी है और बिहार की राजनीति भारतीय राजनीति में अपना एक अलग और महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जब भी भारतीय राजनीति में भूचाल आया हो या सत्ता बनाने से सिंहासन हिलने की बात हुई है, तो इसकी चिनगारियाँ भी बिहार से निकली है। किस-किस शासन काल में क्या हुआ मैं इस पर विशेष ध्यान न आकृष्ट करते हुए बिहार के सीमांचल की राजनीति पर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। आगमी लोकसभा चुनाव 2019 होना है। सभी पार्टियाँ अपनी-अपनी बहुमत के दावे ठोक रहे हैं तो प्रत्याशियों भी अपने जाति और समर्थकों के साथ पार्टी के वोटरों का समीकरण जुटाने में लग गए हैं। ऐसे में व्यक्ति विशेष और पार्टी विशेष के अलावे प्रत्याशियों के चेहरे भी जीत हासिल करने में एक मजबूत कड़ी बनकर सामने आएंगी। बिहार के राजनीति में निश्चित तौर पर कोशी और सीमांचल का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जिसमें सीमांचल के किशनगंज और अररिया के पूर्व सांसद रहे केन्द्रीय राज्य मंत्री स्व. मो. तस्लीमुद्दीन के निधन के बाद सीमांचल की राजनीति में एक नया मोड़ आने का सभी अनुमान लगा रहे थे। किंतु लोकसभा के उपचुनाव में बड़े बेटे मो. सरफराज आलम को सांसद का सिरताज मोड़ हुआ। इसके बाद अचानक राजद सुप्रीमों लालू यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव की शादी से लौटे रहे चार राजद नेता की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। जिसके बाद फिर समीकरण बदलने बिगड़ने लगी।

लोकसभा 2019 चुनाव की तिथि चरणों में		
पहला चरण	–	11 अप्रैल
दूसरा चरण	–	18 अप्रेल
तीसरा चरण	–	23 अप्रैल
चौथा चरण	–	29 अप्रैल
पांचवा चरण	–	6 मई
छठा चरण	–	12 मई
सातवां चरण	–	19 मई
चुनावी परिणाम	–	23मई

राजद के जिलाध्यक्ष मो. इंतखाब आलम बबलू, पूर्व प्रदेश महासिचव इकरामुल हक बागी के देहांत के एक वर्ष के अंतराल में ही किशनगंज के सांसद मौलाना असरारूल हक का भी निधन हो जाने से राजद और कांग्रेस में एक सदमा का माहौल बना रहा। इस दौरान कई राजनीतिक दलों के प्रमुख सहित दिग्गजों का सीमांचल आगम होता रहा। किशनगंज के पूर्व सांसद रहे व वर्तमान में बी.जे.पी. के प्रवक्ता सैय्यद शाहनवाज हुसैन का भी लगातार बागडोगरा वायुयान मार्ग से बिहार आने के कारण लगातार सीमांचल में प्रेस वार्ता से लेकर धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक कार्यक्रम में भाग लेना भी किसी राजनीति के बयारसे अछूता नहीं रह गया था। सहानुभूति के बहाने भी राजनीतिक गलियारों से राजनीति की हवा सुलगती दिखने लगी ही थी कि ए.आई.एम. के प्रदेश अध्यक्ष बिहार मो. अख्तरूल ईमान के नेतृत्व में सीमांचल के किशनगंज जिले में ठाकुरगंज गाँधी मैदान से हैदराबाद के सांसद मो. असरूद्दीन ओवैसी का लोकसभा चुनावों के मद्देनजर सीमांचल में चुनावी शंखनाद हुआ। जिसमें कई राजनीतिक दलों के लोग मंच पर एक साथ नजर आए। कोई पूर्व राजद विधायक रहे अख्तरूल ईमान का करीबी

बताया तो, कोई अख्खारूल ईमान का साथी बतलाया, तो कई बातों को कहते हुए टाल-मटोल करते नजर आए। खैर बात जब प्रेम, युद्ध और राजनीति की हो तो सब ज्यादा ही माना जाता है। बिहार में एन.डी.ए. गठबंधन में वर्तमान में सुशासन की सरकार कायम है। ऐसे में सीमांचल में भी माय समीकरण किसी भी सूरत में नहीं चलेगी और त्रिकोणीय मुकाबले की ओर सीधे चुनाव दिखेगा। एक तरफ एन.डी.ए. गठबंधन में बी.जे.पी. और जदयू के नेताओं के दावे एक ही सीट को लेकर करते नजर आ रहे है। जितनी दावे बी.जे.पी. की ओर होंगे तो उतनी दावे जदयू के तरफ से भी सामने आ रहे हैं। क्योंकि, दोनों पार्टियां अपना परचम पूर्व में ही लहरा चुकी है। वही, किशनगंज विधानसभा के चार सीटों वाली विधानसभा में दो कांग्रेस किशनगंज से डॉ. मो. जावेद, बहादुरगंज से मो. तौसीफ आलम और दो जदयू के खाते में ठाकुरगंज से मो. नौशाद आलम और कोचाधामन से मास्टर मुजाहिद आलम है। जबकि, कुछ विधायक के चेहरे और पार्टियाँ भी बदती नजर आई है। पार्टी को लेकर अस्थिरता प्रत्याशियों के लिए यहाँ मौसम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आते हैं। ऐसे में पूर्व में चुनाव का अनुभव ले चुके गोपाल अग्रवाल, सिकंदर सिंह, फैयाज आलम, पूनम देवी, डॉ. पी.पी. सिन्हा, अहमद हुसैन, नवीन यादव सहित कई अन्य दिग्गज भी अपना छाप छोड़ने की कोशिश करेंगे। चुनाव आयोग के घोषणा के बाद चुनाव घमासान मचा हुआ है। जिसमें सातवें चरण में बिहार में चुनाव होना है। 23 मई को होने वाले मतगणना में बिहार की राजनीति में सीमांचल में अररिया, पूर्णियाँ, किशनगंज, कटिहार, सहरसा, मधेपुरा, सुपौल भी अपनी महत्वपूर्ण स्थान रखेंगी। वैसे में राजद और कांग्रेस के साथ ए.आई.एम., सपा, बसपा, लोक जनशक्ति पार्टी व अन्य राजनीतिक पार्टियों को भी समीकरण जुटाने में आओ मिलकर खेले गठबंधन-गठबंधन से इंकार नहीं किया जा सकता है। अब देखना यह है कि किसकी गंठबंधन किस हद तक और कहाँ तक सफल हो पाती है। किस-किस मुद्दे पर पार्टियां विपक्ष को घेरने का प्रयास करेंगी। वैसे वोटरों ने भी मन बना लिया है, मतदान को लेकर कि किसे वे अपना मत देंगे। किंतु, अंतिम समय में पार्टी और चेहरे के साथ-साथ सत्ता हसिल करने का मन भी वोटरों के लिए चयन करना असमंजस में डाल सकती है या नहीं ये भी मायने रखेगी। साथ ही अपने पसंदीदा प्रत्याशियों के चयन को लेकर लोगों की अब गलियारों में चर्चा शुरू हो गई है। 10 मार्च को चुनाव आयोग ने भी लोकसभा चुनाव के सात चरणों में चुनाव होने की घोषणा कर दी। चुनावी ऐलान के बाद प्रशासनिक अधिकारियों भी अपनी तैयारियों में जुट गई है। आदर्श आचार संहिता लागू के दौरान सभी चरणों के चुनाव सम्पन्न होने हैं। ●

पुलिस फाइलों में धूल फांक रहे हत्या के कई राज

● धर्मेन्द्र सिंह

पूर्णिया धमदाहा में कानून व्यवस्था पर से लोगो का भरोसा उठ सा गया है जहां हत्या जैसे कई अपराधिक मामले पुलिस फाइलों में जहा धूल फांक रही है वही हत्यारे को पकड़ पाने में पुलिस पूरी तरह विफल लग रही है।पिछले कुछ माह में धमदाहा में अपराध का ग्राफ बढ़ा है करीब आधे दर्जन हत्या के मामले दर्ज हुए परन्तु सभी हत्या मामलों में पुलिस के हाथ खाली है। बढ़ते अपराधिक गतिविधियों पर धमदाहा पुलिस जहां अंकुश लगाने में विफल नजर आ रही है वही हत्या जैसे संगीन मामले में जहां धमदाहा पुलिस के हाथ हत्यारे की पहुंच से काफी दूर है वही मामले का उद्भेदन करने में काफी सुस्त नजर आ रही है। कब कब हुई घटना पर एक नजर...02 अगस्त धमदाहा थानाक्षेत्र के मोगालिया पुरंदाहा पूर्व पंचायत के सरपंच लाला प्रसाद महतो के तुगलकी फरमान के कारण सोब्बज्जा निवासी मो0 अजमेर ने खुदकुशी कर अपनी जान गंवाई हालांकि सरपंच के खौफ ने मृतक के परिजनों को भयाक्रांत कर शव को दफन करवा दिया परन्तु समाचार पत्रों में प्रकाशित खबर के बाद धमदाहा पुलिस हरकत में आई और दफनाए शव को कब्र से निकाल पोस्टमार्टम करते हुए सरपंच एवं उनके सहयोगियों के विरूद्ध मामला दर्ज कर लिया परन्तु सरपंच को गिरफ्तार करने में धमदाहा पुलिस नाकामयाब रही। 09 सितम्बर को धमदाहा मध्य निवासी मनीष कुमार सिंह का शव उनके दरवाजे पर लटकते हुए मिला मृतक के परिजनों द्वारा धमदाहा थाना में अज्ञात के विरूद्ध हत्या का मामला दर्ज किया गया। घटनास्थल पर हत्या में प्रयोग सामान एवं पर्याप्त साक्ष्य धमदाहा पुलिस ने बरामद किया तथा धमदाहा पुलिस ने भी इसे हत्या का मामला बताया परन्तु पर्याप्त साक्ष्य होने के वावजूद भी धमदाहा पुलिस के हाथ खाली। जबकि धमदाहा पुलिस के दावे कि जल्द ही मामले का उद्भेदन होगा। हालांकि उक्त मामले में धमदाहा पुलिस दो लोगो से तफ्तिश किए परन्तु निराशा हाथ लगी यहां तक की धमदाहा पुलिस तफ्तीश के दौरान मध्य निवासी छोटू कुमार को एक हफ़्ते तक अपनी कस्टडी में रखी वावजूद इसके पुलिस को कोई पुख्ता सबूत हाथ नही लगी। 07 अक्टूबर धमदाहा अनुमंडल के मीरगंज थानाक्षेत्र के बगवा निवासी विकास कुमार कि हत्या उनके सगे मामा मुखिया पति नामेश्वर त्रृषि ने अपने सहयोगियों के साथ पीट पीट कर हत्या कर साक्ष्य छुपाने की नियत से शव को चार फीट गड्ढा में दफना दिया हालांकि गुप्त सूचना के आधार पर हरकत में आई मीरगंज पुलिस एव डॉग स्क्वायड की मदद से शव को बरामद कर लिया गया। मृतक की भाभी के द्वारा मीरगंज थाना में हत्या का मामला दर्ज किया गया परन्तु मुख्य हत्यारोपी पुलिस की गिरफ्त से बाहर। 16 नवम्बर को धमदाहा थानाक्षेत्र के नीरपुर निवासी वकील साह की दिन दहाड़े पीट पीट कर एव गुप्तांग दबाकर हत्या कर दी मृतक के परिजनों ने धमदाहा थाना में जमीनी विवाद में हत्या का कारण बताते हुए मो0 एनामुल हक एवं दो महिला समेत नौ लोगो के विरूद्ध मामला दर्ज कराया। स्थानीय लोगो द्वारा बताया गया कि मो0 एनामुल हक जदयू के धमदाहा प्रखंड के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष है हालांकि उक्त मामले में स्थानीय लोगो ने मुख्य आरोपी में से एक बविता देवी को पुलिस के हवाले किया था जिसे जेल भेज दिया गया है अन्य आरोपी अब भी पुलिस गिरफ्त से बाहर है। आप को मालूम हो की दो वर्ष पूर्व 28 फरवरी 2017 धमदाहा वासियों के लिए काला दिन महज 12 घंटे के भीतर दो दो हत्या के मामले हुए जिसमे चंदरही निवासी मालती देवी की दिन दहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी गई तो वही काली रात को धमदाहा मध्य निवासी पान व्यवसायी मुन्ना दास की चाकू गोदकर हत्या मामले का उद्भेदन करने में धमदाहा पुलिस पूरी तरह विफल रही है धूल फांक रही फाइल बताते है पुलिस उपाधीक्षक हत्या से जुड़े सभी मामले के आरोपी घटना के बाद से फरार चल रहे पुलिस लगातार छापेमारी कर रही है जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। ●

सुशासन बाबू कब सुधरेगी बिहार की ट्रैफिक व्यवस्था?

● सुमित राज यादव

बिहार के भागलपुर जिले का विक्रमशीला पुल और कटिहार जिले के कोढ़ा पुल पर इन दिनों मरम्मत का कार्य चल रहा है। जिसके कारण आज एन.एच. 31 पर हजारों की संख्या में वाहन जाम में फंस रहे हैं। तकरीबन 80 किमी. के इस महाजाम से स्थानीय लोगों का आम जनजीवन भी बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। नवगछिया से लेकर पूर्णियां तक पहुँचने वाली महाजाम अब विकराल रूप लेते दिख रही है। हजारों की संख्या में फँस रहे वाहनों के कारण लोगों का पैदल चलना तक दूभर हो गया है। स्थानीय लोगों का जीवन ठहर सी गई है। फिलहाल तो जीवन दूभर हो गया है। खासकर शादियों के बराती लेट से पहुँच रहे हैं। बराती लेट से पहुँचने के कारण तय शुभ मुहूर्त पर शादी भी नहीं हो पा रही है। आसपास के इलाके बुरी तरह से जहाँ इस महाजाम का शिकार हो रही है। तो वहीं, दूर जाने वाले शादियों के बराती को कोई विकल्प के रूप में सोचने को मजबूर होना पड़ रहा है। मात्र आगे निकलने की होड़ में भी सैंकड़ों वाहन इस महाजाम को बढ़ावा देने का काम कर रही है। इसका जिम्मेदार जिले में तैनात ट्रैफिक व्यवस्था की विफलता भी है। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों की जिले की ट्रफिक व्यवस्था की विफलता अब सामने आ चुकी है। हजारों के भीड़ में भी लोगों को अपने वाहनों से उतरकर खुद सड़क पर गाड़ी हटाने और साइड करना पड़ता है। ऐसे में जिले में पुलिस अधिकारी के द्वारा ट्रैफिक व्यवस्था पर सवाल उठना भी लाजिमी है। महाराज का कारण गंगा नदी पर बने पुल का निर्माण कार्य है। अब सड़क मार्ग के बजाय लोगों को अपने गतव्य स्थान तक पहुँचने के लिए जलमार्ग का भी सहारा लेना पड़ रहा है। इस महाजाम के कारण कटिहार के मनिहारी गंगा घाट से चलने वाली नावों और एल.सी.टी. के माध्यम से लोगों को अपनी यात्रा करनी पड़ रही है। बड़ी जहाजों पर ट्रकों और कई वाहनों को भी पार कराई जा रही है तो पैसेंजर जहाजों के मालिक के भी इन दिनांक पौ बारह हो रहे हैं। विक्रमशीला में भी लोगों को गंगा पार कर जाने के लिए नावों का सहारा लेना पड़ रहा है। विक्रमशीला पुल पर 24 घंटे वन वे कर दी गई है। तो वहीं भारी क्षमता से अधिक वाले वाहनों पर भी रोक लगा दी गई है। जिसमें चक्के के हिसाब से टन प्रशासन ने शर्तों के आधार पर लगाए हैं। भागलपुर, कटिहार और पूर्णियां तीन जिलों के लोगों को इस महाजाम का कहर झेलना पड़ रहा है। जिलों के लोगों को इस महाजाम का कहर झेलना पड़ रहा है। जिलों के पुलिस अधीक्षक भी ट्रैफिक व्यवस्था को लेकर कुम्भकर्णी निंद्रा में है। ऐसे में सरकारी बाबू के सिस्टम की हवा-हवाई भी आमलोगों के सामने आ रही है। भागलपुर, बेगूसराय, परवता, पूर्णियां, किशनगंज, सिलीगुड़ी, खगड़िया, सहित बिहार के कई जिलों और पश्चिम बंगाल से आने वाली बसों को भी महाजाम का कहर झेलनी पड़ रही है। खासकर एम्बुलेंस को मरीजों के साथ इंतजार करने के अलावे कोई विकल्प नहीं होता। किसी भी प्रकार की ट्रैफिक पुलिस व्यवस्था के हालात में सुधार नहीं है। पता नहीं, कब सुधरेगी बिहार पुलिस की ट्रैफिक व्यवस्था और कब मिलेगा दावा करने वाले सुशासन बाबू के बिहारवासियों को महाजाम से निजात। कब हाइवे पर सिधी दौड़ेगी वाहनों के चक्के और आपके वादे के अनुसार 5 घण्टे में राज्य के किसी कोने से, किसी जिले से बिहार की राजधानी पटना पहुँच सकेंगे। फिलहाल तो कई दिनों तक एक जिले से दूसरे जिले का रूख कर पाना मुश्किल है। सुशासन बाबू। ●

ओवरलोड पर लगातार कार्रवाई से इंट्री माफिया सकते में

● धर्मेन्द्र सिंह

बिहार-बंगाल की सीमा को जोड़ने वाले किशनगंज जिले मे इंट्री माफियाओं के आगे परिवहन विभाग बेवस है। आपको बताते चले कि इन इंट्री माफियाओं का खौफ इस कदर है कि किशनगंज जिले मे कोई भी डीटीओं अपनी तैनाती नही चाहता है। यदि किसी कि तैनाती यहां हो भी गई तो उसे नेताओं और इंट्री माफियाओं के इशारे पर ही काम करना पड़ता है। यदि उन्होने नियमों का शक्ति से पालन कराने का प्रयास किया तो या तो उसकी जान खतरे मे रहती है या फिर यह गठजोड़ उन्हे यहां टिकने नही देता है। यही कारण है कि पुर्वोतर राज्यों को जोड़ने वाले एनएच-31 पर परिवहन नियमों को ठेंगा दिखाते हुए ओवर लोड ट्रक दौड़ती रहती है। और उसके पीछ-पीछे मोटर साइकिल से इंट्री माफिया के गुर्गे गाड़ी को पार कराते नजर भी आते है। गौर करे कि अगर इसकी सुचना संबधित अधिकारी को दी भी जाती है तो बहाना बनाकर टाल-मटोल कर समझा देते है। किशनगंज मे राजस्व वसूली लक्ष्य के करीब नही पहुँच पाती है। वर्ष 2011 मे एमभीआई कुमार विवेक ने इंट्री माफियाओं के खेल पर लगाम लगाने का प्रयास किया तो उन पर जानलेवा हमला हुआ जिससे उनका जीप का आगे का हिस्सा चकनाचुर हो गया था। जिसका खबर केवल सच में दी गई थी। वहीं डीटीओ की गाड़ी को आग के हवाले कर दिया गया। वर्ष 2015-16 मे तत्कालिन डीटीओं के पद पर आसिन सत्यनारायण मंडल और उनके बॉडी गार्ड समेत एमभीआई पर जानलेवा हमला हो चुका है। इंट्री माफियाओं का खेल सड़क के किनारे बने (साहेब गुप्ता लाइन होटल, बिशु लाइन होटल, शम्भु चौहान लाइन होटल, नरेश गुप्ता लाइन होटल आदि!) लाइन होटल से संचालित होता है। जिसका नामो का पर्दाफांस केवल सच ने कईयों अंकों मे कर चुका है फिर भी विभाग मौन मे आज तक है। आपको बताते चलें कि इनका कोड भी रहता है जिससे अगर अधिकारी ओवरलोड ट्रक पकड़े तो उसे वही कोड बताना होता है जो कोड गाड़ी पास कराने मे वगैरा वगैरा! सीमांचल के तीन जिलो किशनगंज, अररिया, और पूर्णिया के मुख्य मार्ग पर बने लाइन होटल से लेकर बड़े होटलो के मालिक पर इंट्री के खेलों मे शामिल है। एनएच-31 पर दालकोला, कानकी, बायसी, फरिंगगोला, पांजीपाड़ा से लेकर सिलिगुड़ी तक इनका नेटर्वक फैला हुआ है।

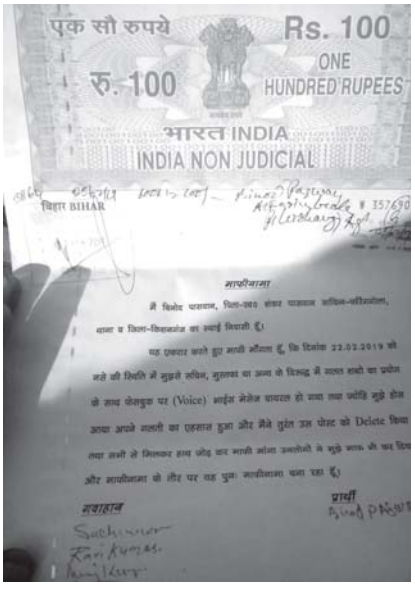

होटलों के सामने इंट्री माफियाओं के लोगों से सिंग्नल के इंतजार मे दर्जनों ओवरलोड गाड़ियॉ खड़ी रहती है। इंट्री माफियाओं के गुर्गे से सिग्नल मिलने के बाद ही आगे बढ़ते है। किशनगंज के एक अधिकारी कहते है कि किशनगंज मे इंट्री माफियाओं का मजबूत नेटर्वक है जो बंगाल बिहार सीमा पर बने एनएच-31 के चौक चौराहों पर मोबाइल फोन से एक दुसरे से जूड़े रहते है। जो कि चावल मंडी के नजदीक गुप्त रूप से देखा भी जा सकता है जहां इंट्री माफियाओं के गुर्गे कान मे फोन लगाकर समय समय का खबर देते रहता है। और पुरा दिन और रात गाड़ियों से एनएच-31 और किशनगंज बहादुरगंज रोड पर ओवरलोड ट्रक को पार कराते है। परिवहन विभाग के वरीय अधिकारी की हर गतिविधियों पर इनकी नजर रहती है। ऐसे हालत मे काम करने मे काफी परेशानी तो होती ही है। उन्होने बताया कि पटना मे वरीय विभागीय अधिकारीयों को किशनगंज की स्थिति से अवगत कराया जा चुका है। किशनगंज जिले मे स्थित नेशनल हाइवे से होकर हजारो की संख्या मे भारी कॉमर्शियल वाहन गुजरते है। जिले के अन्य स्टेट हाइवे पर भी इसी संख्या मे ओवरलोड गाड़ियॉ चलती है। परिवहन विभाग की कमजोरी के कारण करोड़ों रूपये की राजस्व की क्षति हो रही है। विभाग कभी लक्ष्य के सापेक्ष वसूली नही कर पाता। हालांकि परिवहन विभाग भी स्वीकार किया है कि सत्य प्रतिशत राजस्व की वसूली नही हो पा रही है फिर भी वर्ष 2016-17 मे 20 करोड़ के लक्ष्य के विरूद्ध 17 करोड़ की वसूली हो गई थी। स्थानीय लोगो ने बताया कि बलिचुका मे मुस्तफा एवं उसके गुर्गे द्वारा रोज इस तरह की घटना को अंजाम दिया जाता है।जिसका खबर केवल सच ने अपने अनेकों अंको मे प्रकाशित कर चुका है। पर पता नही खबर पर अधिकारी की नजरे क्यो न पड़ी....? आपको मालूम हो कि मुस्तफा नामक व्यक्ति बंगाल बिहार का कुख्यात आरोपी है। इसने होटल मालिक मुकेश सिंह को यही इट्री का खेल को लेकर हत्या कर दी थी। और जो अधिकारी इसकी गाड़ी को पकड़ते है उसपर हमला करने से भी नही चुकता है। फिर भी आज तक कोई कार्रवाई नही की गई है। आपको बताते चलें कि किशनगंज पुलिस कप्तान कुमार आशिष के निर्देश पर लगातार कुर्लीकोट गलगलिया पुलिस ओवरलोड वाहनों के पूर्णत: परिचालन पर रोक लगाते हुए पुलिसिया डंडा चलाना शुरू किया है। तो इंट्री माफियाओं के होश फाख्ता हो गए। किशनगंज पुलिस ने ओवरलोड ट्रकों के विरूद्ध अभियान जारी रखते हुए लगातार ओवरलोड ट्रक को पकड़ रही है। गौर करे तो इंट्री माफिया के सक्रियता को लेकर पुलिस भी सक्रिय हो चुकी है। रोजना पुलिस द्वारा ओवरलोड ट्रक पकड़े जाने से इंट्री माफिया मे खलबली मच गई है। वही दिनांक-22.02.2019 को बिनोद पासवान नामक व्यक्ति ने एक माफीनामा दिया है कि नसे की स्थिति मे मुझसे सचिन, मुस्तफा या अन्य के विरूद्ध मे गलत शब्दो का प्रयोग के साथ फेसबुक पर VOICE मैसेज वायरल हो गया तथा ज्योहि मुझे होस आया अपने गलती का एहसास हुआ और मैने तुरंत उस पोस्ट को Delete कर दिया। तथा सभी से हाथ जोड़कर माफी मांगा, उन लोगों ने मुझे माफ भी कर दिया। पर यही सवाल यह है कि एक इंट्री माफिया दुसरे इंट्री माफिया से माफी मांग रहा है यह बात हजम करने वाली नही है। जिला प्रसाशन को इस पर विचार करना होगा कि दिनांक 22.02.2019 को एक फर्जी वीडियो वायरल होना करना या करवाना यह एक षडयंत्र का हिस्सा है। सिर्फ किशनगंज के बड़े अधिकारियों को बदनाम करने के लिए रचा गया था। जिसमे एंट्री माफिया सहित कुछ पत्रकार की संलिप्तता साफ पता चल रहा है। कुछ मिनटों के लिए वीडियो वायरल होना और फौरन माफीनामा का वायरल होना इससे मामला बिल्कुल साफ है कि यह एक षडयंत्र और प्री प्लान था। माफीनामा में जिस लड़के का नाम आ रहा है उसे फौरन जिला प्रशासन कस्टडी में ले जिससे दूध का दूध, पानी का पानी साफ हो जायेगा कि कौन कौन महारथी इसके पीछे था और है।●

बेहतर कार्य करने वाले पुलिस पदाधिकारी को किशनगंज पुलिस कप्तान करेंगे पुरस्कृत

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज दिये गये लक्ष्यों के अनुरुप 214 कांडों की अपेक्षा 253 कांडों को निष्पादित किये जाने पर एसडीपीओ किशनगंज डॉ0 अखिलेश कुमार को मिलेगा प्रशस्ति-पत्र, जिसके साथ अंचल निरीक्षक ठाकुर एवं बहादुरगंज को भी एक - एक सु सेवांक से पुरस्कृत किया जाएगा, साथ ही पांच से अधिक कांडों के अनुसंधानक पुलिस पदाधिकारी भी सु सेवांक से पुरस्कृत होंगे। उक्त घोषणा किशनगंज के पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने माह फरवरी 19 की मासिक अपराध समीक्षा बैठक में की है। जैसा कि पुलिस कप्तान किशनगंज ने इस जिले में योगदान के बाद ही कांडों के ससमय निष्पादन को लेकर पुरस्कार देने की घोषनाऐं की थी। जिसे किशनगंज पुलिस के अथक परिश्रम से आज पुरस्कारों पर अपना कब्जा जमाते देखे जा सकते हैं। जबकि अगले माह लंबित कांडों के निष्पादन के लक्ष्य को बढ़ाकर डेढ़गुणा किया गया है। वहीँ

अंचल निरीक्षक किशनगंज द्वारा 335 वारंट, 74 कुर्कियों और 06 नीलाम पत्र वादों को निष्पादित करते हुए एक सु सेवांक पाने के हकदार बने हैं, जिसका उल्लेख आज जारी जिला पुलिस मुख्यालय के प्रेस विज्ञप्ति में किया गया है। जिसे किशनगंज पुलिस कप्तान के द्वारा सराहनीय मानते हुए इस पर स्वीकृति की मुहर लगायी है। वही विभिन्न शीर्षों से वसूले गये दंड शुल्क की राशियों में इजाफा कराते किशनगंज थाना ने सबसे अधिक 5,61,900 रु0 तो गलगलिया ने इस का पीछा करते कुल 5,10,500 रु0 की वसूली की है। वही सुखानी थाना ने 2,79,700 रु0 तो ठाकुरगंज थाना ने 1,17,800 बहादुरगंज थाना ने 94,400, पौआखाली ने 75,900 एवं कुर्लीकोट ने 43,400 रु0 वसूले। इस प्रकार कुल 65 ओवर लोडेड वाहनों से कुल 16,85,600 की रिकार्ड वसूली कर विभिन्न थानाओं ने जहां ओवर लोडेड रैकेटों की नाकों में नकेल कसा है। वही उक्त रकम सरकारी खजाने को बढ़ाने में एक अहम भूमिका निभाई है। जबकि किशनगंज पुलिस द्वारा यातायात नियमों के उलंघन के मामले में कुल 135 जांच के क्रम में कुल 51,000 रु0 की वसूली को जारी रखते हुए बिना हेलमेट के 935 दोपहिया वाहनों से कुल 1,63,300 रु0 की वसूली कर सरकारी खजाने में इजाफ़ा दर्ज कराया है। वही बरामदगी मामलों में देशी शराब 94,600 मि0ली0 16,365. 575 ली0 विदेशी शराबों को जब्त' करते हुए 34 उत्पाद एवं मद्दनिषेध अधिनियम के कांडों से जुड़े 53 अभियक्तों की गिरफ्तारी कर, न्यायिक हिरासत में भेजा है।

आपको बताते चलें कि शराब जब्ती के क्रम में 03 ट्रकों, 01 पिकअप वेन, 06 मोटर साईकिलें एवं 01 साईकिल को भी जब्त किया है। वही आर्म्स एक्ट के दो कांडों में 02 संलिप्तों को भी गिरफ्तार कर जेल भेजने में सफलता पाई है। जहाँ से 01 देशी पिस्टल, 01 देशी कटटा, 16 जिंदा कारतूसों सहित 06 मिस फायर गोली और एक खोखा भी बरामद करने में सफलता पाई है। गौरतलब है कि मवेशी तस्करियों को लेकर पुलिस कप्तान के कड़े तेवर ने रंग दिखाया है और इनके सफल नेतृत्व में किशनगंज पुलिस ने कुल 137 मवेशियों को जब्त करते हुए दो संलिप्तों को सलाखों के पीछे भेजा है। वही तस्करी के लिए प्रत्युक्त छोटी बड़ी 12 वाहनों की जब्ती सहित जाली नोट 13,900, अफीम 600 ग्राम तथा गांजा 5.750 ग्राम की जप्ती करते किशनगंज पुलिस ने हर एक क्षेत्रों में अपनी सफलता के झंडे फहरा दिये हैं। आमलोगों मे पुलिस कप्तान किशनगंज कुमार आशिष का चर्चा भी है।●

किशनगंज पुलिस की पशु तस्करों पर सख्त कार्रवाई

किशनगंज बीते एक साल में किशनगंज पुलिस की सक्रियता के वजह से 624 पशुओं की बरामदगी हुई है। जो तस्करी के लिए ले जाया जा रहा था। इसमे उपयोग होने वाले कुल 19 वाहनों को भी जब्त किया गया है। और 54 तस्करों की गिरफ्तारी भी हुई है। सबसे अधिक 137 पशुओं की जब्ती फरवरी 2019 माह में हुई है। जबकि इस संबंध में जिले के विभिन्न थानों में पशु तस्करी से जुड़े कुल 50 मामले भी दर्ज किए गये है। वार्षिक आंकड़ा पेश करते हुए जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने कहा कि एक साल के भीतर शराब कारोबारियों और पशु तस्करों पर बड़ी कार्यवायी हुई है। आगे भी इस तरह से इसे अभियान के रूप में लेकर कार्यवाई जारी रहेगी। खास कर पशु तस्करी के लिए सीमावर्ती क्षेत्र के जिन इलाकों का इस्तेमाल होता है वहां विशेष चौकसी के निर्देश दिये गये हैं। उन्होंने कहा कि जिले की जनता भी इस मामले में सहयोग करें जहां कही भी पशु तस्करी, शराब का कारोबार या किसी भी प्रकार की आपराधिक गतिविधि हो तुरंत 100 नंबर डायल करें या सीधे 9431822999 मुझे सूचित करें। सूचना देने वाले का नाम गोपनीय रख तुरंत कार्यवायी होगी। उल्लेखनीय है कि विगत दिसंबर माह में पुलिस कप्तान किशनगंज ने कोढोबाड़ी थाने के पूरे पुलिस पदाधिकारियों को पशु तस्करों से सांठगांठ के आरोप पर निलंबित करके लाइन हाजिर कर दिया था। क्या कहते है पुलिस कप्तान..जिले के जिन भी इलाकों में पशु तस्करी, शराब से संबंधित एक्टिविटी होगी वहां के थानाध्यक्ष पर कार्यवाई तय है। सभी थानाध्यक्ष अपने-अपने इलाके में नियमित रूप से वाहन जांच अभियान तथा रात्रि गश्ती ब्यापक रूप से करें। कानून व्यवस्था में खलल डालने वाले चाहे कोई भी लोग हों, उन्हें किसी भी कीमत पर छोड़ा नही जाएगा। आपको मालूम हो कि बीते 6 माह में पुलिस कप्तान कुमार आशीष के निर्देश पर ताबड़तोड़ कार्रवाई जिले में हुई है। जिससे अपराधियो में हड़कम्प मच गया।

एसडीओ फारबिसगंज द्वारा वकील से दुर्व्यवहार

● धर्मेन्द्र सिंह

फारबिसगंज अनुमंडल न्यायालय में कार्यरत वकील शिवाननंद मेहता के साथ गत मंगलवार दिनांक-05.03.2019 को एसडीओ रविप्रकाश के द्वारा कथित दुर्व्यवहार का मामला तूल पकड़ने लगा है। गुरुवार दिनांक-07.03.2019 के अपराह्न वक़ीलों के द्वारा फारबिसगंज शहर में विरोध मार्च निकाला गया। इस संबंध में बनी 11 सदस्यीय संघर्ष समिति के प्रवक्ता एडवोकेट राजेशचंद्र वर्मा एवं दीपक भारती ने संयुक्त बयान मे बताया कि गुरुवार दिनांक-07.03.2019 को अपराह्न अनुमंडल मुख्यालय से हाथों में तख्तियां लेकर वक़ीलों के द्वारा एसडीओ फारबिसगंज के कार्यशैली व मनमानी तथा वकील शिवानंद मेहता के साथ न्यायालय परिसर में मंगलवार दिनांक-05.03.2019 को किये गए दुर्व्यवहार के प्रतिरोध में, पूरे फारबिसगंज शहर में विरोध मार्च निकाला गया। जो अनुमंडल मुख्यालय से निकल कर अस्पताल रोड, सुभाष चौक, पोस्ट ऑफिस चौक, सदर रोड, पटेल चौक, बस स्टैंड, अस्पताल रोड, रेफरल रोड होते हुए पुनः अनुमंडलीय मुख्यालय स्थित वकालत खाना परिसर पहुंचेगी। बाद में संघर्ष समिति की बैठक में समीक्षा व आगामी संघर्ष की रूपरेखा तय करने पर विचार

लिए जाएंगे। इस मामले में मुकदमा के बावत जिलाधिकारी से स्वीकृति के लिये शुक्रवार दिनांक-08.03.2019 को वक़ीलों का एक शिष्टमण्डल अररिया जाएगी। इस बावत समय मांगी जा रही है। संघर्ष समिति सदस्यों के बीच एकमत राय है कि वकील भी न्यायालय के पदाधिकारी होते हैं। उनके साथ सुरक्षा गार्ड के बल पर न्यायालय के भीतर एसडीएम के रूप में दुर्व्यवहार सहन करने लायक विषय नही है। मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है। पूर्व में भी इसी सामंती सोच का नतीजा था कि 13 दिनों तक विवाद चला। बार व बेंच में समन्वय और सार्वजनिक खेद पर ही जनहित, विकासहित तथा न्यायहित में मामला समाप्ति के बाद पुनः वही कहानी। आखिर वक़ीलों की क्या गलती है ? अन्याय अब और सहन नही किया जा सकता। परिणाम चाहे जो भी हो ? अधिकार की रक्षा की लड़ाई लड़ने का अधिकार सभी को भारतीय संविधान ने दे रखा है। जब वक़ीलों के साथ न्यायालय के भीतर दुर्व्यवहार किया जाता है तो सहज समझा जा सकता है कि आम अवाम के साथ क्या किया जा सकता है ? पदस्थापना के वक्त लहगवा भरगामा विधि व्यवस्था समस्या के जनक एसडीओ फारबिसगंज ही थे। समझदारी से काम लिया जाता तो विधि व्यवस्था संधारण की उत्पन्न समस्या से बचा जा सकता था। अति उत्साही रवैये से शासन व सरकार की किरकिरी हुई। ●

नाना और मामा ने मिलकर लड़की की हत्या कर जलाया शव

● धर्मेन्द्र सिंह

फारबिसगंज अररिया नरपतगंज प्रखंड के बड़हारा पंचायत स्थित बरदाहा गांव में चचेरे नाना एवं मामा ने मिलकर 18 वर्षीय कंचन कुमारी की हत्या कर दी। हत्या के बाद आनन फानन में यूरिया खाद छिड़ककर शव को आधा जलाकर घर से दो किलोमीटर दूर सुरसर नदी के किनारे फेंक दिया। जानकारी मिलने पर नरपतगंज थाना पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर गुरुवार दिनांक-07.03.0219 की सुबह अधजले शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु अररिया भेज दिया। मृतका के दादा नरपतगंज प्रखंड के रामघाट पंचायत के लस्का वार्ड संख्या 07 निवासी सबुजलाल सिंह के बयान पर सगी नानी सिराजी देवी, चचेरी नानी दुखनी देवी, चचेरे नाना जमुना प्रसाद सिंह, राजेंद्र सिंह, शंभू सिंह एवं चचेरे मामा शशि भूषण सिंह, ओमप्रकाश सिंह, दिनेश सिंह, श्याम सुंदर सिंह, विकास सिंह तथा ओमप्रकाश की पत्नी पर हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है। नरपतगंज थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मृतका के चचेरे नाना जमुना प्रसाद सिंह

एवं चचेरे मामा शशि भूषण सिंह को गिरफ्तार कर लिया। वही अन्य आरोपी घर से फरार बताए जा रहे हैं जिसकी खोजबीन के लिए पुलिस ताबड़तोड़ छापेमारी कर रही है। गिरफ्तार आरोपी ने अररिया पुलिस कप्तान धूरत शायली एवं फारबिसगंज डीएसपी मनोज कुमार, नरपतगंज सीओ निशांत कुमार के समक्ष नरपतगंज थाने में हत्या करने की बात को स्वीकार करते हुए बताया कि गांव के ही किसी लड़के से प्रेम प्रसंग के चलते परिवार की हो रही बदनामी से खीझकर हत्या की घटना को अंजाम देना मजबूरी बन गई थी। प्रेम प्रसंग के चलते गांव में पंचायत भी बुलाई गई थी, इधर मृतका के दादा सबुजलाल सिंह ने बताया कि मृतका कंचन कुमारी 5 साल के उम्र से ही नाना के घर में रहती थी जब बुधवार दिनांक-06.03.2019 को वह बरदाहा गांव पहुंचा तो वहां पता चला कि कंचन कुमारी को मंगलवार दिनांक-05.03.2019 से ही गायब कर दिया गया है। ग्रामीणों से पूछा तो उनलोगों ने भी बताया कि कंचन गांव में मंगलवार दिनांक-05.03.2019 से ही नही दिख रही है। ●

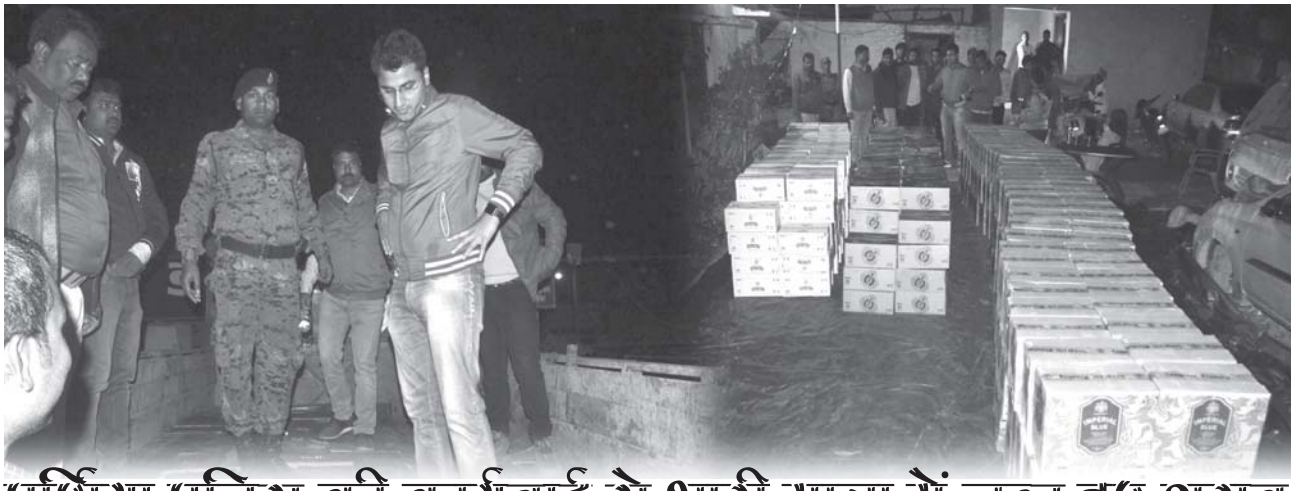

पूर्णिया पुलिस की कार्यवाई से भारी मात्रा में जब्त हुए शराब

● धर्मेन्द्र सिंह

पूर्णिया होली में रंग जमाने के लिए आसाम से बिहार ले जा रही शराब से भड़ी ट्रक को पूर्णिया पुलिस ने पकड़ने में सफलता पायी है। पकड़े गए शराब की अनुमानित कीमत 20 लाख के करीब आंकी जा रही है। पूर्णिया पुलिस ने सोमवार दिनांक-04.03.2019 की रात गुप्त सूचना के आधार पर डगरुआ टोलप्लाज़ा के समीप ट्रक पर लदी करीब 20 लाख रुपए मूल्य की अंग्रेजी शराब बरामद की है। साथ में ही एक ट्रक चालक को भी पुलिस ने अपने कब्जे में लिया है। तलाशी के दौरान ट्रक से 5400 लीटर शराब बरामद की गई। पुलिस ने शराब तस्करों के पास से 01 देशी कट्टा, 01 जिंदा गोली एवं 4 चाकू, 12 फ्रिज भी बरामद किया है। पूर्णिया के तेज तर्रार पुलिस कप्तान विशाल शर्मा ने बताया कि आगामी लोकसभा चुनाव एवं होली को देखते हुए सभी थानाध्यक्ष एवं अधिकारियों को वाहन चेकिंग करने का निर्देश दिया गया था। जिसके बाद पुलिस को बंगाल से शराब की बड़ी खेप आने की सूचना मिली थी। सूचना के आलोक में डगरुआ टोलप्लाज़ा के समीप आसाम नंबर की ट्रक की तालाशी के क्रम में रेड स्टार बियर की 150 कार्टून, टुबोर्ग बियर की 150 कार्टून, इम्पेरियम ब्लू की 200 कार्टून अंग्रेजी शराब बरामद हुई है। उन्होंने बताया कि इस तस्करी में अंतरराज्यीय गैंग काम कर रहा है, जो बिहार में शराबबंदी लागू होने के बाद शराब की सप्लाय बिहार में कर रहे है। इस मामले में पुलिस ने असम राज्य के कोकराझार जिले के एनिमुल इस्लाम, अबू कलाम शेख, दीपक बक्सी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार चालक से पुलिस पूछताछ कर रही है। पकड़े गए सभी शराब के कुरियर का काम कर रहे थे। शराब मंगवाने वाला बिहार में ही बैठकर मोबाइल से ट्रक का पूरा लोकेशन ले रहा था। ट्रक में जीपीएस लगे होने से तस्करी का मास्टरमाइंड गाड़ी आने का इंतज़ार कर रहा था। शराब के कार्टून के ऊपर 12 टूटा हुआ फ्रिज रखा हुआ था। गिरफ्तार अभियुक्त के खिलाफ थाने में उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। डगरुआ थाना क्षेत्र में बरामद शराब की यह दूसरी बड़ी खेप है। उधर, शराब बरामदगी के बाद माफियाओं व धंधेबाजों में हड़कंप मच गया है। पुलिस बड़े माफियाओं तक पहुंचने की कोशिश कर रही है। ●

शराब बंदी कानून के बाद पूर्णियाँ जिला अंतर्गत विदेशी शराब की सबसे बड़ी कुल-5400 सौ लीटर खेप को पकड़ा गया। होली के मौके पर शराब खपाने की थी कोशिश।

☞ **बरामदगी :-** 1. कुल-3600 रेड स्टार केन बियर 500 एमएल 150 कार्टून, कुल-1800 लीटर। 2. कुल-3600 Tuborg strong Premium केन बियर 500 एमएल150 कार्टून कुल-1800 लीटर। 3.कुल-2400 बोतल इम्पेरियल ब्लू 750 एमएल 200 कार्टून 1800 लीटर। 4. जीपीएस लगा हुआ ट्रक नं0-AS-17-8551 5.एक देशी कट्टा एवं 01 जिन्दा गोली। 6. कुल-04 चाकू। 7.पुराना टुटा हुआ कुल-12 फ्रिज।

8.कुल-4400/-रूपया।

☞ **गिरफ्तार अभियुक्तों का नाम एवं पता:-** 1. एनिमूल इस्लाम, पिता-अब्दुल शेख साकिन- पदमबील, थाना-गोसाईगॉव, जिला-कोकराझार राज्य-असम। 2. अबु कलाम शेख पिता-हसन अली, साकिन-थाना-गोसाईगॉव जिला-कोकराझार राज्य-असम। 3.दीपक बास्की पिता-देवेन बास्की, साकिन-पदमबील, थाना-गोसाईगॉव, जिला- कोकराझार राज्य-असम।

☞ **प्राथमिकी :-** डगरुआ थाना कांड संख्या-33/19 दिनांक-05.03.2019 धारा-420/272/273 भा0द0वी0 एवं 30 (ए) बिहार मध-निषेद एवं उत्पाद अधिनियम 2016 एवं 25 (1-बी) ए/26/35 आर्म्स एक्ट।

डकैती की योजना बना रहे अपराधी चढ़े पुलिस के हत्थे

● धर्मेन्द्र सिंह

पूर्णिया पुलिस कप्तान विशाल शर्मा (भा0प0से0) के निर्देशन में पूर्णिया पुलिस आगामी लोकसभा चुनाव-2019 एवं होली शांति पूर्ण एवं निष्पक्ष ढंग से संपन्न कराने हेतु दृढ़ संकल्पित होकर कार्य रही है। इसी क्रम में पुलिस कप्तान पूर्णिया के द्वारा सभी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी एवं थानाध्यक्ष/ओ0पी0 अध्यक्षो को विभिन्न कांडो में फरार अभियुक्तों के गिरफ्तारी का सख्त निर्देश दिया गया है। विगत दिनांक-10.03.2019 की रात्री में पुलिस कप्तान को गुप्त एवं विश्वस्त सुचना मिली की कसबा थानांतर्गत डडोढ़ी कोना गढ़बनैली में डकैती की योजना हैं। प्राप्त सुचना के आलोक में पुलिस कप्तान पूर्णिया द्वारा दिशा निर्देश देते हुए एक विशेष टीम का गठन किया गया। टीम के सदस्यो द्वारा 03 कुख्यात

अपराधकर्मियों को लोडेड पिस्टल के साथ गिरफ्तार

☞ **बरामदगी :-** 1.पिस्टल-02, 2. जिन्दा गोली-11, 3.मोबाईल-02

☞ **गिरफ्तार अभियुक्तों का नाम एवं पता** :- 1.मो0 हसन पिता-मो0 जाहिर आलम, साकिन-माथौर, थाना कसबा जिला-पूर्णिया। 2. मो0 शाहजहां उर्फ़ दीपू पिता-मजहरुल हक़ साकिन-पीपरपांती, थाना जलालगढ़ जिला-पूर्णिया। 3.मो0 अकील पिता-जलील अग्दुल साकिन-माथौर थाना कसबा जिला पूर्णिया।

किया गया है। तथा 02 अन्य अपराधकर्मी फरार होने में सफल हो गये। गिरफ्तार अभियुक्तों के स्वाकारोक्ति बयांन के अधार पर कसबा थाना कांड सं-32/19 मार्ग लूट, कांड सं-39/19 लूट का प्रयास, कांड संख्या-42/19 झपट्टा मारकर मोबाईल लेकर भागना, कांड का उद्भेदन हुआ हैं, तथा 02 अन्य अपराधकर्मियों के गिरफ्तारी हेतु सधन छापेमारी जारी है। ●

पूर्णिया शेल्टर होम मामले में पीड़िता के वकील ने किया बड़ा खुलासा

● धर्मेन्द्र सिंह

पूर्णिया शेल्टर होम मामले में पीड़िता के वकील सुदीप कुमार राय ने आज किया बड़ा खुलासा। कहा पूर्णिया के शेल्टर होम नारी गुंजन बालिका गृह में पीड़िता के साथ होता था गलत काम। बताते चलें कि विगत 4 मार्च को पूर्णिया के शेल्टर होम नारी गुंजन बालिका गृह से दो नाबालिग लड़की कड़ी सुरक्षा को धता बताकर फरार हो गई। पुलिस ने त्वरित कारवाई करते हुए एक नाबालिग लड़की को बरामद कर लिया। लेकिन दूसरी नाबालिग लड़की 7 मार्च को अपने एडवोकेट के साथ न्यायालय में समपर्ण कर दी। नाबालिक के न्यायालय में समर्पण के मामले की खबर पूरे जिले में आग की तरह फैल गई। लोगों में इस घटना को लेकर तरह-तरह की चर्चा होने लगी। समर्पण के बाद आज 8 मार्च को पूर्णिया सीजीएम कोर्ट में आज धारा 164 के तहत पीड़िता का बयान दर्ज करवाया गया। पीड़िता के बयान दर्ज करने के बाद पीड़िता के एडवोकेट सुदीप कुमार राय ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि पीड़िता का धारा 164 के तहत सीजीएम कोर्ट में बयान दर्ज कर लिया गया है एडवोकेट सुदीप कुमार राय ने बताया की पीड़िता के बयान दर्ज होने के बाद मैं पीड़िता से मिला तो पीड़िता ने बताया कि पूर्णिया शेल्टर होम नारी गुंजन बालिका गृह में मेरे साथ गलत काम करवाया जाता था। एडवोकेट सुदीप राय के बयान के बाद पूरे मीडिया जगत में खलबली मच गई। हालांकि धारा 164 के तहत पीड़िता ने क्या बयान दर्ज की है अभी इसकी कोई आधिकारिक रूप से कोई भी घोषणा नही हुई है। जिला प्रशासन ने भी इस मामले को काफी गम्भीरता से लिया है। जिला प्रशासन ने भी इस घटना को लेकर अपने कदम फूँक-फूंक कर रख रही है। ●

वर्षप्रतिपदा (नववर्ष) 2076 तद्नुसार 6 अप्रैल 2019 के शुभ अवसर पर जमुईवासियों, प्रशासनिक पदाधिकारियों और मीडियाकर्मियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

डॉ. रामानन्द प्रसाद भगत

प्राचार्य

सरस्वती अर्जुन एकलव्य स्नातक महाविद्यालय, जमुई

(सम्बद्धता प्राप्त तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय)

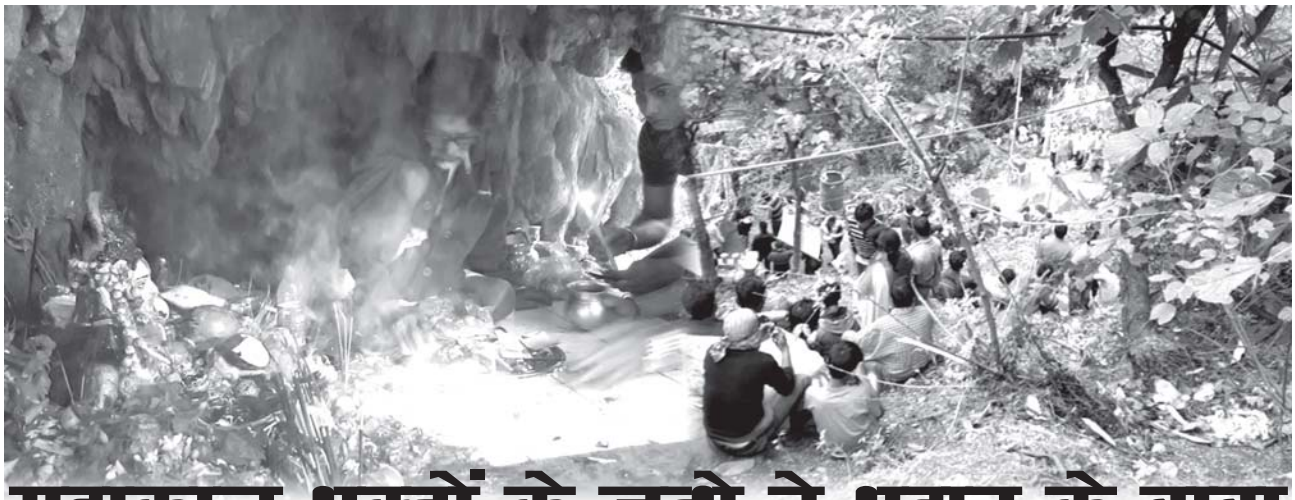

महाकाल भक्तों के जत्थे ने भूटान के बाबा महाकाल को किया जलाभिषेक

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज से महाकाल भक्तों का जत्था महाशिव रात्रि के पावन अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भाँति जोड़ा पहाड़ भूटान के गुफा मे अवस्थित बाबा महाकाल का जलाभिषेक हेतु गया, तथा महाकाल का जलाभिषेक किया। जोड़ा पहाड़ भूटान मे देश के विभिन्न क्षेत्रों भक्तगण लाखों की संख्या मे वहाँ पहुँचते है। तथा बाबा महाकाल का जलाभिषेक कर अपनी याचना करते है। तथा महाकाल उनके सभी कष्टों को दूर करते हुए मनोकामना पूर्ण करते है। वहाँ के विशेषता है कि महाकाल की पूजा मे कोई अडम्बर नही है। भक्त स्वंय पूजा करते है, और जलाभिषेक करने के समय जो भी याचना होती है उसे महाकाल अवश्य पुरा करते है। मान्यता है कि माता सती का अंग भंग होने के बाद इसी गुफा मे भगवान शिव घ्यान अस्त हुए थें। कामदेव द्वारा उनके घ्यान को भंग करने उपरांत शिव महाकाल का स्वरूप लिए। इस गुफा की उपरी छोड़ पर सती का श्मशान भी है। यहाँ महाशिव के वक्त ही गुफा तक जाने का रास्ता खुलता है। तथा होली तक भक्तगण पहुँचते है। गुफा तक जाने का रास्ता बहुत ही दुर्लभ व रोमांचकारी है। घ्यान देनी की बात यह है कि इस धाम को प्रकृति द्वारा ही बनाया है। मनुष्य द्वारा मंदिर का निर्माण नही किया गया है। और प्रकृति द्वारा ही विभिन्न देवी-देवताओं का आकृति बना है। ऐसे तो गुफा बहुत पुराना है लेकिन संन्यासी जिन्हें लोग पगला बाबा के नाम से जानते थे उन्होनें ही इनकी पुजा-अर्चना शुरू की। पगला बाबा 1986 मे समाधि लिए, और भक्तों का आना-जाना लगा रहा। धीरे-धीरे भक्तों की संख्या बढती गई, और भूटान-एवं इंडिया के प्रशासन द्वारा देख-रेख शुरू हुआ। पहले वहाँ कोई व्यवस्था नही थी। पर अब वहाँ लंगर भी लगता है, और प्रशासनिक सुविधा भी उपलब्ध है। महाकाल गुफा तक पहुँचने के लिए पश्चिम बंगाल के अलिपूर द्वार से 25 कि0मी0

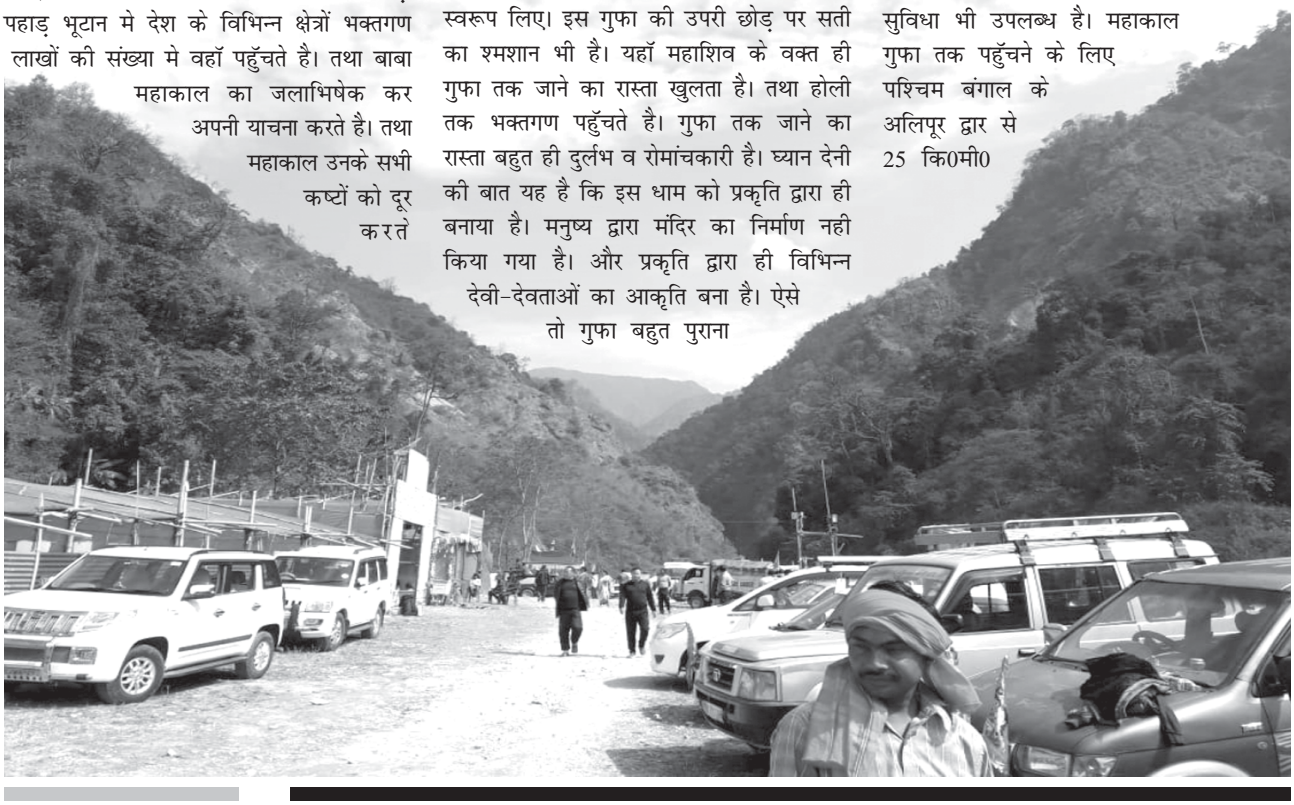

अंदर जयन्ति ग्राम बक्शा अभियारण जाया जाता है, जाने के लिए टैक्सी, बस, की सुविधा उपलब्ध है। जयन्ति ग्राम मे धर्मशाला, एवं रेस्ट हाउस ठहरने के लिए उपलब्ध होता है। ऐसे जयन्ति ग्राम कभी भी जा सकते है। परंतु ऐसे महाशिव रात्रि से होली तक जाना आसान रहता है। इसबार महाकाल सेवा समिति किशनगंज द्वारा नि:शुल्क सेवा शिविर का आयोजन किया गया था। महाकाल के पर्म भक्त हरेकृष्णा महाराज जी ने बताया कि इस धरती पर शिव ही सत्य है और शिव ही सुंन्दर है। पर यहा का अद्भत द्रष्य आज से पहले कभी नही देखा। जैसे हमे लग रहा है कि हम कैलाश पर है, हमे यहॉ अनेकों अनुभूति हुआ है। वहीं महाकाल गुफा के पुजारी किशन जी महाराज (कुच बिहार) उस गुफा मे रहते है एवं भक्तो को आर्शिवाद देते है। अलिपुरद्वार के डीएम, पूलिस अधीक्षक तथा भूटान के वरिष्ठ अधिकारी गण व्यक्तिगत रूप से प्रशासनिक सुविधा मुहैया करा रहे थे। साथ ही कालचीनी विधायक तथा अन्य नेतागण भी मुश्तैद थे। जयन्ति ग्राम के सरपंच श्री काजल मुखर्जी एवं कमल बनर्जी विशेष अभिरूची ले रहे थे। साथ ही महाकाल सेवा समिति किशनगंज के चंचल मुखर्जी, निलेश कुमार उर्फ डब्बू, भोलू, मुनीलाल, मुकेश साहा, प्रदीप गुप्ता, संजय शर्मा, विनोद कुमार साह, सुचीत कुमार सिंह, श्रेय कु0 कुमार सिंह, शुभ कुमार सिंह प्रदीप कुमार डे (कुचबिहार) आनंद कुमार उर्फ भाई, मोलाई दास, सुनील कुमार राम, रोनी कश्यप, दुलाल कुमार सिंह, बिट्टू गुप्ता, महेश कुमार इत्यादि सक्रिय दिखे। आपको बताते चले कि जिले के प्रत्येक वर्ष महाशिव रात्रि के पावन अवसर पर भक्तों का जत्था भूटान की चोटी पर अवस्थित जोड़ा पहाड़ की गुफा के अंदर स्थित महाकालेश्वर का दर्शन करने हेतु पहुँचते है। इस मंदिर मे लोग दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, कोलकता, बिहार के आलावे विभिन्न राज्यों से श्रद्वालु यहॉ महाकाल का दर्शन करने आते है। और उनकी मनोकामनाएू भी पुरी होती है। महाकाल गुफा के पुजारी किशन जी महाराज से जब केवल सच ने संबधित बाते जानना चाही तो कहते है कि भगवान शिव की गणना भारत के द्वादश ज्योतिलिंग मे होती है। किन्तु महाकाल का महात्म केवल इतना ही नही है, ब्रम्हाण्ड को मुख्यत:तीन लोको मे विभाजित किया गया है। आकाश, पृथ्वी, एवं पताल। इन तीन लोको का शासन सर्व व्यापी सदा शिव अपने त्रिगुणात्मक स्वरूप इस प्रकार है। आकाशे तारकां लिंग, पताले हाटकेश्वरम्! भूॅलोके च महाकालं,लिंग त्रय नमोस्तुते !! मालूम हो कि आकाश मे तारका लिंग तथा पाताल मे हाटकेश्वर

पूजित है। महाकाल भूॅ-लोक के शासक है। योगी जन इन तीनों शिव लिंगों का स्मरण करके इन्हें नमस्कार करते है। तो उनके द्वारा महादेव की मानस पूजा सम्पन्न हो जाती है। स्कन्ध पुराण मे भगवान शिव के महाकाल वन मे निवास तथा यहॉ से सृष्टि की संरचना का शुभारंभ करने की कथा है। महाकाल गुफा के पुजारी किशन जी महराज कहते है स्कन्ध पुराण के ब्रम्होत्तर खंण्ड मे राजा चन्द्र सेन एवं श्रीकर गोप की शिव भक्ति तथा महाकालेश्वर की महिमा का गुणगाण मिलता है। पुरातत्व तथा प्राचीन इतिहास के अघ्यन से यह सिद्व होता है कि शिव की प्रतिमा से भी अधिक प्राचीन लिंग एक रस, एक गुण एक परम तत्व पर ब्रह्म सृष्टि, पंचतत्व सबका प्रतीक है, और नन्दी संसार के धर्म का तथा परब्रह्म की उपासना का प्रतीक है। इसलिए शिवलिंग के सामने नंदी अवस्थित रहता है। शिव के तेज को सहन करता है-संभालता है। इसलिए प्राय:देखा गया है कि जहॉ शिव लिंग के सामने नंदी नही होता वहॉ का लिंग अति उग्र हो जाता है। शिव पुराण, वायु पुराण, कुर्म पुराण, लिंग पुराण, स्कन्ध पुराण (संहितात्मक तथा खण्डात्मक) वामण पुराण मे तो विशेष रूप से आद्योपान्त इन्हीं की महिमा व्याप्त है। इन पुराणों इत्यादि सभी के अनुसार महाकाल (शिव) योगी राज है। सब मे शिव लिंग एकोहं द्वितीयों नास्ति का प्रतीत है तथा इसपर जल छोड़ने का अर्थ ब्रह्म मे प्राण लींन करना है। महाकाल गुफा के पुजारी किशन जी महराज कहते है कि लिंग पुराण मे महाकाल को मृत्यु लोक के स्वामी के रूप मे स्तवन किया गया है-मृत्यु लोके महाकालं लिंग रूप नमोस्तुत ! तंत्र शास्त्र की द्विष्टि मे दक्षिण मुखी शिवलिंग अति उग्र होने से प्रचण्ड शक्तिशाली एवं त्वरित फालदायी माना जाता है। भगवान शिव का महाकाल स्वरूप अपने आप मे पूर्ण क्रोधमय स्वरूप है।उनके इसी क्रोध और प्रचण्डता से साधक के शत्रु भयभीत एवं निस्तेज हो जाते है। भगवान महाकाल अपने साधक की हर संकट से रक्षा करते है। खतरे की घड़ी मे उसके हर सम्भावी खतरों से रक्षा करते है। यदि शत्रु आपकी जान के पीछे पड़ गये हो तो भी महाकाल की साधना से उनकी मति पलट जा सकती है। और वे शांत हो जाते है। किसी प्रकार की कोई असामयिक दुर्घटना नही होती। ऐसा माना जाता है कि महाकाल के समक्ष महामृत्यंजय जप करने से आयी हुई मृत्यु भी उलटे पैर वापस लौट जाती है। रोगी स्वस्थ्य होकर दीर्घायू हो जाता है। मरणश्या पर पड़ा व्यक्ति भी नया जीवन पाता है। महाकाल का चक्र प्रवर्तकों महाकाल: प्रतावन: अकाल मृत्यु वो मेरे जो काम करे चाण्डाल का काल उसका क्या बिगारे जो भक्त हो महाकाल का! जय महाकाल ! महाकाल गुफा के पुजारी किशन जी महाराज कहते है कि त्रिपुरारी महाकाल की भूमिका सर्वोपरि है। महाकाल का अर्थ है-समय की सीमा से अलग एक ऐसी अद्वश्य प्रचण्ड सत्ता जो सृष्टि का सु-संचालन करती है। दण्ड व्यवस्था का निर्धारण करती है। एवं जहॉ कहीं भी अराजकता, अनुशासनहीनता दृष्टिगोचर होती है सुव्यवस्था हेतु अपना सुदर्शण चक्र चलाती है। इसे अवतार प्रवाह भी कह सकते है। जो समय-समय पर प्रतिकुल परिस्थिति से निपटने व सामान्य सतयुगी स्थिति लाने हेतु अवतरित होता रहा है। ●

50 प्रतिशत से भी है किशनगंज जिले में लड़कियों का औसतन साक्षरता

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर किशनगंज स्थित आज़ाद इंडिया फाउंडेशन ने आरटीई फ़ोरम के तहत लड़कियों की शिक्षा से संबधित फैक्ट शीट ज़ारी की है जिनके अनुसार भारत में 6 करोड़ से अधिक बच्चे विद्यालय नही जाते हैं। इन मे लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या दोगुनी है। दुनिया में किसी भी देश में स्कूल न जानेवालो बच्चों की यह सर्वाधिक संख्या है। एआईएफ़ की यूमन हुस्सैन के अनुसार 40% 15 से 18 वर्ष की लडकियां किसी भी शैक्षणिक संस्थान में पढ़ने नही जाती। निर्धनतम परिवारों की 30% लड़कियों ने कभी किसी स्कूल की कक्षा में कदम नही रखा। भारत के 25% बच्चे कक्षा 2 की पाठय सामग्री नही पढ़ पाते। अगर अंग्रेजी की बात करे तो 36% लडकियां

और 38% लड़के अंग्रेजी के शब्द नही पढ़ पाते। लगभग 42% लडकियां और 39% लड़के गणित के बुनयादी जमा घटा नही कर पाते हैं। अगर किशनगंज ज़िले की बात करे तो सरकारी आंकड़ों के अनुसार यहाँ औसतन महिला साक्षरता 51% है जिसमे लगभग 40 हज़ार ऐसी लडकियां हैं जिन्होंने कभी स्कूल में कदम नही रखा। अकेले बहादूरगंज प्रखंड में लगभग 6500 लडकियां कभी स्कूल नही गयी। आज़ाद इंडिया फाउंडेशन के ताबिश अख्तर के अनुसार लड़कियों की शिक्षा में रुकावट के तीन प्रमुख कारण हैं, गरीबी व गाँव के आसपास शैक्षणिक संस्थान का न होना तथा इंटरमीडिएट या कॉलेज तक पढ़ने वाली लड़कियों का आवागमन के लिए पर्याप्त सुरक्षित साधन का न होना। इन्ही सारे मुद्दों को ध्यान में रखते हुए एआईएफ़ फाउंडेशन ने राजनैतिक दलों से चुनाव घोषणा पत्र में सिफारिशें शामिल करने की माँग की हैं जिसमे शिक्षा के अधिकार कानून का दायरा बढ़ाया जाये। शिक्षा के बजट में बढ़ोतरी की जाये और लड़कियों को विद्यालय आने जाने के लिए स्कूल अथवा कॉलेज तक सुरक्षित साधन उपलब्ध की जाये। ●

मारवाड़ी कॉलेज शिक्षक संघ ने किया प्रतीकात्मक विरोध

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज स्थानीय मारवाड़ी कालेज किशनगंज में गुरुवार 14 मार्च को पिछले पांच माह से अधिक समय से वेतन भुगतान नही होने के कारण सभी शिक्षकों ने काला बिल्ला लगाकर विरोध दर्ज कराते हुए महाविद्यालय कार्यों को संपादित किया। महाविद्यालय शिक्षक संघ के अध्यक्ष प्रो0 यू0सी0 यादव तथा सचिव डॉ0 गुलरेज रौशन रहमान ने बताया कि पूर्णिया विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (तदर्थ समिति) के आवाहन पर सभी महाविद्यालय शिक्षकों ने वेतन न मिलने के साथ ही साथ शिक्षकों की प्रोन्नति अधिसूचना जारी न होने, नवनियुक्त सहायक प्रोफेसरों की सेवा संपुष्टि न होने, ओरियंटेशन और रिफ्रेशर कोर्स में जाने के लिए मना करने आदि कारणों से काला बिल्ला लगाकर विरोध दर्ज कराया। इसके बावजूद भी सभी शिक्षकों ने आगामी डिग्री पर वन परीक्षा की तैयारियों में सक्रिय योगदान दिया। इस विरोध प्रदर्शन में सचिव एवं अध्यक्ष के अलावा डॉ. मंसूर आलम, प्रो0 के0डी0 पोद्दार, प्रो0 संतोष कुमार सिंह, प्रो0

कुमार साकेत, डॉ0 देबाशीश डांगर एवम् दो, एस. आर. शुक्ल उपस्थित रहे। ●

साइलेंट किलर है वायु प्रदूषण

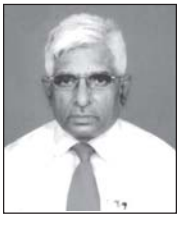

● ललन कुमार प्रसाद

मनुष्य बिना भोजन के 30 दिनों तक और बिना पानी के 3 दिनों तक जीवित रह सकता है, लेकिन बिना हवा के 3 मिनट से अधिक जीवित नहीं रह सकता है। एक व्यस्क व्यक्ति प्रतिदिन लगभग 21600 बार सांस लेता है, जिसके द्वारा वह प्रतिदिन लगभग 15700 लीटर हवा लेता है और उतना ही छोड़ता है। राष्ट्रीय पर्यावरण संस्थान के फेलो डॉ० ए.के. गांगुली के अनुसार एक व्यस्क व्यक्ति प्रतिदिन 2.4 से 4. 0 लीटर पानी पीता है और 0.77 ग्राम भोजन ग्रहन करता है। इस तरह हम पाते हैं कि एक मनुष्य सबसे अधिक हवा लेता है, फिर भी इसके बगैर 3 मिनट से अधिक जीवित नहीं रह सकता है। इतना ही नहीं, हमारे द्वारा प्रतिदिन लिए जाने वाले भोजन की मात्रा में यदि एक तिहाई की कटौती कर दी जाये तो भी हम आजीवन काम करते हुए स्वस्थ रह सकते हैं। हमारे द्वारा प्रतिदिन ली जाने वाली पानी की मात्रा में यदि एक लिटर की कमी कर दी जाये तो भी हम आजीवन काम करते हुए स्वस्थ रह सकते हैं। लेकिन, प्रतिदिन लिए जाने वाली हवा में कुछ भी कटौती नहीं कर सकते हैं। ऐसा इसलिए कि हमारा शरीर जो गर्म रहता है और काम करने के लिए जो हमें ऊर्जा मिलती है, वह हवा की बदौलत ही मिलती है, जो हम श्वांस के जरीय ही लेते हैं। यह शुद्ध हवा में मौजूद 21 फिसदी ऑक्सीजन का ही कमाल है। हवा में मौजूद इसी ऑक्सीजन की बदौलत हम जो भोजन करते हैं, वह ऊर्जा में तब्दील हो पाता है। दरअसल हम जो भोजन करते हैं, वह पचने के बाद रस के रूप में तब्दील हो जाता है तथा शेष सभी व्यर्थ पदार्थ मल, मूत्र, पसीना, नाखून, केस, थूक, खखार, नेटा-पोटा आदि के रूप में शरीर के बाहर निकल जाता है। रस में परिवर्तित यही भोजन शरीर के प्रत्येक कोशिका में मौजूद खून में मिलने के बाद श्वांस द्वारा ली गई हवा में मौजूद ऑक्सीजन से संयोग कर यानि जलकर ऊर्जा यानि गर्मी पैदा करता है, जिसके चलते हमारा शरीर गर्म रहता है तथा हमें काम करने की ऊर्जा मिलती है। लेकिन, दूषित हवा में मौजूद ऑक्सीजन की कमी के चलते ही हमारे शरीर की कोशिका धीरे-धीरे मरती चली जाती है। जिसके चलते हम धीरे-धीरे छोटी-बड़ी ढ़ेर सारी बीमारियों के चपेट में आते चले जाते हैं। इन बीमारियों की संख्या में धीरे-धीरे लगातार बढ़ोत्तरी होती चली जाती है और अंततः हमारी मौत हो जाती है। इसलिए तो हवा में मौजूद ऑक्सीजन को प्राणवायु कहा जाता है।

सभी प्राणी जीवित रहने के लिए श्वांस लेते हैं। जब श्वांस के रूप में जो शुद्ध हवा हम लेते हैं। उसमें ऑक्सीजन की मात्रा 21 फिसदी और कॉर्बन डाईऑक्साइड की मात्रा 0.03 होती है तथा जो हवा हम श्वांस के रूप में छोड़ते हैं, उसमें ऑक्सीजन की मात्रा 16.5 फिसदी और कॉर्बन डाईऑक्साइड की मात्रा 4.5 फिसदी होती है। यह क्रिया यानि श्वसन की क्रिया दिन-रात 24 घंटे निरंतर चलती रहती है, जिसके चलते हम जीवित रहते हैं। शुद्ध हवा का मतलब है, एसी हवा जिसमें नाइट्रोजन 78 फिसदी, ऑक्सीजन 21 फिसदी, कॉर्बन डाईऑक्साइड 0.03 फिसदी तथा शेष निष्क्रिय गैसें और जलवाष्प होती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) की ओर से मई 2018 में जारी रिपोर्ट के अनुसार दुनियां के 15 सबसे अधिक प्रदूषित शहरों

दुनियां में वायु प्रदूषण के कारण सालाना मृत्यु का आंकड़ा :-		
क्षेत्र	-	मरने वालों की संख्या
दक्षिण एशियाई क्षेत्र	-	20 लाख
पश्चिमी पेसिफिक क्षेत्र	-	20 लाख
दक्षिणी अफ्रीकी देश	-	10 लाख
मध्य-पूर्व क्षेत्र	-	05 लाख
यूरोपीय देश	-	05 लाख
अमेरिकी क्षेत्र	-	03 लाख
शेष अन्य क्षेत्र	-	02 लाख

की सूचि में भारत के 14 शहर शामिल है अर्थात् वायु प्रदूषण के मामले में भारत के 14 शहरों की स्थिति बेहद खराब है। इन 14 शहरों में बिहार के तीन शहर शामिल है-गया, पटना और मुजफ्फरपुर। 77 फिसदी से अधिक भारतीय आबादी पी.एम. 2.5 के खतरनाक स्तर (40 मैक्रोग्राम प्रतिघन मीटर) की आवोहवा में श्वांस लेने को मजबूर हैं। मनुष्य सहित कोई भी जीव बिना श्वांस लिए जीवित नहीं रह सकता। लेकिन शुद्ध आवोहवा न हो तो जाने-अनजाने में शरीर ऐसी-ऐसी बीमारियों का घर बन जाता है कि जिसके चलते जीवन नर्क बन जाता है और कई मायनों में यह मौत का कारण बन जाती है। डब्लूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार दुनियांभर के प्रति 10 लोगों में से 9 लोग प्रदूषित हवा में श्वांस लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ डेविड बोयड के मुताबिक दुनियां भर में करीब 600 करोड़ नियमित रूप से इतनी प्रदूषित हवा में श्वांस ले रहे हैं कि इससे उनका जीवन और स्वास्थ्य जोखिम से घिरा रहता है। नतीजा, दुनियांभर में 6 लाख बच्चों सहित सालाना करीब 70 लाख लोग दुषित हवा में श्वांस लेने के कारण असमय ही काल के गाल में समा जाते हैं, इसमें से 37 लाख लोग आउटडोर एयर पॉलूशन के कारण और 33 लाख लोग इंडारे पॉलूशन के कारण। दुनियांभर में सभी कारणों से होने वाली

इंसानी मौतों का 15 फिसदी सिर्फ एयर पॉलूशन से होता है। एयर पॉलूशन के चलते लोगों की औसत उम्र में भी कमी होती जा रही है। मसलन दिल्ली को ही ले लिजिए। दिल्ली, देश का सर्वाधिक प्रदूषित शहर है, फिर भी वहां के लोगों की औसत उम्र में सिर्फ 1.6 साल की कमी आयी है। 42 देशों में हुए अनुसंधान के अनुसार प्रदूषण से एक से पांच साल तक की उम्र में कमी हो रही है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है

डब्लू.एच.ओ. के मई 2018 की रिपोर्ट :- दुनियां में हर साल होने वाली मौतें		
बीमारी	-	मौतें
हृदय रोग	-	34%
निमोनिया	-	21%
ब्रेन स्ट्रोक	-	20%
श्वास/फेफड़ा संबंधी रोग	-	19%
फेफड़े का कैंसर	-	07%

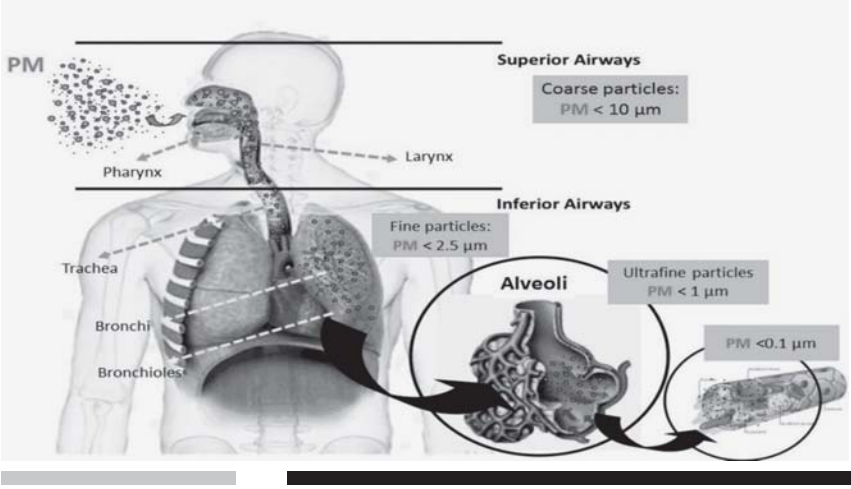

कि लगातार बढ़ते वायु प्रदूषण के चलते तरह-तरह के सौंदर्य प्रसाधनों का इस्तेमाल करते रहने के बावजूद लोग समय से दस वर्ष पहले बुर्जुग हो सकते हैं। लगातार बढ़ते वायु प्रदूषण के चलते वैश्विक स्तर पर सालाना 27 लाख 34 हजार समय पूर्व जन्म के मामले सामने आते हैं, जबकि भारत में 16 लाख जन्म समय पूर्व होते हैं। ऐसा इसलिए की दिल्ली में बेहतर चिकित्सा सेवा उपलब्ध है। राजस्थान में लोगों की औसत उम्र में 2.5 साल की कमी, उत्तर प्रदेश के लोगों की औसत उम्र में कमी 2.2 साल, हरियाणा के लोगों की औसत उम्र में कमी 2.1 साल और बिहार के लोगों की औसत उम्र में कमी 1.9 साल आयी है। यदि वायु प्रदूषण में सुधार लाकर वायु की गुणवत्ता स्तर पीएम 2.5 को 50 तक ला दिया जाये तो लोगों की औसत उम्र में 4.0 साल की बढ़ोत्तरी हो जायेगी। अर्थात् ऐसा होने पर लोगों के बीमार पड़ने तथा मरने में ही कमी नहीं आयेगी बल्कि उनकी औसत उम्र भी बढ़ जायेगी।

★ **आर्थिक नुकसान :-** विश्व बैंक के आंकलन के मुताबिक भारत में कार्य दिवस से होने वाली आय के क्रम में देखा जाये तो वायु प्रदूषण के कारण सालाना 380 करोड़ डॉलर का नुकसान हो रहा है, जबकि वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2250 करोड़ डॉलर का नुकसान पहुंच रहा है और इससे भी ज्यादा स्वास्थ पर खर्च हो रहा है।

★ **क्या होते हैं पार्टिकुलेट मैटर (पीएम)?** :- पार्टिकुलेट मैटर (पीएम), जिसे पार्टिकल पॉलूशन भी कहते हैं, बेहद छोटी-छोटी कणों और अत्यंत छोटी-छोटी तरल बूंदों (बुंदकियों) का समिश्रण हाते हैं। सल्फ्यूरस व सल्फ्यूरिक एसिड्स, नाईट्रिस व नाईट्रिक एसिड्स, कॉर्बोनिक

एसिड, कार्बनिक रसायनों, धातु, धूलकण, परागकण आदि मिलकर इन कणों, जिसे हम पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) या पार्टिकल पॉलूशन कहते हैं, का निर्माण करते हैं। ये पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) इतने नन्हें होते हैं कि बादल की तरह वायुमंडल में लटके हुए वायु के साथ तैरते रहते हैं। जहरीला होने के कारण हवा में जरूरत से ज्यादा इन मैटरों की उपस्थिति का हमारे स्वास्थ्य पर बड़ा ही प्रतिकूल असर पड़ता है। अगर यह मैटर 10 माइक्रोमिटर व्यास के अथवा उसके छोटे आकार के होते हैं तो श्वांस के द्वारा हमारे फेफड़ों में पहुंच जाते हैं, जिससे फेफड़ों सहित पूरे शरीर को बहुत नुकसान पहुंचता है। यह फेफड़ें ही नहीं खून में भी मिलकर शरीर के हर अंग को नुकसान पहुंचाते हैं। श्वांसों में घूलकर यही जहर आगे चलकर अनेक गंभीर बीमारियों का रूप ले लेते हैं। पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) को मुख्यत: दो भागों में बांटा गया है- इनहेलेबल कोर्स पार्टिकल्स और फाइन पार्टिकल्स। इनहेलेबल कोर्स पार्टिकल्स 2.5 माइक्रोमिटर से बड़े और 10 माइक्रोमिटर से छोटे व्यास के होते हैं। इन्हें पीएम 2.5 कहा जाता है, जो हवा की गुणवत्ता मापक यंत्र में पीएम 2. 5 के स्तर को दर्शाता है। इनमें धूल, गर्द और धातु के सूक्ष्म कण शामिल होते हैं। ऐसे कण सड़कों पर उड़ते धूल, उद्योगों की चिमनियों से निकलते धूंआ, कंस्ट्रक्शन के दौरान हवा में उड़ते धूलकण तथा कूड़ा और पराली जलाने से ज्यादा बनते हैं।

शहर	-	2018 का औसत पीएम 2.5
दिल्ली	-	179
कानपुर	-	173
फरीदाबाद	-	151
गया	-	149
पटना	-	144
लखनऊ	-	139
आगरा	-	131
मुजफ्फरपुर	-	120
श्रीनगर	-	113
जयपुर	-	105
पटियाला	-	101
जोधपुर	-	98

✯ **क्या होता है वायु गुणवत्ता सूचनांक (एयर क्वालिटी इंडेक्स, एक्यूआई)?** :- वायु गुणवत्ता सूचनांक का मतलब है प्रदूषण मापण यंत्र पर पीएम 2.5 का स्तर यानि एक्यूआई। एक्यूआई अगर 50 से नीचे है तो स्थिति अच्छा है, अगर 50 से ज्यादा और 100 तक है तो संतोषजनक, अगर 100 से ज्यादा और 200 तक है तो मध्यम, अगर 200 से ज्यादा और 300 तक है तो खराब, अगर 300 से ज्यादा और 400 तक है तो बेहद खराब तथा 400 से ज्यादा और 500 तक है तो बेहद गंभीर।

✯ **किस मौसम में किस समय वायु प्रदूषण का स्तर सर्वाधिक ऊँचा रहता है?** :- हर साल विशेषकर अक्टूबर-नवम्बर में पटना सहित पूरे भारत के प्रमुख शहरों में खासकर उत्तर भारत के शहरों में वायु प्रदूषण का स्तर काफी ऊँचा होता है। वैसे तो पूरे देश में सालाना औसतन 60 करोड़ मिट्रीक टन पराली को दो बार में जलायी जाती है। पहली बार धान का फसल कटने के बाद और दूसरी बार गेंहू के फसल को कटने के बाद। लेकिन धान की फसल कटने के बाद अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में पराली जलायी जाती है। यही कारण है कि अक्टूबर-नवम्बर से लेकर फरवरी के अंत तक उत्तर बिहार के शहर सबसे अधिक प्रदूषित रहते हैं। अर्थात् गर्मी के अपेक्षा जाड़े में वायु प्रदूषण का स्तर ऊँचा रहता है। फिर जाड़े के मौसम में सूर्य के दक्षिणी गोलार्द्ध होने के चलते उत्तर भारत के क्षेत्रों में सूर्य की किरणे सीधी नहीं पड़ती है बल्कि तिरछी पड़ती है। यही कारण है कि जाड़े के मौसम में हवा का फैलाव कम होता है, जिस कारण वायुमंडल के निचले स्तर में धूंआ और दूसरे छोटे-छोटे कण अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में संग्रहित हो जाते हैं फिर जाड़े में गर्मी के मौसम की तुलना में धरती के निकट के वायुमंडल में आद्रता (ह्यूमिडिटी) बहुत अधिक होती है। यही कारण है कि सुबह सबेरे घास पर ओस की बूंदे जाड़े में दिखाई पड़ती है, गर्मी में नहीं। ऐसा इसलिए कि धरती की निकट की सतह पर धरती से दूर की सतह की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक ठंडा होता है। नतीजा धूलकण ऊपर नहीं जा पाता है। इसलिए वायुमंडल के नीचले सतह में धूंआ और दूसरे छोटे-छोटे कण अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में इकट्ठा हो जाते हैं। नतीजा गर्मी की अपेक्षा जाड़ा में धरती के निकट के वायुमंडल में

एक्यूआई	- वातावरण की स्थिति
0-50	- अच्छा
51-100	- संतोषजनक
101-200	- मध्यम
201-300	- खराब
301-400	- बेहद खराब
404-500	- बेहद गंभीर

एक्यूआई	–	स्वास्थ पर असर
1-50	–	नगण्य असर
51-100	–	स्वास्थ पर हल्का प्रतिकूल असर, संवेदनशील लोगों को श्वांस लेने में थोड़ी परेशानी।
101-200	–	समान्यत: श्वांस लेने में परेशानी, स्थमा और दिल के मरीजों को श्वांस लेने में अच्छी-खासी परेशानी।
201-300	–	ज्यादातर लोगों को श्वांस लेने में परेशानी।
301-400	–	श्वसन क्रिया में परेशानी होना तय, अधिक समय तक ऐसे क्षेत्र में रहने से श्वांस की बीमारी से ग्रसित होने का खतरा।
401-500	–	मजबूत तथा स्वस्थ लोगों को भी श्वांस संबंधित बीमारियों से ग्रसित होने का खतरा।

वायुप्रदूषण का स्तर काफी ऊँचा रहता है। जाड़े के मौसम में हवा, गर्मी के मौसम की तुलना में बहुत ही धीरे-धीरे बहती है। ऐसा धरती के पास के वातावरण के कम तापमान तथा अधिक आद्रता होने के चलते होता है। अर्थात् धरती के निकट के वातावरण के भारीपन के चलते होता है। इन्हीं सभी कारणों के चलते जाड़े के मौसम में धरती के निकट के वायुमंडल में वायुप्रदूषण का स्तर काफी ऊँचा होता है। इसलिए स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं कि जाड़े के मौसम में सुबह-सबेरे पार्कों में टहलना स्वास्थ्य के लिए बहुत अधिक नुकसानदेह होता है।

★ **बिहार में वायु प्रदूषण का असर :-** इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च सहित देश के कई अन्य चिकित्सीय संस्थानों के वैज्ञानिकों के आंकलन के अनुसार वर्ष 2018 में बिहार में वायु प्रदूषण के चलते 96967 लोगों की मृत्यु हुई और लोगों की औसत आयु में 1.9 वर्ष की कमी आयी। अर्थात् बिहार के लोगों की औसत आयु 71.1 साल होनी चाहिए थी, वह घटकर 69.2 साल रह गई।

★ **पटना के वायु प्रदूषण का स्तर :-** बिहार प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक वर्ष 2017 में पटना शहर में वर्ष के 365 दिनों में सिर्फ दो दिन ही उत्तम दर्जे यानि 2.5 पीएम स्तर 50 रही, 77 दिन कामचलाउ या संतोषजनक यानि 2.5 पीएम स्तर 50 से 100 के बीच रही, 92 दिन खराब यानि 2.5 पीएम स्तर मध्यम दर्जे यानि 100 से 200 के बीच रही, 71 दिन खराब यानि 2.5 पीएम स्तर 200 से 300 के बीच रही, 85 दिन बहुत खराब यानि 2.5 पीएम स्तर 300 से 400 के बीच रही और 36 दिन कष्टदायक यानि बेहद गंभीर यानि 2.5 पीएम स्तर 400 से 500 के बीच रही।

वर्ष 2019 के फरवरी माह में पटना शहर में छः दिनों के 24 घंटे का पीएम स्तर :-

तिथि	औसत	अधिकत्तम
1 फरवरी	300	500
2 फरवरी	229	330
3 फरवरी	228	330
4 फरवरी	134	250
5 फरवरी	154	300
6 फरवरी	332	400

★ **पटना में वायु गणवत्ता की मॉनीटरिंग :-** पटना में अभी एक ही एयर क्वालिटी मानीटरिंग स्टेशन है, जो तारामंडल के परिसर में अवस्थित है। पटना तारामंडल के बाहरी हिस्से में सड़क के किनारे एक एयर क्वालिटी डिसप्ले बोर्ड भी लगा है, जिसपर हवा की क्वालिटी की जानकारी समय-समय पर दी जाती है। बिहार सरकार तीन नये एयर क्वालिटी मॉनीटरिंग स्टेशन शहर के तीन अलग-अनग क्षेत्रों में स्थापित करने जा रही है-आवासीय क्षेत्र कंकड़बाग, औद्योगिक क्षेत्र पाटलिपुत्र या पटना एयरपोर्ट या चिड़ियाखाना और अस्पताल क्षेत्र पीएमसीएच। प्रत्येक एयर क्वालिटी स्टेशन पर एक करोड़ रूपये खर्च लगने का अनुमान है। इसके लिए टेंडर निकाला जा चुका है, जल्द ही स्थापित किया जायेगा और काम करने लगेगा।

वर्ष 2017 में देश भर में वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों से 12 लाख 40 हजार 530 लोगों की मौत हुई थी। इनमें से बिहार सहित 8 राज्यों में 863574 और देश के अन्य राज्यों में 376956, सबसे अधिक मौतें उत्तर प्रदेश में 2 लाख 60 हजार, दूसरे स्थान पर महाराष्ट्र 1 लाख 80 हजार और तीसरे स्थान पर बिहार 96967।

★ **वायु प्रदूषण नियंत्रण के मामले में फिसड्डी है बिहार :-** पटना शहर में कुल 96 वाहन प्रदूषण जांच केन्द्र है जबकि पूरे शहर में दानापुर से लेकर पटना सिटी तक ऐसे 200 से अधिक जांच केन्द्र होने चाहिए। बिहार प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष डॉ० अशोक कुमार घोष ने सर्वेक्षण में पाया कि 96 वाहन प्रदूषण जांच

पटना शहर में पीएम 2.5 के जिम्मेदार कारक एवं हिस्सेदारी :-

कारक	–	हिस्सेदारी
सड़क की धूल	–	38%
वाहन	–	20%
घरेलू स्त्रोत	–	12%
औद्योगिक कारक	–	11%
कंक्रीट बेंचिंग	–	06%
होटल व रेस्तरां	–	03%
ठोस कचड़ा जलना	–	03%
अन्य	–	07%

पटना में वर्ष 2018 के सर्वे की रिपोर्ट :-	
वाहन प्रदूषण जांच केन्द्र	**- संख्या**
जांच में सही पाये गये	- 18
जांच में फेल पाये गये	- 35
जांच में बंद पाये गये	- 34
फर्जी पता वाले जांच केन्द्र	- 05
बगैर मशीन का जांच केन्द्र	- 02

केन्द्रों में से सिर्फ 18 वाहन प्रदूषण जांच केन्द्र ही सही है। यहां पर इस बात का भी उल्लेख करना जरूरी है कि सही पाये गये 18 वाहन प्रदूषण जांच केन्द्रों के कर्मचारी अपनी ड्यूटी जिम्मेदारी पूर्वक नहीं निभाते हैं।

बिहार राज्य प्रदूषण बोर्ड के द्वारा इस साल 14 से 25 जनवरी के बीच कराये गये सर्वे से पता चला है कि पटना के पाटलीपुत्र औद्योगिक क्षेत्र में छोटी-बड़ी 62 औद्योगिक इकाईयां बगैर अनुमति के चलायी जा रही है। इन उद्योगों में वायु प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए कोई भी उपकरण नहीं लगाया गया है। इसलिए ये उद्योग वायु और जल प्रदूषण को रोकने के किसी भी नियम-कानून का पालन नहीं करते हैं। आश्चर्य की बात है कि यह कारनामा बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की नाक के नीचे हो रहा है तो पूरे राज्य का क्या नजारा होगा? सचमुच बहुत ही दयनीय।

दानापुर से लेकर पटना सिटी तक फैले हुए पूरे पटना शहर में सिर्फ एक ही एयर क्वालिटी मॉनीटरिंग स्टेशन है जो पटना शहर के तारामंडल में अवस्थित है। ऐसे में शहर के अलग-अलग क्षेत्रों की आवोहवा की गुणवत्ता की मॉनेटीरिंग नहीं की जा सकती है। सिर्फ पटना शहर के अलग-अलग क्षेत्रों में कम से कम छः एयर क्वालिटी मॉनेटरिंग स्टेशनों की स्थापना की जानी चाहिए। इतना ही नहीं पटना को छोड़कर बिहार के किसी भी दूसरे शहर में एक भी एयर क्वालिटी मॉनेटरिंग स्टेशन स्थापित नहीं किया गया है। ऐसे में बिहार के किसी भी शहर की आवोहवा की गुणवत्ता की मॉनीटरिंग कैसे की जा सकेगी?

★ वायु प्रदूषण के कारण :-

☞ **सड़कों पर वाहनों की बढ़ोत्तरी :-** सड़कों पर वाहनों की संख्या जितनी बढ़ेगी, वायु प्रदूषण में बढ़ोत्तरी भी उतनी ही होगी। ऐसा इसलिए की सड़कों पर दौड़ते वाहन दहन के दौरान ऑक्सीजन को खत्म करते रहते हैं। एक मिनट में 1135 व्यक्तियों को श्वांस लेने में जितनी ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है, उतनी एक वाहन द्वारा एक मिनट दौराने से नष्ट हो जाती है। लेकिन लोगों को यह अजगर दिखाई नहीं दे रहा है, तभी तो हर आदमी अपनी निजी गाड़ी में चलना चाहता है। दरअसल, ज्यादा वाहनों की संख्या का अर्थ है तेल की खपत का बढ़ना। वाहनों से निकलने वाली कॉर्बन डाईऑक्साइड, कॉर्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड, नाईट्रोजन के ऑक्साइड्स आदि हवा को जहरीली बना देती है। भारतीय शहरों में सर्वाधिक वायु प्रदूषण सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों से उत्सर्जित धूंआ और जहरीली गैसों तथा सड़कों पर उड़ती धूल से होती है। वायु प्रदूषण में अकेले वाहनों का हिस्सा लगभग 33 फिसदी है। बिहार में 52 लाख वाहन पंजीकृत है। अकेले पटना में 8 लाख से अधिक वाहन दौड़ रहे हैं। पिछले साल 2018 में वाहनों के निबंधन में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो पश्चिम बंगाल के बाद देश में सबसे अधिक थी। पिछने साल पटना में 15 फिसदी, मुजफ्फरपुर में 10 फिसदी और गया में 5 फिसदी नये वाहन खरीदे गये। पटना शहर में सड़कों के चौड़ीकरण में एक फिसदी का इजाफा हो रहा है, जबकि वाहनों की संख्या में सालाना 15 फिसदी का इजाफा हो रहा है। शहर में वाहन सुचारू रूप से चले, इसके लिए नीतीश सरकार ने पटना शहर में फ्लाईओवर का जाल बिछा दिया है, बावजूद इसके पटना सहित बिहार के अन्य शहरों में ट्रैफिक जाम की समस्या बद से बद्तर होती जा रही है। सेन्ट्रल अर्बन ट्रांसपोर्ट द्वारा हाल ही में जारी रिपोर्ट के अनुसार ट्रैफिक जाम के चलते कोलकाता के बाद पटना में सबसे कम गति से वाहन चलते हैं। कोलकाता में औसतन करीब 90 किलोमीटर प्रतिघंटा तो पटना में औसतन 12 किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से वाहन चलते हैं। स्पष्ट है कि सड़कों पर रेंगते हुए वाहनों के चलते आवोहवा बहुत अधिक प्रदूषित होती है। इतना ही नहीं सड़कों पर दौड़ते 15 साल पुराने वाहनों को शामिल कर दिया जाये तो फिलहाल बिहार की सड़कों पर 75 फिसदी अनफिट वाहन दौड़ रहे हैं।

☞ **पुरानी तकनीक से चलाये जा रहे हैं ईंट भट्टे :-** बिहार में 5510 से अधिक ईंट भट्टे

प्रदूषण फैलाने वाले कारक		
कारक	-	**प्रदूषण में हिस्सेदारी**
वाहनों से निकलते धुंए	-	39%
उद्योगों की चिमनियों से निकलते धुंए	-	22%
हवा में उड़ते धूलकण	-	18%
रिहायशी इलाकों के चलते	-	06%
ऊर्जा संयंत्रों से निकलते धुंए	-	0.3%
अन्य स्त्रोतों से	-	12%

चलाये जा रहे है, जिनसे हर साल करोड़ों ईंटे निकलती है। इन ईंट भट्टों से निकलने वाले धूंआ और जहरीले गैसों से हवा बुरी तरह प्रदूषित हो रही है। इन 5510 ईंट भट्टों में से नगण्य ही ईंट भट्टों में स्वच्छत्तर नयी तकनीक को अपनाया गया है जबकि बिहार की राजधानी पटना शहर के आसपास के सिर्फ पांच प्रखण्डों (पटना सदर, दानापुर, मनेर, फुलवारीशरीफ, फतुहा) में स्वच्छत्तर नयी तकनीक को अपनाया गया है तो पूरे बिहार की क्या स्थिति होगी, आप खुद ही अंदाजा लगा सकते हैं। दूसरे शब्दों में पूरे बिहार में पुरानी तकनीक पर आधारित ईंट भट्टे बदस्तूत चलाये ज रहे हैं, जिससे निकलने वाले धूंआ और जहरीले गैस के चलते हजारों-हजार पेड़ सूख गये है।

☞ **परंपरागत जलावन का इस्तेमाल :-** मोदी सरकार द्वारा प्रधानमंत्री उज्वला योजना के तहत देश के करीब सात करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को सिलेंडर तथा रेगुलेटर के साथ कुकिंग गैस के चुल्हे मुफ्त उपलब्ध कराये गये हैं। बावजूद इसके बिहार के 90 फिसदी परिवार लकड़ी, गोंइठा, कोयला, किरोसिन, भूसी आदि जैसे परंपरागत जलावन का इस्तेमाल कर खाना पकाते हैं, जिसके चलते पर्यावरण पूरी तरह प्रदूषित हो रहा है। परंपरागत जलावन के इस्तेमाल में बिहार पूरे देश में पहले स्थान पर है। आधुनिक जलावन के इस्तेमाल में झारखण्ड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्य भी बिहार से बेहतर स्थिति में है, जबकि ये दोनो राज्य आदिवासी बहुल्य राज्य हैं।

☞ **निरंतर जलते रहने वाले ढ़ेर सारे निर्माण कार्य :-** पटना शहर अब धूल का शहर बन गया है। पटना के बेलीरोड, दरोगा प्रसाद राय पथ, आर.ब्लॉक, करबिगहिया, मीठापुर, सिपारा, खगौल और दीघा में जगह-जगह पर सुबह से शाम तक धूल का गुब्बार देखने को मिलता रहता है। इसका मुख्य कारण है-सड़कों पर दौड़ते वाहनों के अलावा कंस्ट्रक्शन के कार्य स्थलों को ग्रीन चादर से बगैर ढ़के ही कंस्ट्रक्शन के कार्यो को किया जाना। बेली रोड, दरोगा प्रसाद राय पथ, लोहिया पथचक्र, आर.ब्लॉक, वीरचंद पटेल पथ, सचिवालय, हार्डिंग रोड, मीठापुर, करबिगहिया और सिपारा में फ्लाईओवर का निर्माण, एम्स के निकट एन.एच. -98 खगौल में एलिवेटेड रोड के निर्माण का सम्पर्क पथ, गंगा निर्माण पथ आदि सहित ढ़ेर सारे अर्पाटमेंट और प्राइवेट भवन निर्माण और पटना के कई जगहों पर पथ निर्माण के चलते इन निर्माण स्थलों के आसपास की जगह धूल से बाहर आता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है।

☞ **तेजाबी बारिश :-** उद्योगों से उत्सर्जित सल्फर डाईऑक्साइड और सल्फर ट्राईऑक्साइड कैसे जल में घूलनशील होने के कारण पर्यावरण में मौजूद जल की नन्ही-नन्ही बुंदकियों में घूलकर क्रमशः सल्फ्यूरस और सल्फ्यूरिक अम्लों का निर्माण करते हैं। इसी तरह उद्योगों और वाहनों से उत्सर्जित कार्बन डाईऑक्साइड गैस जल में घूलनशील होने के कारण पर्यावरण में मौजूद जल की नन्ही-नन्ही बुंदकियों में घूलकर कॉर्बोनिक अम्ल का निर्माण करते हैं। इसी तरह ताप विद्युत गृहों, वाहनों और कारखानों से उत्सर्जित नाइट्रोजन के ऑक्साईड्स जल में घूलनशील होने के कारण वातावरण में मौजूद जल की नन्ही-नन्ही बुंदकियों में घूलकर नाईट्रस और नाईट्रिक अम्लों का निर्माण करते हैं। विभिन्न अम्लों के रूप में ये नन्ही-नन्ही जल की बुंदकियां इतनी हल्की होती है कि हवा में तैरती रहती है, जो बारिश के दौरान बारिश के बूंदों से मिलकर धरती पर तेजाबी बारिश करती है। यही तेजाबी बारिश मानव स्वास्थ्य के साथ-साथ पेड़-पौधों, जानवरों और ऐतिहासिक स्मारकों को काफी नुकसान पहुंचाती है। अब प्रश्न उठता है कि तेजाबी बारिश क्या है? जब वर्षा के पानी का पी.एच. मान 5.6 या 5.6 से कम हो जाता है तो ऐसी बारिश को तेजाबी बारिश कहते हैं।

2017 के 8 राज्यों में हुए मौतों के आंकड़े :-	
राज्य	**- मौतें**
उत्तर प्रदेश	- 2 लाख 60 हजार
महाराष्ट्र	- 1 लाख 80 हजार
बिहार	- 96 हजार 967
राजस्थान	- 90 हजार 499
मध्य प्रदेश	- 83 हजार 45
गुजरात	- 58 हजार 696
हरियाणा	- 28 हजार 965
झारखण्ड	- 26 हजार 486
कुल	**- 8 लाख 63 हजार 574**

☞ **कीटनाशी रसायनों का प्रयोग :-** आज के प्रदूषित वातावरण में किड़ों-मकोरों तथा सूक्ष्म जिवाणुओं का प्रकोप लगातार बढ़ता ही जा रहा है। इसके द्वारा फसलों को पहुंचने वाली हानि कोई छोटी हानि नहीं है, क्योंकि इनकी मेहरबानी से हमारे देश में हर साल अरबों रूपये मूल्य का कृषि उत्पाद नष्ट हो जाता है। ऐसे में किटनाशी रसायनों के प्रयोग से बहुत लाभ पहुंच रहा है। परंतु इनके प्रयोग से हानि भी कम नहीं हो रही है। घरों के अंदर मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, इनसेफलाइटिस आदि खतरनाक बीमारियों से बचने

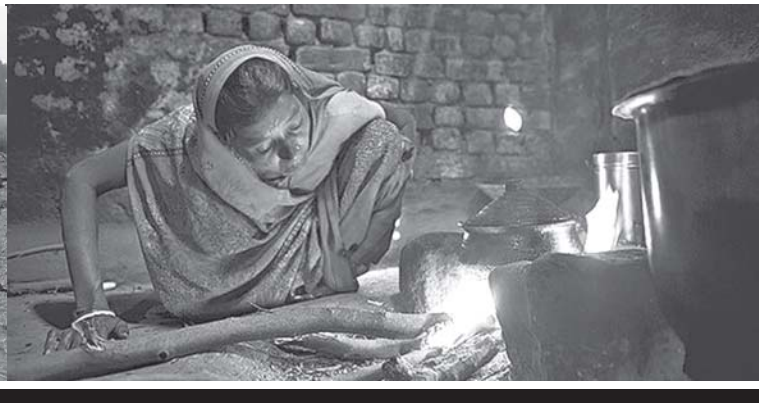

विश्व के सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले देश :-		
देश	-	**हिस्सेदारी**
चीन	-	23.43%
अमेरिका	-	14.69%
भारत	-	5.70%
रूस	-	4.87%
ब्राजील	-	4.17%

(हेल्थ इंफैक्ट्स इंस्टीच्यूट, अमेरिका)

विश्व के सबसे प्रदूषित देश :-		
देश	-	**हवा की शुद्धता**
बांग्लादेश	-	02.9%
पाकिस्तान	-	25.5%
भारत	-	27.5%
विश्व के सबसे स्वच्छ देश :-		
देश	-	**हवा की शुद्धता**
आइसलैण्ड	-	95.0%
फिनलैण्ड	-	93.4%
ऑस्ट्रेलिया	-	93.2%

के लिए फीनिट, काला हिट, लाल हिट, मॉसकिटो क्वायल, मॉसकिटों लिक्वीडेटर आदि किटनाशियों का खुलकर इस्तेमाल हो रहा है। शहरों के गलियों में किटनाशियों की फांगिंग भी की जाती है। ऐसा किया जाना जरूरी है, वरना हर साल उपरोक्त खतरनाक बीमारियों के चलते करोड़ों लोगों की मृत्यु हो सकती है। जरूरी दस्तावेज, पुस्तकों, पेंटिंग्स आदि की सुरक्षा के लिए भी किटनाशी रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन इन किटनाशी दवाओं के प्रयोग द्वारा दुनियांभर में हर साल लाखों लोग समय से पूर्व बुढ़े और अपाहिज हो जाते हैं। कैंसर से ग्रस्त हो जाते हैं और लाखों लोगों की मृत्यु हो जाती है। क्योंकि इनके प्रयोग से हवा बुरी तरह प्रदूषित हो जाती है। जानवरों, पक्षियों और जलजीवों पर भी इन कीटनाशी रसायनों का घातक प्रभाव पड़ता है। कीटनाशी रसायनों के प्रयोग से होने वाली दुर्घटना की सूचि में भारत विश्व में तीसरे स्थान पर है, इसलिए कीटनाशी रसायनों का प्रयोग जरूरी है, लेकिन सीमित मात्रा में, विवेकपूर्ण तथा इनके प्रयोग से संबंधित सभी जरूरी सावधानियों को बरतते हुए इनसे पहुंचने वाले नुकसान को यथा संभव कम से कम किया जा सकता है।

★ वायु प्रदूषण नियंत्रण के कारगर उपाय:-

☞ प्रशासन अधिक धूंआ उगलने वाले वाहनों पर बगैर देर किए रोक लगाये। 15 साल से अधिक पुराने वाहनों के इस्तेमाल पर रोक लगाये। वाहनों के मालिक अपने-अपने वाहनों की सर्विसिंग जरूरत के मुताबिक समय-समय पर कराते रहे। वाहनों के कॉर्बोरेटर को साफ रखे तथा उनके इंजन की ट्यूनिंग भी सही रखे। जिससे वाहनों से उत्सर्जित होने वाली जहरीली गैसों के साथ-साथ ईंधन की खपत भी यथा संभव कम से कम हो। वाहनों में प्रीमियम या हाईस्पीड पेट्रोल और यूरो टू डीजल यानि उम्दा किस्म के डीजल का इस्तेमाल करे। जिससे ईंधन की खपत में उल्लेखनीय कमी के साथ-साथ पर्यावरण भी कम से कम प्रदूषित हो। ऐसी व्यवस्था की जाये की लोग निजी वाहनों के बजाय सामुहिक वाहनों का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा करे। ऐसी व्यवस्था की जाये की वाहन मालिक अपने-अपने वाहनों की जांच समय-समय पर वाहन प्रदूषण नियंत्रण केन्द्रों पर कराकर वाहन फिटनेश सर्टीफिकेट लेने को बाध्य हो, जिससे की पर्यावरण यथा संभव कम से कम प्रदूषित हो। पेट्रोल और डीजल से चलने वाले ऑटो (टेम्पू) के स्थान पर ई-रिक्सा को तरजीह दे। 17 फरवरी को प्रधानमंत्री ने पटना शहर को सीएनजी का तोहफा दे दिया। फिलहाल पटना शहर में दो स्थानों पर सीएनजी फिलिंग स्टेशन स्थापित किये जा चुके हैं। अत: ऐसी व्यवस्था की जाये की शहर में ज्यादा से ज्यादा सीएनजी चालित ऑटो चलायी जाये। पेट्रोल और डीजल की तुलना में सीएनजी से पर्यावरण 80 फिसदी कम प्रदूषित होता है।

☞ औद्योगिक इकाईयां अपने चिमनियों द्वारा हो रहे धूंआ और जहरीली गैसों के उत्सर्जन हमेशा में निर्धारित मानक के अनुकूल बनाये रखे। सभी तरह के उद्योग अपने यहां प्रदूषण मापने वाले यंत्र लगाये और 24 घंटे उसकी मॉनीटरिंग कराते रहे। अधिक धूंआ और जहरीली गैसे उत्सार्जित करने वाले कल-कारखानों को बिना देर किये हुए बंद करावे। कल-कारखानों का धूंआ उगलने वाली चिमनियों की ऊँचाई अधिक रखे यानि ऊँची चिमनियां लगवाये। ताकि फैक्ट्रियों के आसपास के वातावरण को चिमनियों से निकलने वाले धूंआ तथा जहरीली गैसों से यथासंभव दूर रखा जा सके। ऊँचाई के हिसाब से चिमनियों में इलेक्ट्रोस्टैटिक प्रेसिपीटेटर लगवाने चाहिए ताकि कालिख के कण चिमनियों से निकलकर बाहर के वातावरण में न मिलने पाये, बल्कि चिमनियों के पेंदों में इक्ट्ठा होता रहे, जिसे समय-समय पर चिमनियों से निकालकर उचित तरीके से उचित स्थान पर निष्पादित किया जा सके। चिमनियों से निकलने वाली कॉर्बन डाईऑक्साइड और सल्फर डाईऑक्साइड गैसों को वातावरण में उत्सर्जित करने के पहले स्क्रबर से गुजारा जाना चाहिए। जिससे की 90 फ़िसदी कॉर्बन डाईऑक्साइड को कैल्सियम कार्बोनेट के रूप में और 90 फिसदी सल्फर डाईऑक्साइड को कैल्सियम सल्फाइट के रूप में प्रक्षेपित कर वातावरण में दाखिल होने से रोका जा सके।

☞ खाना पकाने के लिए कोयले, लकड़ी, गोंइठा आदि की जगह एलपीजी कुकिंग गैस, गोबर गैस और वायोगैस का इस्तेमाल करे। ढ़ाबों तथा छोटी-छोटी चाय के दुकानों में कोयले की जगह कुकिंग गैस का इस्तेमाल करे। 17 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पटना को पीएनजी का तोहफा दिया। सरकार द्वारा ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि पटना शहर के लोग खाना पकाने के लिए पीएनजी का इस्तेमाल अधिक से अधिक करे। ऐसा करने पर गैस सिलेंडर से जुड़ी सारी परेशानियों से गृहणियों

को निजात मिल जायेगा और पर्यावरण भी कम प्रभावित होगा।

☞ कल-कारखानों को हमेशा शहरों और गांवों से एक निश्चित दूरी पर स्थापित किया जाना चाहिए, जिससे की शहरों और गांवों में रहने वाले लोगों के स्वास्थ पर प्रतिकूल असर न पड़े और यदि पड़े भी तो कम से कम पडे। मसलन झारखण्ड का जादूगोडा इलाका ले लिजिए, जहां न्यूकलियर प्लांट की स्थापना के बाद इलाके के लोग भारी संख्या में गंभीर बीमारियों से ग्रस्त हो गये। जादूगोडा में ही न्यूकलियर ईंधन के अयस्क पिचब्लेण्ड की खाद्यान्ने हैं, जहां खनन के द्वारा पिचब्लेण्ड अयस्क को खाद्यान्न से बाहर निकाला जाता है। पिचब्लेण्ड एक प्रकार का रेडियो एक्टिव पदार्थ है, जिससे अल्फा औ बीता पार्टिकल्स तथा गामा रेज बराबर निकलती रहती है, जो स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है। फिर भी वहां पर सुरक्षा के मापदंडों को पूरी तरह से नहीं अपनाया गया है। यह जादूगोडा के आदिवासियों के जीवन से खिलवाड़ नहीं तो और क्या है?

☞ ऐसी व्यवस्था हो की ईंट भट्टा के मालिक और संचालक स्वच्छत: नई तकनीक को अपनाने के लिए मजबूर हो जाये। ऐसा किये जाने पर ईंटों की गुणवत्ता में सुधार होगी, कोयले की खपत में कमी आयेगी और चिमनियों से धूंआ तथा जहरीली गैसों का उत्सर्जन कम होगा।

☞ सड़कों पर कचड़ों का ढ़ेर न रहने दे तथा घर, दुकान, दफ्तार आदि के आसपास सफाई रखे।

☞ खुले में सड़कों के किनारे कूड़ा डम्पिंग यार्डो आदि जगहों पर कूड़ा नहीं जलाये।

☞ भवनों, फ्लाईओवर आदि के निर्माण के दौरान कार्यस्थल को ग्रीन चादर से ढ़ककर निर्माण का कार्य कराये, जिससे की धूलकण कम से कम उड़कर वातावरण में फैल सके। सड़कों, पुलों, फ्लाइओवरों आदि के निर्माण और मरम्मत के दौरान पानी का छिड़काव समय-समय पर करवाते रहे, जिससे की वातावरण में भारी मात्रा में धूलकणों को फैलने से बचाया जा सके।

☞ पटना नगर निगम के सड़कों के धूल की सफाई के लिए 10 स्वीपिंग मशीने खरीदा गया है और कभी-कभार इन स्वीपिंग मशीनों का इस्तेमाल भी किया जा रहा है, लेकिन इससे बात नहीं बनेगी। इन स्वीपिंग मशीनों द्वारा सड़कों की धुलाई नित्य रात के 11 बजे से सुबह के 6 बजे तक नियमित कराये। सफाई सुपरवाईजर इसकी मॉनीटरिंग करे और हर दिन नगर निगम को रिपोर्ट दें।

☞ बालू, मिट्टी, सिमेंट, गिट्टी आदि का परिवहन ढ़ककर करे। इन समानों का भंडारण सड़क के किनारे न करे।

☞ प्रशासन द्वारा ऐसी व्यवस्था हो कि सड़कों के किनारे तथा अन्य जगहों पर वृक्षारोपण को बढ़ावा मिले। साथ ही हरे पेड़ों की कटाई पर सख्ती से रोक लगाये। पेड़, वातावरण से कॉर्बन डाईऑक्साइड गैस को शोषित कर बदले में ऑक्सीजन गैस उत्सर्जित कर पर्यावरण को स्वच्छ रखने के साथ-साथ शोर (ध्वनी) प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी लाते हैं।

☞ सरकार को सालभर में दो बार-एक धान की फसल कटने के बाद और दूसरा गेंहू की फसल कटने के बाद अपने खर्चे पर किसानों के खेतों को जुतवा दे।

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

देवरत का है यह अरमान, सीमांचल का सब जगह हो सम्मान

मुझे रंगों से नहीं, रंग बदलने वालों से डर लगता है। असत्य पर सत्य की जीत और भाईचारा का प्रतीक रंगों का पर्व होली और रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएँ।

निवेदक :- देवरत गणेश
किशनगंज, बिहार
मो.:-8986196502

ग्राम पंचायत राज सोन्धानी के सभी सम्मानित जनता को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-
बिन्दु देवी, मुखिया
ग्राम पंचायत राज-सोन्धानी,
भगवानपुर हाट, सिवान
अनिल महतो
मुखिया प्रतिनिधि
मो०:-9934612916

अत्याधिक खतरनाक है खनन प्रदत्त वायु प्रदूषण

● **ललन कुमार प्रसाद**

अत्यधिक खतरनाक है खनन प्रदत्त वायु प्रदूषण, क्योंकि खनन से पर्यावरण की प्राकृतिक व्यवस्था ही उलट-पुलट जाती है। दरअसल, खनन की गतिविधियों से पर्यावरण के प्राकृतिक संरचना में जर्बजस्त उलट-पुलट की वजह से खतरनाक असंतुलन पैदा हो जाता है। साथ ही हवा, पानी और मिट्टी, तीनों ही प्रदूषित हो जाती है। इन सब का मनुष्य, पशु-पक्षी और पेड़-पौधों के जीवन पर बहुत ही खराब असर पड़ता है। फिर खनन प्रारंभ करने के पहले जंगलों का सफाया करना पड़ता है, क्योंकि खनन क्षेत्र जंगलों में पाये जाते हैं। इसलिए खनन के चलते मुख्य रूप से सर्वप्रथम जंगल प्रभावित होते हैं, जो पर्यावरण संरक्षण का सर्वाधिक शक्तिशाली घटक है। ऐसा इसलिए कि पेड़, हवा, पानी और मिट्टी तीनों को हर तरह से सर्वश्रेष्ठ संरक्षण प्रदान करते हैं।

★ **हर हालत में जरूरी है खनन :-** दरअसल, धरती के गर्भ में छिपी प्राकृतिक संपदा अथवा संसाधनों को उपलब्ध कराने का एक मात्र जरीया खनन ही है। इसलिए इस कार्य के बिना विकास तो विकास, जीवन निर्वाह भी नामुमकिन है। अर्थात् खनन कार्य को जारी रखना हमारी लाचारी है, क्योंकि इसके बिना हमारा गुजारा संभव नहीं है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है कि इससे होने वाले पर्यावरण प्रदूषण को नजरअंदाज कर दिया जाये। यह ठीक है कि विकास अथवा प्रगति के लिए खनन आवश्यक है तो जीवित रहने के लिए पर्यावरण संरक्षण भी कम आवश्यक नहीं है। ऐसा इसलिए कि बड़ी-बड़ी इमारतों में रहने के लिए तथा आलिशान वाहनों पर घूमने के लिए हम जिंदा कैसे रह पायेंगे यदि शुद्ध हवा और शुद्ध पानी नहीं मिलेगा। लेकिन हमको सोचना है कि पर्यावरण प्रदूषण की ऐसी विकराल स्थिति का जिम्मेदार कौन है? पर्यावरण तो हरगीज नहीं, निश्चित रूप से हम यानि मनुष्य हैं। हम क्यों नहीं सोचते की इसके मूल में जनसंख्या विस्फोट है। आजादी के समय हमारे देश की आबादी 35 करोड़ थी जो 2018 पूरा होते-होते बढ़कर 135 करोड़ हो गई। इतनी बड़ी आबादी की सहुलियत के लिए जितना भी किया जा रहा है, कम ही पड़ता जा रहा है। जबकि वर्तमान में खनीजों के खनन की दर को बीसगुणी बढ़ा दी गई है। इतनी बड़ी आबादी के लिए जब जीवन की मूलभूत आवश्यकता यानि रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था करना नामुमकिन हो रहा है तो इनके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जरूरतों की पूर्ति कैसे की जा सकती है। हर हालत में न केवल बेतहाशा बढ़ती आबादी पर रोक लगानी पड़ेगी बल्कि वर्तमान आबादी में कमी भी लानी होगी। धरती कोई रबर थोड़े ही है जिसे खींचकर बड़ा कर ले। इसी में से जंगल काटकर तथा खेती की जमीन पर कब्जा कर घर, सड़क, पुल, अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा, हवाई अड्डा आदि ढ़ेर सारे कंस्ट्रक्शन के कार्य करने पड़ रहे हैं। लगातार घटती धरती की रकवा के चलते भोजन के लिए अनाज और पीने के लिए पानी उपलब्ध कराना भी मुश्किल होता जा रहा है।

★ **खनन को पर्यावरण के लिए खतरनाक क्यों माना गया है? :-** खनन से भारी मात्रा में उत्पन्न विभिन्न आकार के धूलकण सबसे बड़ा वायु प्रदूषक कारक है। दरअसल खदानों में खनन

हेतु जो तकनीके अपनायी जाती है, उनसे धूलकण बहुत अधिक मात्रा में उत्पन्न हो जाते हैं। कई बार खनन के दौरान खादानों में इतनी अधिक मात्रा में धूल उत्पन्न हो जाती है कि मजदूरों के लिए श्वांस लेना भी दुभर हो जाता है। यही कारण है कि खदानों में काम करने वाले खनिकों को प्राय: फेफड़े की बीमारी हो जाती है, जो सामान्यत: वातावरण में धूलकणों की सांद्रता, उनके आकार और उनके प्रभाव वाले वातावरण में रहने की अवधि पर निर्भर करता है। यदि वायु में व्याप्त धूलकणों की सांद्रता अधिक हो और उनका आकार बहुत छोटा हो तथा उनके प्रभाव वाले वातावरण में रहने की अवधि लंबी हो तो खदानों में काम करने वाले खनिक कुछ ही वर्षो में फेफड़ों की बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं, जो ढ़ेर सारी बीमारियों की जननी है।

✯ **वृहत क्षेत्र है खनन क्षेत्र :-** हमारे देश में खदानों की संख्या बहुत ज्यादा है। लेकिन सबसे अधिक कोयले की खदाने है। लौह अयस्क, अल्म्यूनिम अयस्क, ताम्र अयस्क, मैंगनीज अयस्क, अबरख आदि की खदानें अपेक्षाकृत कम है। कोयला उत्पादन की दृष्टि से पूरी दुनियां में अमेरिका, रूस और चीन के बाद चौथा स्थान भारत का है। कोयले के भंडार और उत्पादन की दृष्टि से झारखण्ड देश का सर्वोत्तम राज्य है। 79714 वर्ग किलोमीटर में फैले इस राज्य में चप्पे-चप्पे पर जमीन के नीचे कोयले का भंडार है। इतने बड़े क्षेत्र में कोयले का भंडार पूरी दुनियां में शायद ही कही देखने-सुनने को मिलेगा। इस राज्य में देश के कुल कोयले के भंडार का 35 प्रतिशत कोयला मौजूद है। लेकिन बहुत ही दुख की बात है कि जितनी बेरहमी से और जितनी भारी मात्रा में इस राज्य में कोयले की बर्बादी हर रोज की जाती है, इसे शब्दों म व्यक्त करना मुश्किल है। वास्तव में हम भारतवासियों के लिए बहुत ही शर्म की बात है कि कोयले के भंडार की दृष्टि से विश्व में चौथा स्थान होने के बावजूद हम कोयले का आयात करते हैं, जो दिन-व-दिन बढ़ता ही जा रहा है। कोयले का आयात सालाना 5 फिसदी की दर से बढता जा रहा है। चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जनवरी की अवधि में देश का कोयला आयात 5.1 फिसदी बढ़कर 18.99 करोड़ हो गया। जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 18.06 करोड़ टन था।

भारत के खानों में कुल मिलाकर दस लाख से अधिक आदमी काम करते हैं, जिनमें से आधे से अधिक लोग कोयला खादानों में कार्यरत्त हैं। कोयला खनन के विभिन्न क्रियाओं के दौरान जो धूलकण उत्पन्न होती है, उनमें विभिन्न आकार के कण होते हैं। बड़े आकार के कण भारी होने के कारण शीघ्र बैठ जाते हैं लेकिन महिन कण हल्का होने के कारण हवा में तैरते रहते हैं। वस्तुत: हवा में व्याप्त इन्ही महीन धुलकणों के कारण कोयला खादानों में काम करने वाले मजदूर को आंथ्राकोसिस नामक श्वांस की बीमारी से ग्रसित होने की संभावना बढ़ जाती है। झारखण्ड के झरिया कोयला क्षेत्र में की गई जांच और सर्वेक्षण में पाया गया है कि वहां कोयला खादानों में काम करने वाले लगभग 20 फिसदी लोग आंथ्राकोसिस से ग्रसित हैं।

कोयला खादानों में होने वाले खनन कार्यकलापों के चलते बहुत अधिक मात्रा में धूल उड़ने के कारण कोयला खादानों के आसपास के गांवों के पेड़-पौधों और फसलों को विशेष हानि पहुंचती है। बात यह है कि मिट्टी पर कोयले के धूलकणों को गिरने के कारण मिट्टी का उपजाऊपन खत्म हो जाता है, जो किसानों के लिए बहुत ही चिंता का विषय है। इतना ही नहीं खनन के पहले की गई जंगल की सफाई तथा खनन के दौरान की विभिन्न प्रक्रियाओं के चलते भूमि के क्षरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, जिससे कुछ ही वर्षों में जमीन का उपजाऊपन समाप्त हो जाता है। ऐसे में भूमि (मिट्टी) क्षरण के शेष बची जमीन की नई खुली ऊपरी सतह की एक इंच मोटी परत को उपजाऊ बनाने में प्रकृति को 300 से 800 वर्ष लग जाते हैं।

अनुमान है कि 1.20 करोड़ टन कोयला प्रतिवर्ष उत्पादन वाली खान से कोयला निकालने के बाद उसकी सफाई में 900 करोड़ गैलेन और इतना ही कोयला पाइप द्वारा एक स्थान से दूसरे

स्थान तक पहुंचाने में सालाना 2.8 अरब गैलेन पानी दुषित हो जाता है। यह गंदा पानी नदी अथवा अन्य जलस्त्रोतों तक पहुंचकर उन्हें भी प्रदूषित कर देता है और बिना उपचार के खुले स्थान जैसे-मैदान, खेत आदि में बहा दिये जाने से मिट्टी भी प्रदूषित हो जाती है।

खनन के दौरान किये गये विस्फोटों तथा मशिनों द्वारा की गई कटाई और ड्रिलिंग से शोर प्रदूषण होता है, मसलन कोयला खदानों को ही ले लिजिए। खदानों में कोयला तोड़ने के लिए कोयले की ऊपर पथरीली सतह को तोड़ने के लिए डायनामाइट से धमाका कराया जाता हैौ प्रति धमाके में नियमत: जितनी विस्फोटक सामग्री प्रयोग की जानी चाहिए, उतनी नहीं की जाती और उससे बहुत ज्यादा की जाती है। ऐसा खदान अधिकारी अपना व्यक्तिगत् लाभ के लिए करवाते हैं, इससे कोयला अधिक निकलता है और उसी अनुपात में उन्हें बोनस भी अधिक मिलता है। साथ ही उनकी पदोन्नति जल्दी हो जाती है, लेकिन इससे मजदूरों और ग्रामवासियों को नुकसान बहुत ज्यादा होता है। अधिक मात्रा में विस्फोटक पदार्थ के इस्तेमाल से आसपास के गांवों के मकान में दरारे पड़ जाती है और पक्के मकान से कंक्रीट झड़कर अलग होकर गिर जाते हैं। इससे उपजाऊ जमीन का नीचे धंस जाना साधारण सी बात है। इस कारण कही ट्यूबवेल काम नहीं करते तो कही कुंए नीचे धंस जाते हैं। खनन क्षेत्र के आसपास में लगे उससे जुड़े उद्योगों के मशिनों की खड़खराहट और खनीज ढुलाई हेतु प्रयुक्त वाहनों की गुर्राहट भी शोर प्रदूषण के कारक हैं। इस तरह शोर प्रदूषण से लोगों का धीरे-धीरे बहरा होना, दिल धड़कना, श्वांसों में तेजी आना, चिड़चिड़ाहट होना, मानसिक तनाव से ग्रस्त होना, यादाश्त में कमी आना आदि स्वभाविक बात हो गई है। खदानों में खनन कार्य के चलते कोयला खदान क्षेत्रों की हवा में व्याप्त मिथेन, कॉबन मोनोऑक्साइट, कॉर्बन डाईऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड और नाईट्रोजन ऑक्साइड गैसें पर्यावरण और परिवेश को संकटजनक स्थिति तक ले जाती है, जिससे खनिजों को बहुत नुकसान पहुंचता है। इतना ही नहीं, हमारे देश में लगभग 350 लौह अयस्क की खदाने हैं, जिनमें करीब 85 हजार लोग काम करते हैं। लौह अयस्क की खदानों में कार्यरत्त खनिकों को साइट्रोसिस नामक श्वांस की बीमारी होने की संभावना अधिक रहती है। दरअसल लौह अयस्क के खनन की वभिन्न क्रियाओं के दौरान उत्पन्न धूलि हवा में व्याप्त हो जाती है, जो श्वांस द्वारा खनिकों के फेफड़ों में पहुंचकर जमा होती रहती है। इस तरह 6 से 10 वर्षों तक लौह अयस्क की धूलियुक्त वातावरण में कार्य करते रहने से अधिकत्तर खनिज साइडरोसिस रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। यह भी श्वांस की ही बीमारी है लेकिन आंथ्राकोसिस की तरह खतरनाक नहीं। किन्तु जब वातावरण में लौह अयस्क की धूलकणों के साथ सिलिका के धूलकण भी मिश्रित हो जाते हैं, जैसा कि लौह अयस्क की खानों में क्वार्ट्ज की उपस्थिति के कारण होता हैतो खनिकों को साइडरीसिलिकोसिस हो जाता है। जो साइडरोसिस से अपेक्षाकृत अधिक खतरनाक बीमारी है। एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि लौह अयस्कों की खानों में काम करने वाले खनिकों में से 24% खनिक इस रोग से ग्रसित हैं।

हमारे देश में लगभग 75 हजार लोग मैगनीज अयस्क की खदानों में काम करते हैं। इन

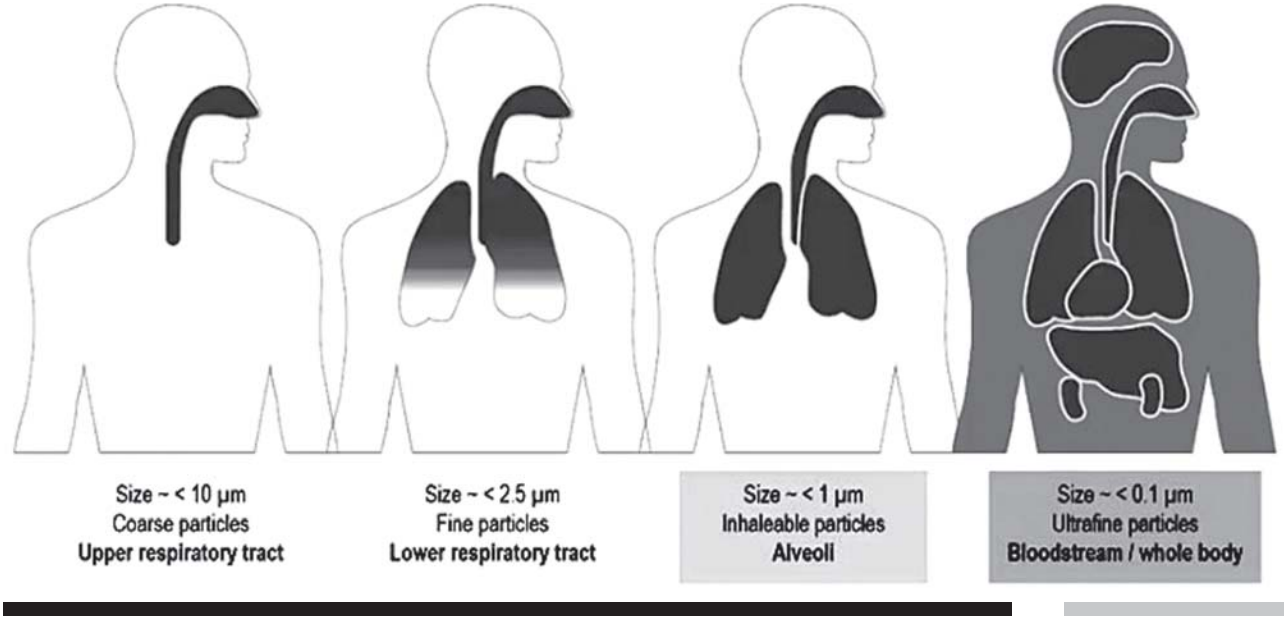

खदानों में काम करने वाले खनिकों का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। बात यह है कि मैंगनीज अयस्क खनन धूल का मनुष्य के स्वास्थ पर प्रभाव अन्य खनिज धूलकणों से भिन्न होता है। ऐसा इसलिए की मैगजीन अयस्क के धूल फेफड़ों में जाकर इकट्ठी नहीं हो पाती बल्कि खून में घूलकर शरीर की मस्तिष्क तंत्रिका को विकृत कर देती है। यही कारण है कि मैगजीन अयस्क के खान कर्मियों का माानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

★ खनन द्वारा उत्पन्न प्रदूषण को नियंत्रित करने के कुछ कारगर उपाय :-

☞ खनन प्रारंभ करने के पहले उससे पड़ने वाले समाजिक और आर्थिक प्रभाव का आंकलन जरूरी है, क्योंकि विकास का मतलब जीवन स्तर का ऊपर उठाना है।

☞ सरकार किसी खदान की मंजूरी तभी दे, जब भूमि के संवर्द्धन की योजना साथ-साथ पेश की गई हो।

☞ खान के खनिजों को प्राप्त करने में प्रदूषण नियंत्रण कानून का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। खदानों में विस्फोटन की परिकल्पना इस तरह से किया जाना चाहिए कि कम से कम धूल पैदा हो।

☞ खनन में प्रयुक्त किये जाने वाली मशिनों, जैसे-ड्रील करने वाली मशिन, कटाई करने वाली मशिन और मिट्टी हटाने वाली मशिन में धूल एकत्र करने वाले संयंत्र अवश्य लगे होने चाहिए।

☞ खदान क्षेत्रों में खनिज ढ़ोने वाले वाहनों के चलते धूलभरी सड़कों पर हर रोज दिनभर कई बार नियमित रूप से पानी का छिड़काव किया जाना चाहिए, ताकि धूल दबी रहे और वातावरण में इसकी सांद्रता यथासंभव कम से कम हो। इसके लिए पर्याप्त संख्या में पानी के टैंकरों का इस्तेमाल किया जाना जरूरी है।

☞ खदान क्षेत्रों में सड़कों को यथा संभव पक्का किया जाना चाहिए, जिससे की वाहनों द्वारा खनिज की ढुलाई के समय कम से कम धूल उड़े।

☞ जल प्रदूषण रोकने के लिए खदानों से निकलने पानी को उपचार द्वारा विशोधित करके नदी में बहाना चाहिए।

☞ शोर प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए ऊँची आवाज पैदा करने वाली मशिनों में आवाज कम करने के साइलेंसर अवश्य लगे होने चाहिए। इन मशिनों के रख-रखाव पर भी पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। इन मशिनों की समय-समय पर सफाई करके तथा तेल और ग्रीस देकर उनकी अतिरिक्त आवाज (अप्रिय खट-खटाहट) को कम किया जा सकता है। यदि किसी मशिन का कोई पूर्जा घीस गया हो तो उसे तत्काल बदल देना चाहिए। क्योंकि घिसे पूर्जे वाली मशिने अधिक आवाज करती है। ऐसा करने से ऊर्जा का अपव्यय भी कम हो जाता है।

☞ खुदाई के दौरान खदान से निकली फालतू सामग्री को यू ही फेक देने से उपयोगी जमीन की कामचलाउ मिट्टी दब जाती है। इसलिए कोशिश यह की जानी चाहिए की खदान से निकले व्यर्थ पदार्थों के निपटारन के पहले ही उपजाऊ मिट्टी को यथोचित स्थान पर स्थानांतरित कर यू ही दब जाने से बचा लिया जाये।

☞ खनन के पश्चात् खनित जमीन का पुर्नउद्धार करके वृक्षारोपण कर देना चाहिए। इसके लिए खानों से जब खनिज निकल जाये तो उन्हें वहां की मिट्टी से भर देना चाहिए ताकि मानव निर्मित टीले कम से कम हो। फिर गड्ढ़ों को भरकर समतल बनाये गये जमीन पर वृक्षारोपण कर देना चाहिए, जिससे की खदान क्षेत्रों में भू-क्षरण को रोका जा सके और जमीन तथा उपजाऊ मिट्टी को नष्ट होने से बचाया जा सके। साथ ही काम के पहले जंगलों की सफाई के दौरान काटे गये वृक्षों की भरपायी की जा सके। खनिज क्षेत्रों में मिट्टी स्वभावत: क्षारीय होती है, इसलिए वृक्षारोपण के समय इस बात का ध्यान देना जरूरी है।

यह खुशी की बात है कि अब विभिन्न खनन संस्थान एवं कंपनियां पर्यावरण संरक्षण हेतु उपयुक्त सुझावों को अपनाने लगी हैं। मसलन सीसीएल (सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड) द्वारा खदान क्षेत्रों में वृक्षारोपण का कार्य बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है। इस कंपनी द्वारा सन् 1989-90 और सन् 1991-92 के दौरान विभिन्न किस्म के 47 लाख पौधें लगाये गये। इस कंपनी द्वारा खनन और परिवहन के दौरान थोड़े-थोड़े अंतराल पर नियमित रूप से पानी का छिड़काव किया जाता है। इस कंपनी द्वारा प्रयुक्त कटाई करने वाली मशिनों, ड्रिलिंग करने वाली मशिनों और मिट्टी हटाने वाली मशिनों में धूल एकत्र करने वाले यंत्र लगाये गये हैं। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

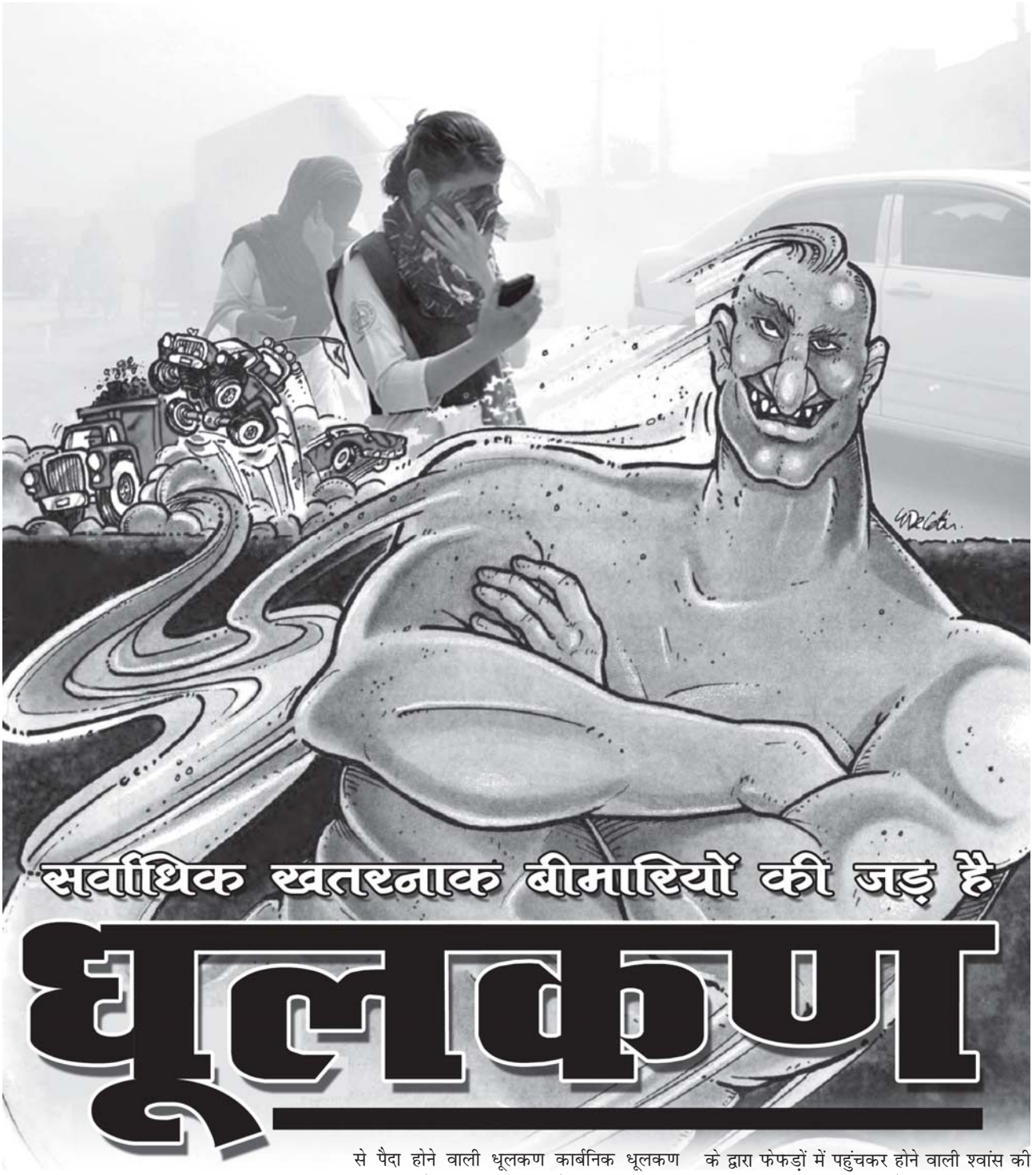

सर्वाधिक खतरनाक बीमारियों की जड़ है

धूलकण

● ललन कुमार प्रसाद

औद्योगिक कार्य-कलापों के दौरान पैदा होने वाली धूलकण दो प्रकार की होती है-कार्बनिक धूल और अकार्बनिक धूल। सजिव पदार्थों जैसे रूई, ऊन, रेशम, गन्ना, तम्बाकू, पटुआ आदि से पैदा होने वाली धूलकण कार्बनिक धूलकण कहलाती है। निर्जीव पदार्थों जैसे-मिट्टी, बालू, खनिज, चट्टान आदि से पैदा होने वाली धूलकण अकार्बनिक धूलकण कहलाती है। कार्यस्थल के वातावरण में मौजूद समान्य धूलकणों के साथ काम करने के दौरान पैदा होने वाली ये कार्बनिक और अकार्बनिक धूलकण समान्य वातावरण में पहले से मौजूद धूलकणों के साथ मिलकर श्वांस के द्वारा फेफड़ों में पहुंचकर होने वाली श्वांस की बीमारियों को जन्म देती है। ख्याल रहे, इन धूलकणों से उत्पन्न होने वाली बीमारियां दमा या टी.बी. नहीं है। ऐसा इसलिए की दमा और टी.बी. तो लाईलाज बीमारी नहीं है, जबकि धूलकणों से होने वाली बीमारी न्यूमोकोसिस लाइलाज बीमारी है। दरअसल दमा में श्वांस कभी-कभी फूलती है और बहुत देर तक नहीं फूलती है जबकि

न्यूमोकोसिस में श्वांस का फूलना हमेंशा जारी रहता है, जिसके चलते श्वांस लेने में काफी दिक्कत होती है, जो लगातार बढ़ती ही चली जाती है और अंततः कुछ वर्षों में पीड़ित व्यक्ति की मौत हो जाती है।

औद्योगिक ऑपरेशनों के दौरान अकार्बनिक धूलकणों के चलते होने वाली प्रमुख बीमारियां हैं-एस्बेस्टोसिस, सिलिकोसिस, आंथ्रकोसिस, साइडेरोसिस इत्यादि। कार्बनिक धूलकणों से होने वाली प्रमुख बीमारियां हैं-बैगासोसिस, बाइसिनोसिस, सबेराइयोसिस, इत्यादि। अकार्बनिक धूलकणों से पैदा होने वाली बीमारियां, कॉर्बनिक धूलकणों से पैदा होने वाली बीमारियों की तुलना में ज्यादा खतरनाक होती है, क्यांकि ये बीमारियां 100 फिसदी लाइलाज होती है और इससे पीड़ित व्यक्ति की मौत कुछ ही वर्ष में हो जाती है।

★ मौत का पर्याय है ऐस्बेस्टोसिस :- बहुत अधिक उपयोगी माने जाने वाला एस्बेस्टॉस लाईलाज जानलेवा बीमारी का कारण बन चुका है। दुनियां भर में हर साल एस्बेस्टॉस से होने वाली बीमारी एस्बेस्टोसिस से एक से डेढ़ लाख लोगों की मौत हो जाती है। पूरी दुनियां में इस समय 50 लाख से ज्यादा लोग इस लाईलाज बीमारी से पीड़ित है। यही बीमारी आगे चलकर फेफड़े के सबसे खतरनाक कैंसर मेसोथेलियामो में तब्दील हो जाता है। जब एस्बेस्टोसिस लाईलाज बीमारी है तो स्पष्ट है कि मेसोथेलियामो भी निश्चित रूप से लाईलाज बीमारी है। यही कारण है कि मेसोथेलियामो से पीड़ित मजदूर की मौत निश्चित है। फेफड़ों के कैंसर के अलावा किडनी और आंत में भी ऐस्टबेस्टॉस के कणों से कैंसर विकसित होता है। इसलिए यदि ऐस्टबेस्टोसिस को मौत का पर्याय कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

ऐस्बेस्टोसिस से पीड़ित व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा दस-बारह साल ही जीवित रह सकता है। लेकिन यही ऐस्बेस्टोसिस आगे चलकर जब मेसोथेलियामो में तब्दील हो जाता है तो पीड़ित व्यक्ति छः माह से दो साल तक ही जीवित रह सकता है। ऐस्बेस्टोसिस की सबसे बड़ी खराबी है कि एक बार इस बीमारी से ग्रसित हो जाने पर यह बीमारी बढ़ती ही चली जाती है, चाहे ऐस्बेस्टोसिस से पीड़ित व्यक्ति ऐस्बेस्टॉस के कारखाने में काम करना बंद क्यों न कर दें। अर्थात् एक बार इस बीमारी से ग्रसित होने के बाद यदि व्यक्ति ऐस्बेस्टॉस के कारखाने में काम करना बंद कर दे तो भी यह बीमारी बढ़ती ही चली जाती है। ऐस्बेस्टोसिस और मेसीथेलियामो इन दोनो बीमारियों का आज के मेडिकल साइंस में कोई इलाज नहीं है। यही कारण है की विकसित देशों की बीमा कंपनियों ने ऐस्बेस्टॉस के कारखाने और खाद्यान्नों में काम करने वाले कामगारों का बीमा करना बंद कर दिया है।

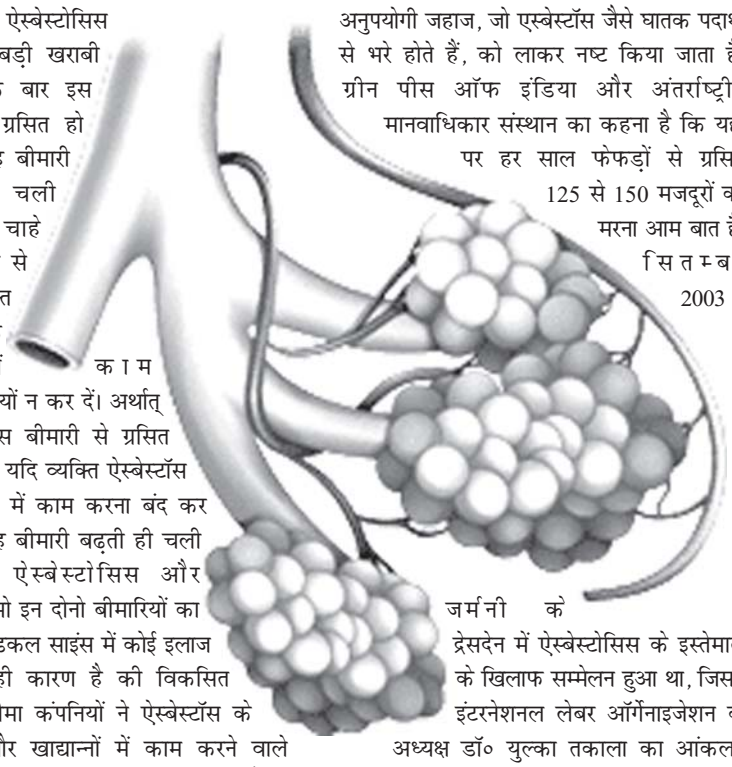

★ एस्बेस्टॉस संबंधी भारतीय कानून :- पूरी दुनियां में समुद्री बड़े-बड़े जहाजों से एस्बेस्टॉस निकलते हैं, शीट के शक्ल में पाइपों, ब्वायलर तथा अन्य मशीनों के पूर्जों के रूप में। ग्रीन पीस ऑफ इंडिया और बैन एस्बेसटॉस फोरम जैसी पर्यावरण संरक्षण संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का कहना है कि भारत अन्य उपयोगी हो चुके समुद्री जहाजों का कूड़ादान बनता जा रहा है, क्योंकि भारत में ऐसे खतरनाक कचड़ें की आमद रोकने के लिए कोई कारगर कानून नहीं हैं। यही कारण है कि गुजरात के भाव नगर में अलंग बंदरगाह स्थित ''अलंग पोत ध्वंस कारखाना'' में पूरे एशिया के पुराने अनुपयोगी जहाजों को नष्ट करने का सबसे बड़ा कारखाना है। यही दुनियां भर के अनुपयोगी जहाज, जो एस्बेस्टॉस जैसे घातक पदार्थों से भरे होते हैं, को लाकर नष्ट किया जाता है। ग्रीन पीस ऑफ इंडिया और अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थान का कहना है कि यहां पर हर साल फेफड़ों से ग्रसित 125 से 150 मजदूरों को मरना आम बात है। सितम्बर 2003 में जर्मनी के ड्रेसदेन में ऐस्बेस्टोसिस के इस्तेमाल के खिलाफ सम्मेलन हुआ था, जिसमें इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष डॉ० युल्का तकाला का आंकलन था कि दुनियां भर में हर साल एस्बेस्टॉस जनित रोगों से एक लाख मजदूर मर जाते हैं। 28 मई 2012 तक दुनियां के 55 देश एस्बेस्टॉस के इस्तेमाल पर आंशिक रूप से प्रतिबंध लगा चुके हैं। जिनमें से 12 देशों में एस्बेस्टॉस के उत्पादन और आयात-निर्यात पर पूरी तरह पाबंदी है।

भारत में ऐस्बेस्टॉस का इस्तेमाल फैक्ट्री एक्ट 1948 के तहत संचालित होता है। इस कानून में ऐस्बेस्टॉसिस को श्वांस की बीमारी के तौरपर शामिल किया गया है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम में ऐस्बेस्टॉस की धूल को सेहद के लिए घातक माना गया है। फिर भी अमेरिकी और यूरोपीय देशों के मुकाबले भारत का ऐस्बेस्टॉस

कानून काफी लचिला है। सफेद ऐस्बेस्टॉस के आयात और उसके इस्तेमाल को रोकने के लिए 2009 में कांग्रेस सांसद विजय दर्डा ने एक प्रस्ताव राज्यसभा में रखा था, तभी से यह प्रस्ताव विचाराधीन है। कहा जाता है कि ठीक इसके उलट दक्षिण भारत के दबंग सांसद डॉ० गद्दम विवेकानन्द के ऐस्बेस्टॉस के आठ कारखाने हैं। देश भर में कुल उत्पादन का 25 फिसदी उत्पादन इसी कारखाने से निकलते हैं। डॉ० गद्दम विवेकानन्द 2009 से खान मंत्रालय में कोयला और स्टील कमिटि के सदस्य हैं। ऐसे में भला किसकी हिम्मत है कि जो ऐस्बेस्टॉस के उत्पादन और इस्तेमाल पर प्रतिबंध का प्रस्ताव संसद में पास करा दे।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी एस.आर. कामथ के मुताबिक जब ऐस्बेस्टॉसिस से ग्रसित मरीज की जांच की सुविधा देश में कही भी उपलब्ध नहीं है तो इसे ग्रसित मरीजों को मुआवजा कैसे दिलाया जा सकता है। हेल्थ इंजीनियरर्स के अध्यक्ष के मुताबिक देश के किसी भी ऐस्बेस्टॉस के कारखाने में मजदूरों के सेहत का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा जाता है। इतना ही नहीं ज्यादातर कंपनियां मजदूरों को दिहारी पर रखती है। ऐसे में ऐस्बेस्टॉसिस से ग्रसित मजदूरों को कानूनन दी जाने वाली न्यूनत्तम राशि एक लाख रूपये को बढ़ाने से भी क्या हो जायेगा?

★ भारत में ऐस्बेस्टॉस का कारोबार :- हमारे देश में ऐस्बेस्टॉस से ऐस्बेस्टॉस सिमेंट शीट (मकान की छत को छाने वाला करकट), ऐस्बेस्टॉस पेपर और बोर्ड पैकिंग गास्केट, ऐस्बेस्टॉस फिलर्स, मोटरसाईकिल, मोटर कार, ट्रक आदि वाहनों तथा जहाज की ब्रेक लाइनिंग, बिजली के केबल के सेपरेटरर्स, फायर रेसिसटेंट लकड़ी और कपड़ा, फायर रेसिसटेंट शूज आदि बनाने हेतु ऐस्बेस्टॉस का इस्तेमाल किया जाता है।

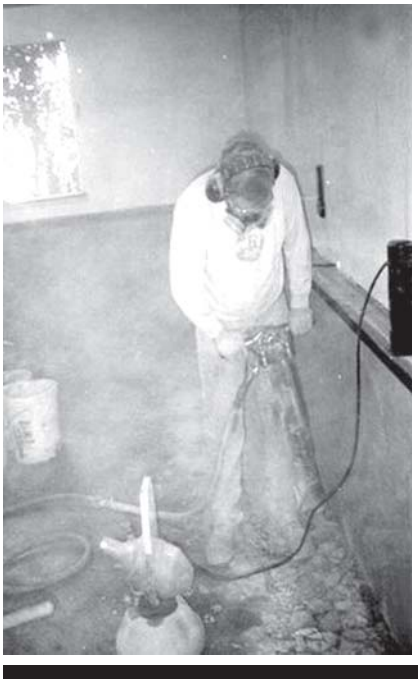

हमारे देश में सर्वाधिक ऐस्बेस्टॉस उत्पादक राज्य राजस्थान है। राजस्थान के अजमेर, डुंगरपुर और उदयपुर जिलों में ऐस्बेस्टॉस पाया जाता है। भारत के अन्य ऐस्बेस्टॉस उत्पादक राज्य हैं-झारखण्ड, कर्नाटक, तमिलनाडू, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, मणिपुर और नागालैंड। झारखण्ड के सिंहभूम, कर्नाटक के चिकमंगलूर, मैसूर और हसन, तमिलनाडू के सेलम, हिमाचल प्रदेश के शिमला और उत्तराखण्ड के गढ़वाल जिले में ऐस्बेस्टॉस पाया जाता है। फिर भी भारत में ऐस्बेस्टॉस का उत्पादन कुल देशी खपत का एक तिहाई होता है। इसलिए हमारे देश को कुल देशी खपत के दो तिहाई ऐस्बेस्टॉस का आयात रूस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका से करना पड़ता है। विश्व में सबसे अधिक ऐस्बेस्टॉस का उत्पादन कनाडा में होता है, विश्व का कुल उत्पादन का 75 फिसदी। लेकिन, इससे बनने वाली वस्तुओं का सबसे अधिक निर्माण अमेरिका में होता है, जबकि वहां विश्व के कुल उत्पादन का 5 फिसदी ही उत्पादित होता है।

भारत में ऐस्बेस्टॉस से जुड़े 13 बड़े कारखाने और 673 छोटी और औद्योगिक इकाईयां हैं। पूरी दुनियां में चीन के बाद भारत दूसरे नंबर पर है, जहां ऐस्बेस्टॉस का सबसे अधिक इस्तेमाल होता है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 8 हजार मजदूर ऐस्बेस्टॉस के खदानों और कारखानों में काम करते हैं। जबकि संगठित और असंगठित दोनो क्षेत्रों को मिलाकर एक लाख से अधिक मजदूर ऐस्बेस्टॉस उद्योग में लगे हैं।

★ ऐस्बेस्टॉसिस के लक्षण :- ऐस्बेस्टॉस का सबसे खतरनाक असर फेफड़ों पर पड़ता है। ऐस्बेस्टॉसिस से ग्रसित मजदूर को श्वांस लेने में बेहद कठिनाई होती है। ऐसा महसूस होता है कि जैसे की भीतर कुछ अटक गया है, जो श्वांस को बाहर आने से रोक रहा है। दरअसल, ऐस्बेस्टॉस के रेसे वजन में बहुत हल्के होते हैं। इसलिए इसके सूक्ष्म रेसे जब कार्य स्थल के वातावरण की हवा में उड़ते हुए फैलते हैं तो न केवल कई घंटों तक, बल्कि दो-तीन दिनों तक हवा में लटके तैरते रहते हैं। ये सूक्ष्म रेसे न तो किसी रसायन से नष्ट होते हैं, न तो ताप से, न तो पानी में घूलते हैं, न इनका वाष्पीकरण होता है और न किड़े भी इसे नष्ट कर पाते हैं। इसलिए धूल के रूप में हवा में उड़ते ऐस्बेस्टॉस के ये सूक्ष्म रेसे श्वांस के साथ शरीर के अंदर फेफड़ों में पहुंचकर उनकी कोशिकाओं को क्षतिग्रस्त कर देते हैं। फलस्वरूप फेफड़े सूज जाते हैं और उनका रंग कुछ काला पड़ जाता है। फेफड़ों में जलन महसूस होती है। नाखून के पास अंगुलियों के पोर के किनारे सूज जाते हैं, जिसे कुछ हदतक एक्स-रे या अल्टासाउंड से देखा जा सकता है। सीने में दर्द रहने लगता है। शरीर में खून की कमी हो जाती है।

★ ऐस्बेस्टॉसिस का इलाज :- चूकि ऐस्बेस्टॉसिस लाइलाज बीमारी है। इसलिए इस बीमारी की रोकथाम के उपाय ही इसकी सबसे अच्छी इलाज है। कार्यकाल के दौरान कार्यस्थल पर समय-समय पर फॉग का छिड़काव करके हवा में धूल के रूप में उड़ते ऐस्बेस्टॉस के सूक्ष्म रेसों को फर्श पर बैठा दिया जाना चाहिए। कार्यस्थल पर उपयुक्त डस्ट रेसपाइरेटर पहनकर ही मजदूरों को काम करना चाहिए और उन्हें पूरे कार्यकाल के दौरान डस्ट रेसपाइरेटर को पहने ही रहना चाहिए। अल्ट्रासाउंड के द्वारा ऐस्बेस्टॉसिस को कुछ हद तक पहचाना जा सकता है। इसलिए समय-समय पर मजदूरों की सेहत की जांच डॉक्टर द्वारा कराया जाता रहना चाहिए। कफ निकालने वाली दवा का सेवन भी इस बीमारी से बचने में कुछ हद तक मदद करती है। इसलिए ऐस्बेस्टॉस के कारखाने में काम करने वाले मजदूरों को रोज चाय की चम्मच से दो चम्मच उम्दा किस्म के कफ शिरफ, जैसे-ग्लाइकोडीन या फेंसाड़ील का सेवन करना चाहिए। ये ऐलोपेथिक दवाओं हैं। यदि इसके स्थान पर उम्दा आयुर्वेदिक कफ शिरफ जैसे-पतांजली के स्वसारी रस का सेवन किया जाना सबसे अच्छा होता है। ऐसा करने से कुछ हद तक शरीर के अंदर पहुंचे ऐस्बेस्टॉस के धूलकणों को शरीर से बाहर निकालने में मदद मिलती है। ऐस्बेस्टॉस के कारखाने में काम करने वाले मजदूरों को रोजाना थोड़ी मात्रा में गुड़ का सेवन करना चाहिए। ऐसा करने पर शरीर के अंदर प्रवेश किए धूलकणों को पखाने के रास्ते शरीर से बाहर निकालने में कुछ हद तक मदद मिलती है। ऐसा पाया गया है कि प्राणायाम करना ऐस्बेस्टॉसिस के मरीज के लिए लाभकारी है। इसलिए ऐस्बेस्टॉसिस से पीड़ित मजदूर को रोज 15-15 मिनट भस्त्रीका, कपालभाती और अनुलोम-विलोम नामक प्राणायाम करना चाहिए। फिर इन प्राणायामों को करने वाले मजदूरों को ऐस्बेस्टॉसिस से ग्रसित होने की संभावना नहीं रहती है। ऐस्बेस्टॉस के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों का निवास स्थान कार्य स्थल से कम से कम 300 मीटर दूर होना चाहिए।

यदि ऐस्बेस्टॉस के कारखानों में काम

करने वाले मजदूर उपर्युक्त उपायों को अपनाये और ऐसा करने में सेफ्टी विभाग के अधिकारी मदद करे तो इन कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को ऐस्बेस्टॉसिस से ग्रसित होने से बचाया जा सकता है।

★ जानलेवा बीमारी है सिलिकोसिस :- पत्थर पीसने वाली और पत्थर तोड़ने वाली फैक्ट्रियां दिन-रात चलती रहती है। ऐसा इसलिए कि दुनियां भर में साल के 365 दिन लगभग 200 करोड़ लोग कंस्ट्रक्शन से जुड़े कार्यों में लगे रहते हैं। दरअसल, दुनियां भर में हर रोज लाखों की संख्या में विभिन्न प्रकार के भवन, पुल, फ्लाईओवर, सड़क आदि का निर्माण होता रहता है। इतने बड़े पैमाने पर रोज-रोज अनेक तरह के कार्यों के लिए सिमेंट, बालू, स्टोन चिप्स, ग्रेनाईट और संगमरमर के स्लैब, आदि जरूरी सामानों की आपूर्ति हेतु पत्थर और रेत बालू के खनन, पत्थर तोड़ने के क्रशर, कांच के उद्योग, सिरामिक के उद्योग, सिमेंट के उद्योग, पत्थर काटने और पत्थर रगड़ने के उद्योगों में काम करने वाले लोगों के कार्य स्थल के आसपास के वातावरण में सिलिका की धूल उड़ती रहती है, जो श्वांस लेने के दरम्यान आसानी से फेफड़ों में पहुंच जाती है। नतीजा इन उद्योगों में काम करने वाले मजदूर सिलिकोसिस के शिकार हो जाते हैं। इसलिए देश के कई हिस्सों, जैसे-मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, झारखण्ड, दिल्ली आदि प्रदेशों में भारी संख्या में मजदूर सिलिकोसिस से पीड़ित है। पत्थरों की खादानों और कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को यह बीमारी धीरे-धीरे मौत की तरफ ले जा रही है। यदि हाड़तोड़ मेहनत के बाद मजदूरी नहीं मौत मिले तो इसे जिंदगी का अभिशाप ही कहा जा सकता है। इस बीमारी से प्रभावित लोगों एवं इससे प्रभावित होने के जोखिम की स्थिति में रह रहे लोगों की संख्या लाखों में है, लेकिन दुख की बात है कि इस बीमारी से बचाव को लेकर न कारखाना के मालिकों को चिंता है और सरकार ही कोई असरदार कदम उठा रही है।

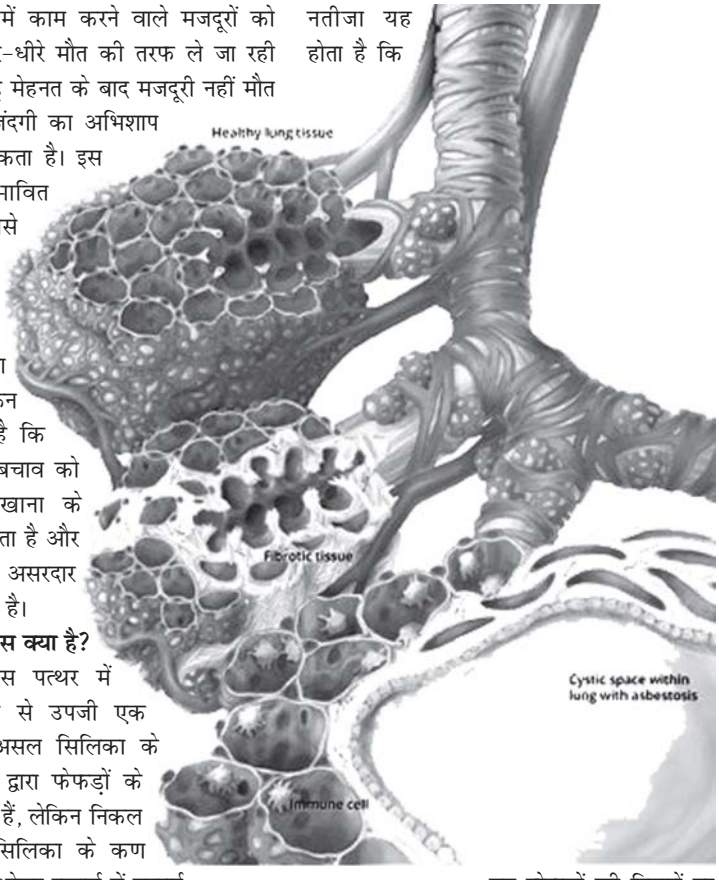

★ सिलिकोसिस क्या है? :- सिलिकोसिस पत्थर में मौजूद सिलिका से उपजी एक बीमारी है। दरअसल सिलिका के कण श्वांस के द्वारा फेफड़ों के अंदर पहुंच जाते हैं, लेकिन निकल नहीं पाते हैं। सिलिका के कण फेफड़ों के एविओलर स्कार्स में गहराई में जाकर बैठ जाते हैं, जो खांसी या बलगम के जरीय भी शरीर के बाहर नहीं आ पाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि वह फेफड़ों की दिवारों पर धीरे-धीरे जमकर एक मोटी परत बना लेते हैं, इससे फेफड़ों का ठीक से फैलने और सिकुड़ने की प्रक्रिया पर बहुत ही प्रतिकूल असर पड़ता है। इससे श्वांस लेने में काफी तकलीफ होती है। सिलिका के कण श्वांस लेने और श्वांस छोड़ने की प्रक्रिया को धीरे-धीरे कमजोर करते चले जाते हैं। फिर सिलिका के कण फेफड़ों के उत्तकों को इस कदर क्षतिग्रस्त कर देते हैं कि हवा से ऑक्सिजन खीचने की क्षमता कमजोर हो जाती है और आखिरकार आदमी की मौत हो जाती है।

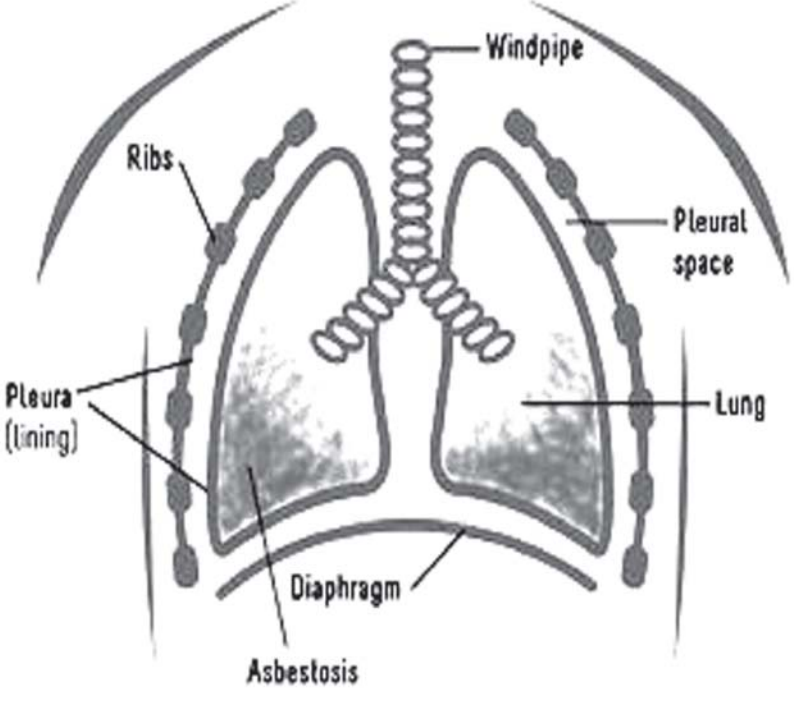

★ सिलिकोसिस के लक्षण :- श्वांस लेने में दिक्कत होती है, खांसी हो जाती है, छाती में दर्द रहने लगता है, नाक से निकलने वाले बलगम में कभी-कभी खून भी दिखने लगता है, शरीर सुखने लगता है, कान के बाहरी किनारो और ओठों की त्वचा हल्की नीली हो जाती है, भूख की कमी हो जाती है, शरीर कमजोर हो जाता है जिससे शरीर में थकान महसूस होती है। बहुतों को तो यह पता तक नहीं चलता है कि उनका शरीर अचानक ही क्यों निढ़ाल होने लगा है? क्यों एक किलोमीटर पैदल दूरी कोसो दूर लगने लगती है और क्यों थोड़ा सा बोझ अचानक पहाड़ लगने लगता है?

श्वांस खींचने लगती है और अंत में श्वांस रूक जाती है।

★ किन्हें होती है सिलिकोसिस की बीमारी :- सिलिकोसिस की बीमारी पत्थर के खनन, रेत बालू के खनन, पत्थर तोड़ने के क्रशर, पत्थर काटने और रगड़ने के कारखानों, कांच, सिलेमिक और सिमेंट के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को होती है। ये कारखाने दिन-रात चलते रहते हैं। इन कारखानों के वातावरण में मौजूद सिलिका के महिन कण उड़ते रहते हैं, जो श्वांस के द्वारा मजदूरों के फेफड़े में पहुंचकर उन्हें सिलिकोसिस की बीमारी से ग्रसित कर देते हैं। उपरोक्त कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के अलावा आसपास में रहने वाले ग्रामवासी भी सिलिकोसिस के शिकार हो जाते हैं।

याद रहे सिलिका के धूल से श्वासं की होने वाली बीमारी को प्रारंभिक अवस्था में फाइब्रोसिस कहा जाता है। फाईब्रोसिस ही आगे चलकर सिलिकोसिस में बदल जाती है। इससे फेफड़ा आसानी से छय रोग के किटाणुओं को रास्ता दे देते हैं जिससे सिलिकोसिस आगे चलकर सिलिको ट्यूबरकुलोसिस में बदल जाती है।

★ सिलिकोसिस की इलाज से जुड़ी कठिनाइयाँ :- सिलिकोसिस के लच्छण टी.बी. और दमा के लच्छणों से काफी मिलते-जुलते होते हैं। इसलिए कुछ डॉक्टर भी इस बीमारी को पहचानने में चूक जाते हैं और टी.बी. का इलाज करना शुरू कर देते हैं। ऐसे में मरीज की हालत सुधरने के बजाय बिगड़ती चली जाती है।

दूसरा की सिलिकोसिस एक लाइलाज बीमारी है। इसे केवल जागरूकता से ही रोका जा सकता है। इस बीमारी की पहचान एक्स-रे के द्वारा की जाती है। इस बीमारी का उचित इलाज उपलब्ध नहीं है। अर्थात् इस बीमारी के चलते श्वांस लेने की नली के अंदर की ग्रंथियों का सिलिका के कण के चलते भर जाने के कारण फेफड़ों में जो परिवर्तन हो जाता है, उसे दूर करके पुनः पुरानी स्थिति में लाना संभव नहीं है। अतः इस बीमारी की रोकथाम ही इसका सबसे अच्छा इलाज है।

★ सिलिकोसिस के रोकथाम के उपाय :- सिलिका के धूल को वातावरण में उड़ने से रोकना इस बीमारी की रोकथाम का सही उपाय है। फैक्ट्री के अंदर और बाहर में उसके आसपास कुछ-कुछ समय के अंतराल पर नित्य फॉग के रूप में पानी का छिड़काव सिलिका के धूल का वातावरण में उड़ने से रोका जा सकता है। इन कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को ड्यूटी के दौरान हमेशा डस्ट रेसपाइरेटर को लगाये रखना चाहिए। कहने को तो इन कारखानों के बाहर सूचना पटल पर मास्क पहने जाने की सूचना लगी होती है, लेकिन कारखाने के अंदर इसपर ठीक से अमल नहीं किया जाता है। कारखाने के अंदर नाक पर समान्य रूमाल बांधकर ही मजदूर काम करते हैं, जो ठीक नहीं है। समय-समय पर मजदूरों द्वारा कफ निकालने वाली दवा का सेवन करते रहने से इस बीमारी से बचे रहने में कुछ हद तक मदद मिलती है। इसलिए इन कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को छोटी चम्मच से दो चम्मच कफ शिरफ का सेवन रोज करना चाहिए। इन कारखानों में मजदूरों से प्रायः 20-20 घंटे की पालियों में काम कराये जाते हैं। जबकि मजदूरों से 8 घंटे के केवल एक ही पाली में सप्ताह में पांच दिन काम कराये जाने चाहिए। मजदूरों को प्रति सप्ताह खाने के लिए गुड़ और शरीर में मालिस करने के लिए सरसो का तेल दिया जाना चाहिए। संक्षेम में हम कह सकते हैं कि खादानों तथा इन कारखानों में काम करने वाले इन मजदूरों को चाहिए कि वह सावधानी बरतते हुए समय-समय पर उचित चिकित्सा लेते रहे तो वे सिलिकोसिस से ग्रसित होने से बच सकते हैं।

★ सिलिकोसिस की बीमारी की रोकथाम में न्यायालय का योगदान :- 31 मार्च 2009 को सुप्रिम कोर्ट ने स्वास्थ्य मंत्रालय और श्रम मंत्रालय को निर्देश दिया की सिलिकोसिस समस्या की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करने में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की पूरी सहायता करे। सुप्रिम कोर्ट ने निर्देश दिये हैं कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के माध्यम से सिलिकोसिस से प्रभावित जिन व्यक्तियों की पक्की जानकारी मिले, उनकी चिकित्सा व्यवस्था स्वास्थ मंत्रालय और श्रम मंत्रालय तुरंत करे और जिन मजदूरों की मृत्यु सिलिकोसिस से हुई है, उनका मुआवजा की व्यवस्था करे। इस बीमारी से रोकथाम के लिए जरूरी कदम उन विभिन्न खनन और औद्योगिक केन्द्रों के आसपास उठाये जाये जहां लोगों को इस बीमारी से ग्रसित होने का खतरा है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने गुजरात और मध्यप्रदेश के सरकारों को नवम्बर 2010 में आदेश देकर कहा है कि सिलिकोसिस से मृत तथा प्रभावित परिवारों को मुआवजा दिया जाये और उनके पुर्नवास की व्यवस्था की जाये। मरने के वारिस को 3 लाख रूपये के हिसाब से मुआवजा दिया जाये। मध्य प्रदेश सरकार को निर्देश दिया गया है कि सिलिकोसिस से पीड़ित परिवारों के लिए पुर्नवास की योजना प्रस्तुत की जाये। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के आधार पर इतना को कहा जा सकता है कि कम से कम ऐसी संभावनाएं उत्पन्न हुई है कि बड़ी संख्या में सिलिकोसिस से प्रभावित उपेक्षित मजदूरों के इलाज की व्यवस्था होगी और सिलिकोसिस के कारण मरने वाले व्यक्तियों के परिवारों को सहायता मिलेगी।

●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

गर्मियों में 'लू' से कैसे बचें!

● **ललन कुमार प्रसाद**

गर्मी के मौसम में हमारे देश के बहुत बड़े भू-भाग में विशेषकर उत्तर, पूर्वोत्तर और मध्य भारत में भयानक गर्मी पड़नी शुरू हो जाती है। मई और जून के महीने में यह गर्मी विकराल रूप धारण कर लेती है तो कहा जाता है कि बहुत गर्म हवा चल रही है, यानि लू चल रही है। यही कारण है कि इस मौसम की तेज धूप में चलने-फिरने से और खासकर फिल्ड ड्यूटी करने वालों को लू लगने यानि हीट स्ट्रोक या सन स्ट्रोक का सबसे ज्यादा खतरा रहता है। नतीजा जरा सी असावधानी से आदमी इस घातक बीमारी के चपेट में आ जाता है। यह मरीज के लिए एक घातक अवस्था होती है। ऐसे में यदि शीघ्रता से शरीर का तापमान कम करने का उपाय न किया जाये तो मरीज की मौत भी हो सकती है। देश के बड़े भू-भाग में पड़ने वाली यह भयानक गर्मी ग्लोबल वार्मिंग के चलते और तीव्र हो गई है। देश का वार्षिक औसत तापमान 20वीं सदी की तुलना में 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। सेंटर फॉर साइंस एण्ड इनवायरमेंट के मुताबिक पिछले तीन दशकों में 1995 पहला, 2016 दूसरा और 2018 तीसरा सबसे गर्म साल रहा है। विगत् 116 वर्षों के इतिहास में 15 सबसे अधिक गर्म वर्षों में से 13 वर्ष 2002 से 2016 के दौरान रहे हैं। इसके चलते हरियाणा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार और तमिलनाडू में हर साल समान्य से 9 दिन अधिक लू चली। नतीजा गर्मी के मौसम में अब हर साल एक हजार से अधिक लोगों की मृत्यु होने लगी है। विगत् 118 वर्षों में 2018 सबसे गर्म साल रहा है, जिसमें देश के करीब 1400 लोगों की मृत्यु हो गई। मौसम विभाग ने इस बार लोगों को पहले से ही चेता दिया है कि इस बार अधिक झुलसाने वाली गर्मी पड़ने वाली है। मौसम विभाग ने पूर्वानुमान में यह बताया है कि इस बार गर्मी बेहद कष्टदायक होने वाली है। विगत् 28 वर्षों के मौसम के रिकॉर्ड के आधार पर मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार प्री-मॉनसून अवधि में बिहार के कुछ शहरों का तापमान 43 से 44 डिग्री सेल्सियस तक रह सकता है। वैसे तो लू लगने की समस्या से कोई भी परेशान हो सकता है। लेकिन सबसे पहले बच्चे लू के चपेट में आते हैं। ऐसा इसलिए कि बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत कम होती है। मोटे, दुर्बल, शराबी, चर्मरोगी, हृदय रोगियों तथा बुढ़े लोगों को ज्यादा परेशान करती है। इसलिए ऐसे लोगों को लू से बचने के लिए विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

★ **अपनी ही शरीर के तापमान को स्थिर बनाये रखता है :-** इसमें कोई दो राय नहीं है कि जल ही जीवन का आधार है। हमारे शरीर का लगभग 65 फिसदी भाग पानी से बना हुआ है। खून में 83 फिसदी, गुर्दे में 82.2 फिसदी, मांसपेसियों में 75.6 फिसदी, मस्तिष्क में 74.5 फिसदी और त्वचा में 20 फिसदी पानी होता है। हमारी हड्डियाँ जो देखने में ठोस और कड़ी होती है, उसमें 22 फिसदी पानी होता है और दांत में 10 फिसदी पानी होता है। एक व्यस्क आदमी के शरीर में औसतन 38 से 45 लीटर पानी हमेशा बना रहता है। शिशुओं के शरीर में 75 फिसदी पानी ही होता है। एक व्यस्क पुरूष के शरीर में उसके कुल भाग का 65 फिसदी और एक महीला के शरीर में उसके कुल भाग का 55 फिसदी पानी होता है।

विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को सही ढ़ंग से कार्य करने के लिए शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी का रहना बेहद जरूरी है। पानी हमारे

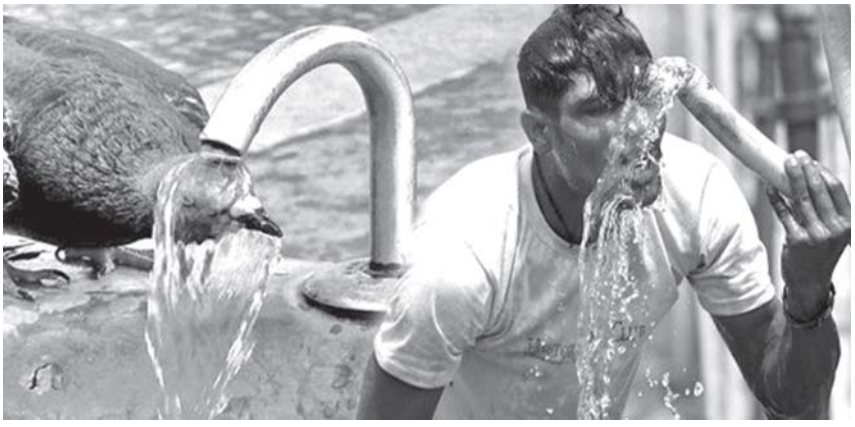

शरीर में बनने वाले जहरीले पदार्थों को, जैसे-मल, मूत्र, पसिना आदि के रूप में शरीर के बाहर निकालता रहता है। शरीर की प्रत्येक कोशिकाओं तक खून के माध्यम से पोषक तत्व तथा ऑक्सिजन पहुंचाता है, जिसके चलते शरीर गर्म रहता है तथा उसे ऊर्जा मिलती रहती है। शरीर में मौजूद पानी ही नाक, कान, गला, आँख आदि के उत्तकों को नमी वाला वातावरण उपलब्ध कराता है। जिसके चलते आँख के झपकते रहने में जरा भी परेशानी नहीं होती है। उचित मात्रा में पानी पीने से तंत्रिका तंत्र (नर्भस सिस्टम) संतुलित बना रहता है। दैनिक कार्यों की क्षमता बढ़ाने और शरीर को मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए शरीर में उचित मात्रा में पानी का बने रहना बेहद जरूरी है।

लू तभी लगती है जब शरीर में पानी की कमी होती है। इसलिए लू लगने से बचने के लिए जरूरी है शरीर में एक निश्चित जल संतुलन को कायम करना। यह पानी ही है जो हमारे शरीर का तापमान एक समान स्थिर रखता है। चाहे जाड़ा हो या गर्मी या बरसात, शरीर में मौजूद पानी ही शरीर का तापमान 98.4 डिग्री फॉरेनहाइट बनाये रखता है। गर्मी के मौसम में हमारे शरीर से पानी के रूप में पसीना बहुत अधिक निकलता है, जो वाष्पन के द्वारा शरीर के तापमान को 98.4 डिग्री फॉरेनहाइट से अधिक बढ़ने से रोकता है। दरअसल पानी का गुप्त ताप 536 कैलोरी प्रतिग्राम है। यही कारण है कि शरीर का तापमान समान्य से अधिक नहीं बढ़ पाता है। जाड़ा के मौसम में शरीर से पसीना बहुत कम निकलता है, जिसके चलते शरीर का तापमान 98.4 डिग्री फॉरेनहाइट से कम नहीं हो पाता है।

वर्ष 2018 में भारत में लू से मरने वालों की संख्या

राज्य	-	संख्या
उत्तर प्रदेश	-	590
केरल	-	223
बिहार	-	117
पश्चिम बंगाल	-	116
ओडिशा	-	77
झारखण्ड	-	75
राजस्थान	-	68
गुजरात	-	52
तमिलनाडू	-	45
असम	-	32
जम्मू-कश्मीर	-	11
कुल	-	**1400**

इसे इस तरह समझे - हमारे मस्तिष्क में मौजूद एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है हाइपोथैलेमस ग्लैण्ड। जो शरीर के तापमान का नियंत्रित रखता है। इसलिए मस्तिष्क के इस अंग को तापमान नियंत्रक केन्द्र या थर्मेस्टेट भी कहते हैं। यह मस्तिष्क में बह रहे खून के तापमान पर हमेशा नजर रखता है। जैसे ही वातावरण का तापमान बढ़ने के साथ-साथ खून का तापमान बढ़ता है तो यह हाइपोथैलेमस ग्लैंड रक्त नलिकाओं को फैला देता है। इसलिए रक्त नलिकाओं में बहने वाली खून की मात्रा बढ़ जाती है। इससे खून की गर्मी त्वचा पर पहुंचकर पसीने के रूप में शरीर से बाहर निकल जाती है। परन्तु जैसे ही शरीर का अंदरूनी तापमान समान्य से कम हो जाता है तो त्वचा के निकट पायी जाने वाली रक्त नलिकाएं सिकुड़कर त्वचा में थोड़ी भीतर चली जाती है, जिससे शरीर की सतह के निकट खून का बहना धीमा हो जाता है और गर्मी शरीर से बाहर नहीं निकल पाती। गर्मी के मौसम में पसीने के रूप में अत्यधिक पानी शरीर से बाहर निकलता है तो हाइपोथेलेमस ग्लैण्ड से संकेत मिलने लगता है और हमें प्यास लग जाती है। यही कारण है कि गर्मियों में आदमी अधिक पानी पीता है। अपने शरीर के अंदर मौजूद पानी की मात्रा का संतुलन बनाये रखने के लिए एक व्यस्क आदमी को रोजाना कम से कम 2.5 लीटर पानी अवश्य पीना चाहिए। वैसे तो एक स्वस्थ एक व्यस्क व्यक्ति को प्रतिदिन 2.5 से 4.0 लीटर पानी पीना लाभदायक होता है, लेकिन खासकर गर्मियों में एक व्यस्क व्यक्ति को प्रतिदिन 5.0 लीटर पानी पीना चाहिए।

★ **पसीना नमकीन क्यों होता है? :-** हमारी त्वचा तीन परतों में बनी होती है- वाह्य परत (एपीडर्मिस), ममध्वर्ती त्वचा (मालपिघियन) और भीतर त्वचा (डर्मिस)। त्वचा की भीतरी परत यानि डर्मिस में 20 लाख से भी अधिक श्वेत ग्रंथियां (स्वेट ग्लैण्ड्स) हैं, जो पसीने का निर्माण करते हैं। त्वचा के रोमकूप से होकर वही पसीना शरीर से बाहर निकलता रहता है। ये श्वेत ग्रंथियां चेहरे, गर्दन, कांख, बांहों और पैरों में ज्यादा सक्रिय होती है। पसीना जो शरीर से निकलता है, वह स्वाद में नमकीन होता है। इसलिए जब शरीर से जब पसीना निकलता है तो सिर्फ पानी ही नहीं निकलता, लवण भी निकलता है। दरअसल पसीना में 99.5 फिसदी पानी और 0.5 फिसदी लवण होता है। उस लवण में सोडियम क्लोराईड, पोटेशियम क्लोराईड, कैल्सियम, आयरन, यूरिया, लैक्टिक एसिड आदि मौजूद होते हैं। शरीर के पानी में मौजूद ये लवण ही शरीर के विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को सुचारू रूप से संचालित रखने में अहम भूमिका निभाते हैं।

★ **हीट एग्जॉस्टेशन, हीट क्रम्प्स, हीट प्रोस्ट्रेशन और हीट स्ट्रोक :-** गर्मी के मौसम में तेज धूप में चलने पर हीट एग्जॉस्ट्रेशन, हीट क्रम्प्स, हीट प्रोस्ट्रेशन और लू लग जाना एक समान्य घटना है। लू लगने को हीट स्ट्रोक, सन स्ट्रोक आदि नामों से भी जाना जाता है। गर्मी के मौसम में जब शरीर को झुलसा देने वाली गर्मी पड़ती है तो जड़ा सी असावधानी से आदमी इन घातक बीमारियों के चपेट में आ जाता है। इन सभी बीमारियों का एक ही कारण है, शरीर में पानी और लवण की कमी। जो शरीर से अधिक मात्रा में पसीना निकल जाने से पैदा होता है।

☞ **हीट एग्जॉस्ट्रेशन :-** तेज गर्मी में अधिक देर तक काम करने से पसीना अधिक निकलता है, जिससे शरीर में पानी और लवण की कमी हो जाती है। शरीर में पानी की मात्रा कम होने से काम करने की शक्ति भी धीरे-धीरे कम होने लगती है और जल्द ही आदमी काम न करने की स्थिति में पहुंच जाता है। अर्थात् ऐसे में आदमी देर तक काम नहीं कर पाता है। थोड़ी देर तक काम करने पर थककर बैठ जाता है। फिर दूसरी बार, तीसरी बार काम करने में अपने आप को असमर्थ महसूस करने लगता है। इसे ही हीट एग्जॉस्ट्रेशन कहा जाता है। गर्मी के कारण होने

वाली सबसे पहली बीमारी यही है। लेकिन इससे जरा भी घबराने की जरूरत नहीं है। आहार में प्याजयुक्त सलाद, दही और छाछ या मट्ठा ले। हरी सब्जियों का सेवन करे। यदि नारियल का पानी पीये तो बहुत अच्छा। बस इतने से ही आप स्वस्थ हो जायेंगे। लेकिन, उपरोक्त पदार्थों का सेवन करने के साथ 24 घंटे में चार लीटर पानी अवश्य पीये, जिससे की आगे इस बीमारी से दोबारा ग्रस्त होने की संभावना ही समाप्त हो जाये।

☞ **हीट क्रम्प्स :-** धूप में अधिक देर तक रहने से अधिक पसीना निकलता है और पसीने के साथ लवण भी निकलता है। शरीर में इन दोनो की कमी से अकड़न होने लगती है। यह अकड़न पैर की पिंडलियों और पैर की पिंडलियों और पेट में अधिक होती है। इस स्थिति को हीट क्रम्प्स कहते हैं।

तेज गर्मी में अधिक दौड़धूप, खेलकूद या कसरत करना ठीक नहीं है। इससे शरीर में जल और लवण की कमी होने लगती है। इसका भुगतान बेचारी मांसपेसियों को करना पड़ता है जो दर्द के मारे बेहाल रहती हैं और उसमें मरोड़ें उठने लगती है। यह ऐंठन (मरोड़) शरीर के किसी भी मांसपेसी में हो शक्ति है। शरीर में जल और लवण की कमी के चलते उपजे इस बीमारी को हीट क्रम्प्स कहते हैं। घबराएं नहीं, ये मरोड़ें थोड़ी ही अवधि की है। किसी से कहे कि वह प्रभावित मांसपेसी को थोड़ा मल दे। एक लीटर पेयजल में चाय की छोटी चम्मच से दो चम्मच चीनी, एक चुटकी नमक और एक चौथाई निंबू के रस को मिलाकर मरीज को थोड़े-थोड़े अंतराल पर पिलावें। इससे मांसपेसियों में आयी ऐंठन शांत हो जायेगी। आहार में प्याजयुक्त सलाद, दही और छाछ को शामिल करे। यदि हरी शब्जी, फलों के रस और नारियल का पानी सेवन करे तो और भी अच्छा। एक व्यस्क व्यक्ति को प्रतिदिन 4 लीटर पानी अवश्य पीना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति को भविष्य में इस बीमारी द्वारा दोबारा ग्रसित होने की संभावना नहीं रहती है।

☞ **हीट प्रोस्ट्रेशन :-** शरीर में पानी और लवण की कमी के चलते जब मांसपेसियों में अकड़न आने के साथ पीड़ित व्यक्ति को चक्कर आने लगे। चेहरा पीला पड़ने लगे, सांस धीमी होने लगे, तो वह व्यक्ति बेहोश भी हो सकता है। दरअसल शरीर में पानी और लवण की कमी होने तथा खून की बड़ी मात्रा त्वचा में फैल जाने से मस्तिष्क को पर्याप्त खून नहीं मिल पाता है, जिससे आदमी को चक्कर आने लगता है। इस स्थिति को हीट प्रोस्ट्रेशन कहते हैं। जब देखे की व्यक्ति को हीट प्रोस्ट्रेशन की स्थिति में आ गया है तो उसे छाव में लिटाकर पानी भींगे कपड़े से शरीर की मालिस नीचे ऊपर की ओर करे। पैर को ऊपर उठाकर यानि दो तकीए के ऊपर पैर रखकर मालिस करने से ज्यादा लाभ होता है। ऐसे में पैर के अपेक्षा सिर नीचे रहने से पैरों में रूका खून हृदय में और मस्तिष्क में पैर के अपेक्षा अधिक मात्रा में पहुंचने लगता है। इससे रोगी की बेहोशी दूर हो जाती है। रोगी को चीनी, नमक और निंबू के रस मिले पानी को पिलाते रहना चाहिए। इन उपायों से मरीज ठीक हो जाता है। आहार में उसे प्याजयुक्त सलाद, दही, छाछ, हरी सब्जी, फलों के रस और नारियल का पानी देते रहना चाहिए। प्रयास करना चाहिए कि मरीज 24 घंटे में कम से कम 4 लीटर पानी अवश्य पीये। ऐसा करने पर व्यक्ति भविष्य में दोबारा इस बीमारी से ग्रसित होने से बचा रहता है।

☞ **लू (हीट स्ट्रोक) :-** उपरोक्त तीनों स्थितियां लू लगने के पूर्व की स्थितियां होती है। उपरोक्त तीनों स्थितियों में अमूमन मरीज के प्राण जाने का भय नहीं रहता है। लेकिन, लू लगने पर जान जाने की 50 फिसदी संभावना रहती है। गर्मी के मौसम में तेज और गर्म हवाएं चलती है, उन्हें हम लू कहते हैं।

यह ठीक है कि मानव शरीर में तापमान के उतार-चढ़ाव को सहने की पर्याप्त क्षमता होती है। लेकिन इसकी भी एक सीमा है। जब लू की गर्मी बहुत अधिक बढ़ जाती है तो शरीर का टेम्परेचर कंट्रोल सिस्टम जवाब दे जाता है और व्यक्ति लू का शिकार हो जाता है। शरीर में पानी और लवण की मात्रा में अधिक कमी हो जाती है तो शरीर के भीतर रक्त संचार में बाधा पहुंचने लगती है। ऐसे में शरीर से पसीना निकलना बंद हो जाता है और आदमी लू के चपेट में आ जाता है।

★ **लू लगने के लक्षण :-**

☞ लू लगने की शिकायत एकाएक होती है। इसका खास लक्षण है कि रोगी को पसीना नहीं आता है। जब पसीना का निकलना बंद हो जाता है तो शरीर का तापमान एकाएक बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। कभी-कभी शरीर का तापमान 104 डिग्री फॉरेनहाइट या इससे भी अधिक हो जाता है।

☞ नाड़ी की गति (पल्स रेट) और श्वसन (रेसपाइरेशन) तेज हो जाती है।

☞ थकान घिर आती है। सिरदर्द, झुझलाहट, चिड़चिड़ापन और गुस्सा हावी हो जाते हैं।

☞ त्वचा गर्म और सूखी लगने लगती है।

☞ वैसे तो पूरे शरीर में जलन होती है किन्तु त्वचा, नेत्र गोलक और कान के भितरी भाग में जलन अधिक होती है।

☞ शरीर में पानी की कमी के चलते खून गाढ़ा हो जाता है, नतीजा मरीज शरीर में खिंचाव और हांथ-पैर में ऐंठन सी महसूस करने लगता है। फलस्वरूप रोगी बेचैनी महसूस करने लगता है।

☞ शरीर में पानी की कमी और अत्यधिक ताप के कारण रक्तप्रवाह धीमा पड़ जाता है, जिससे नसों में खिचाव होने लगता है। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि नसों में रक्त जम जाता है, जिससे नसे फट जाती है। ऐसे में रोगी का बचना मुश्किल हो जाता है।

★ लू से कैसे बचे :- गर्मी के दिनों में लू से बचने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना जरूरी है :-

☞ गर्मी के दिनों में खुले आंगन या गली-मुहल्ले में घूमते समय कभी भी नंगे बदन ना रहे। हमेशा पर्याप्त मोटे सूती वस्त्र पहने रहे, ताकि पसीना आपके शरीर को ठंडा किए रहे। काले तथा अन्य गहरे रंगों के कपड़े कम ही पहने, क्योंकि गहरे रंगों के कपड़े गर्मी को आकर्षित करते हैं। ज्यादातर सफेद या हल्के रंगों के ही कपड़े पहने। इससे शरीर में गर्मी प्रवेश नहीं कर पाती है।

☞ एकदम ठंडे स्थान अथवा कमरे से गर्म स्थान अथवा धूप में ना निकले। अर्थात् शरीर के तापमान को वातावरण के तापमान के साथ धीरे -धीरे बदलने दे। ऐसा इसलिए कि हमारा शरीर वातावरण के एकाएक बदले हुए तापमान के अनुरूप अपने आप को ढ़ालने में थोड़ा समय लेता है। फिर काफी देर तक धूप में रहने के बाद तुरंत स्नान न करे और ना ही स्नान के बाद तुरंत धूप में निकले।

☞ भूखे, प्यासे और खाली पेट घर से न निकले। धूप में घर से बाहर निकलने के पहले पर्याप्त मात्रा में पानी अवश्व पी ले। हमेशा अपने साथ पानी की बोतल रखे। गर्मियों में एक व्यस्क आदमी को चार से पांच लीटर पानी अवश्य पीना चाहिए।

☞ ढ़ीले और हल्के रंग के मोटे सूती कपड़ा पहने, क्योंकि यह कपड़े गर्मी के अवरोधक हैं। जिससे लू से बचाव होता है।

☞ सिर और गर्दन को हल्के रंग के मोटे सूती कपड़े से ढ़ंककर घर से बाहर निकले। सूती कपड़े की टोपी पहनने से भी धूम की सीधी गर्मी से बचा जा सकता है। गर्मियों में छाते का इस्तेमाल बहुत लाभकारी होता है।

☞ धूप में निकलने के पहले हल्के रंग के चश्मे का प्रयोंग करे।

☞ भोजन में खीरा, ककड़ी और प्याज की सलाद को शामिल करे। कच्चे प्याज में लू न लगने देने का चमत्कारी गुण है।

☞ गर्मी के दिनों में दही, छाछ, हरे नारियल का पानी और फलों के रस का सेवन करे। मट्ठे का प्रयोग प्राय: इलेक्ट्रोलाइट घोल का कार्य करता है।

☞ दाल पकाते समय उसमें कच्चे आम का दो-तीन टुकड़ा डाल देने से बहुत लाभ होता है। लू लगने की संभावना समाप्त हो जाती है। ध्यान रहे कच्चे आम का सेवन लू से बचाव और उपचार दोनो में बहुत उपयोगी है।

☞ तेज धूप यानि 10 बजे सुबह से लेकर 4 बजे शाम के बीच की धूप में निकलने से बचे।

★ लू लगने का उपचार :-

☞ लू के तीव्र आक्रमण पर यदि उपचार तुरंत न किया जाये और लापरवाही बरती जाये तो मौत भी हो सकती है। इसलिए लू लगने का उपचार जितनी जल्दी शुरू कर दी जाये, मरीज को बचने की संभावना उतनी ही अधिक होती है।

☞ तुरंत मरीज को शीतल और छायादार स्थान में ले जाकर लेटा दे। उसके शरीर से कपड़े कम कर दे और साथ ही तंग कपड़ों को उतार दें। माथे पर ठंडे पानी की पट्टी रखें। शरीर पर गीला चादर अथवा तौलियां लपेटकर पंखा चला दें।

☞ लू लगने पर शरीर की गर्मी बाहर निकालने के लिए रोगी के शरीर, हांथों और पैरों को ठंडे पानी में भिगोए गये तौलिये से नीचे से ऊपर की ओर रगड़े। ऐसा करने से स्वेद ग्रंथियां पुन: सक्रिय हो जाते हैं, जिससे पसीना आना पुन: शुरू हो जाता है।

☞ हांथ पैर के तलवों पर प्याज के रस का मालिस करें। यह शरीर के ताप को खींचकर निकाल देगा, क्योंकि प्याज में गर्मी सोख लेने की अद्भूत क्षमता होती है।

☞ दिनभर में दो-तीन बार एक-एक ग्लास कच्चे आम का पना पिलाने से रोगी बहुत जल्दी चंगा हो जाता है, क्योंकि यह लू की अचूक और सर्वश्रेष्ठ दवा है।

☞ मरीज को चाय, कॉफी जैसे उत्तेजक पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके सेवन से शरीर के तापमान में गिरावट के बजाये वृद्धि होती है।

★ पूरी दुनियां में लू की सर्वश्रेष्ठ दवा है आम का पना :- दुनियां भर में लू के उपचार हेतु सर्वाधिक कारगर, सर्वाधिक तेजी से असरदार और सौ फिसदी अचूक यानि रामवाण दवा है आम का पना। अर्थात् इसके सेवन से मरीज का स्वस्थ होना सौ फिसदी निश्चित है। यदि घर में कच्चा आम उपलब्ध हो तो आम का पना तैयार करने में महज पन्द्रह मिनट का समय लगता है। इसलिए गर्मी के मौसम में हर घर में एक किलोग्राम कच्चा आम अवश्य रखना चाहिए, जो गर्मी के मौसम में सब्जी मंडी में हर जगह मिल जाता है। आज की तारीख में लू के उपचार हेतु इसकी बराबरी का कोई भी दवा पूरी दुनियां में उपलब्ध नहीं है। आम का पना तैयार करने के लिए चार-पांच कच्चे आम को एक लिटर पानी के साथ प्रेशर कूकर में रखकर खूब अच्छी तरह से पका ले। स्टील के किसी बड़े किन्तु गहरे बर्तन में पानी सहित पके हुए आम को उड़ेल दे और तब हांथ से खूब मिचकारे। ऐसा करने पर आम से उसकी गुठली और छिलका दोनो ही अलग हो जाती है। इसके बाद छानकर गुठली और छिलको को साथ में उबाले गये पानी से अलग कर ले। इस तरह से प्राप्त पानी में स्वादानुसार नमक और भूना हुआ जीरा मिला ले। लीजिए, तैयार हो गया आम का पना। पुन: यदि आप आम का पना मीठा पीना चाहते हैं तो नमक के बजाय जरूरत के मुताबिक चीनी मिला लें। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

रोग रोकने के बजाए, अस्पताल निर्माण किया जाता है

जर्सी गाय का दूध स्वास्थ्य के लिए खतरे की घंटी

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

80-90 के दशक में हमारे देश में श्वेत क्रान्ति के नाम पर एक 'गोवंश का नस्ल सुधार कार्यक्रम' चलाया गया था। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत यूरोपीय देशों से सांड मंगा कर अधिक दूध देने वाली जर्सी गायें तैयार की गयी थीं और हमारे देश की देशी प्रजाति की गायों की उपेक्षा की जाने लगी थी। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि दूध की मात्रा तो बढ़ी, पर गुणवत्ता गायब थी। दरअसल यूरोप के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान में यह पाया था कि यूरोपीय गोवंश-फ्रिजियन, होलस्टीन, जर्सी, स्विस ब्राउन आदि के दूध में BCM-7 नामक विषैला रसायन पाया जाता है जो उपभोक्ताओं के शरीर में मधुमेह, रोग प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास, हृदय संबंधी विकृतियाँ जैसे रोग उत्पन्न करता है। नस्ल सुधार कार्यक्रम की देन यही है कि विषैला दूध हमारे देश में अब सब जगह मिलने लगा है जो बड़े शहरों में बोतल बंद और पैकेट के रूप में धड़ल्ले से बिक रहा है। आश्चर्य की बात तो यह कि हमारे देश के वर्तमान नीति नियन्ता के अभाव में हमारे देश की भावी पीढ़ी भी इस दूध का सेवन कर अपना स्वास्थ्यवर्धन करने के बजाय विभिन्न रोगों को आमंत्रित कर रही है। केवल दूध ही नहीं बल्कि मक्खन, घी, छाछ, मट्ठा तथा अन्य दुग्ध उत्पाद, जो डेयरी उत्पादन के नाम से बेचे जा रहे हैं, सभी इस विषैले रसायन से मुक्त हैं। हमारे देश का पूरा डेयरी उद्योग भी इस तथ्य की ओर जानबुझ कर आँखे मूँदे हुए हैं।

हाल में ही श्री चिन्तन गोहेल द्वारा दायर की गयी एक जनहित याचिका का संज्ञान लेते हुए माननीय उच्च न्यायाल गुजरात ने राज्य सरकार को इस सम्बन्ध में अपना पक्ष रखने के लिए नोटिस जारी किया है कि इस विषैले दूध की बिक्री किस प्रकार रोकी जा सकती है। याचिकाकर्ता ने वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर यह बताया है कि जर्सी गाय का दूध देशी गाय के दूध की तुलना में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है, इसलिए जो दूध विक्रताओं को अपने दूध के पैकेटों तथा बोतलों पर स्पष्ट लिखना चाहिए कि जो दूध बेचा जा रहा है, वह देशी गाय का है या जर्सी गाय का है। यूरोप के वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधानों के आधार पर जर्सी गाय और देशी गाय के दूध को एक-1 तथा ए-2 श्रेणी में विभाजित करते हुए बताया है कि ए-2 श्रेणी का दूध सुपाच्य एवं स्वास्थ्यवर्धक होता है जबकि ए-1 श्रेणी का दूध न केवल आसानी से न पचने वाला होता है बल्कि दूध सुपाच्य एवं स्वास्थ्यवर्धक होता है जबकि ए-1 श्रेणी का दूध न केवल आसानी से न पचने वाला होता है बल्कि अनेक रोगों को जन्म देने वाला होता है। यूरोप, ऑस्ट्रेलिया एवं अमेरिका में हुए अनेक अनुसंधानों के हवाले से याचिकाकर्ता ने कहा है कि जर्सी गाय के सेवन से मधुमेह, शीजोफ्रेनिया, हृदय रोग और मंदबुद्धि जैसे रोग पनपते हैं। एक अमेरिकी वैज्ञानिक कीथ वुडफोर्ड ने अपनी पुस्तक 'डेविल इन द मिल्क' (दूध का राक्षस) में उपरोक्त तथ्यों का विस्तार से वर्णन किया है। डा. वुडफोर्ड ने अपनी इस पुस्तक में बताया है 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को तो जर्सी गाय का दूध बिल्कुल नहीं दिया जाना चाहिए। यह न केवल सरकार के बल्कि प्रत्येक नागरिक के लिए चिन्तन का विषय होना चाहिए कि मदर डेयरी, अमूल, पराग जैसी सहकारी डेरियाँ ही नहीं बल्कि बहुत सी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी विभिन्न शहरों में खुलेआम जर्सी गाय का दूध बेचकर हमारी पूरी पीढ़ी को ही बर्बाद कर रही हैं जिस पर कोई रोक टोक नहीं है। इतना ही नहीं गाय का शुद्ध घी के नाम पर

जो घी बेचा जा रहा है, वह भी जर्सी गाय का ही है। इस समस्या का एक उपाय तो यह है जैसा कि याचिकर्ता ने मांग की है कि दूध और घी विक्रेताओं को पैकिंग पर साफ-साफ लिखना चाहिए कि उनका उत्पाद जर्सी गाय का है या देशी गाय का। साथ ही यह चेतावनी भी लिखना चाहिए कि जर्सी गाय का दूध स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। दूसरा और सर्वोत्तम उपाय यह कि व्यापक अभियान चलाकर फिर से नस्ल सुधार किया जाय और देशी गाय के पालन को बढ़ावा दिया जाये। इस सम्बन्ध में न्यूजीलैंड का उदाहरण उल्लेखनीय है जहाँ के दुग्ध व्यापारियों ने 2000 में ए-2 कॉरपोरेशन के नाम से कम्पनी बना कर भारत से गीर, साहिवाल, हरियाणा, कोकरेज, देवणी जैसी नस्लों के साड़ मंगाये और 10 वर्ष में ही अपने गोवंश की पूरी नस्ल ही बदल दी। भारत जैसे विशाल देश में यद्यपि यह इतना आसान नहीं है, फिर भी दृढ़ इच्छा एवं योजना के सही क्रियान्वयन से ऐसा किया जा सकता है। भारत के ऋषियों ने हजारों साल के वैज्ञानिक प्रयोगों के बाद योग, आयुर्वेद, गौसेवा, यज्ञ, संस्कृत पठन-पाठन, मंत्रोच्चारण आदि व्यवस्थाओं को समाज के व्यापक हितों को ध्यान रखकर स्थापित किया था। उनकी सोच और उनका दिया ज्ञान आज भी विज्ञान कि हर कसौटी पर उतरता है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन ऋषियों के इस विशद ज्ञान एवं उनके द्वारा स्थापित इस व्यवस्था को वैज्ञानिक व आर्थिक आधार के साथ-साथ, स्वास्थ्य के आधार पर भी जोर शोर से प्रचारित किया जाए। अगर किसी को संपन्नता, स्वास्थ्य, चेतना और आनंद में वृद्धि होती है, तो कोई क्यों गाय बेचे और काटेगा? ठीक ऐसे ही अगर देशवासियों को पता चल जाए कि जर्सी गाय का दूध पीने के कितने नुकसान हैं तो दूध और घी का धंधा करने वाले ज्यादातर लोगों को या तो धन्धा बन्द करना पड़ेगा या देशी गाय ही पालनी होगी।

अब सवाल उठता है कि दूध की तो वैसे ही देश में कमी है अगर यह बवंडर खड़ा कर दिया जाए तो हाहाकार मच जाएगा। ऐसा नहीं है। हमारे कत्लखाने उस औपनिवेशिक सोच का परिणाम हैं जिसने साजिशन गौमाता का उपहास कर भारत के हुक्मरानों के दिमाग में देशी गोवंश का सफाया करने का मॉडल बेच दिया है। सरकार किसी की भी हो, देशी गायों और बैलों की नृशंसा हत्या और मांस का कारोबार दिन दूना और रात चौगुणा पनप रहा है। इस पर अगर प्रभावी रोक लगा दी जाए तो पूरे भारत के समाज को सुखी, संपन्न और स्वस्थ बनाया जा सकता है। चिंता की बात तो यह कि है कि परमपराओं और देशी इलाज की पद्धतियों का प्रचार-प्रसार करने वाली कंपनियां भी भारत की परंमपराओं से खिलवाड़ कर रही हैं। उनके उत्पादों में आयुर्वेद के शुद्ध सिद्धांतों का पालन नहीं होता। पूरी दुनिया जानती है कि प्लास्टिक के डिब्बों और बोतलों में अपना माल बेचने लगी है। बिना इस बात की परवाह किए कि यह प्लास्टिक देश भर के गॉवों, जंगलों और शहरों में नासूर की तरह बढ़ती जा रही है। फिर भी शायद ही कोई आयुर्वेदिक औषधि निर्माता कम्पनी शास्त्रोक्त विधि से औषधि निर्माण करती हो। कुल मिलाकर बात इतनी सी है कि देशी गाय, गौवंश, बिना घालमेल के शुद्ध आयुर्वेदिक परंपरा और भारत की पुरातन प्राकृतिक कृषि व्यवस्था की स्थापना ही भारतीय समाज को सुखी, सम्पन्न और स्वस्थ बना सकती है। इसके लिए हर व्यक्ति को जागरूक और सक्रिय होना पड़ेगा ताकि हम मुनाफे के पीछे भागने वाली कंपनियों के मकड़जाल से छूटकर भारत के हर ग्राम को गोकुल बना सकें।

एक तरफ सरकार बीमारी पैदा करने वाले सामान बेंचने तथा खाने के लिए छूट दे रखी है दूसरी ओर रोग ठीक करने के लिए नये-नये अस्पताल खोली जा रही है। चिकित्सकों के नजर में रोगी एटीएम मशीन है। आज गलत खान-पान, रहन-सहन के कारण तथा जानकारी अभाव में कैंसर, टीवी, हार्ट, किडनी, गॉलब्लाडर, ब्लडप्रेसर, डायबिटीज, गठिया आदि रोगों से लोग कराह रहे है तथा चारों तरफ चित्कार मची है। दूसरी तरफ जानबूझ कर प्रतिबंधित समानों को उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। अल्यूमीनियम का बर्तन पूरी दुनिया में प्रतिबंधित है भारत में खुलेआम इस्तेमाल किया जा रहा है। इस बर्तन के भोजन से आँख, लीवर, टीवी आदि रोग उत्पन्न होते है। इसी तरह जर्सी गाय का दूध से 48 बीमारी होती है। यह पूरी दुनिया में प्रतिबंधित है जबकि भारत में खुलेआम इस्तेमाल हो रहा है। इस दुध से लिवर की बीमारी, डायविटीज, हाई ब्लडप्रेसर आदि होना आम बात है। रिफाइंड तेल से कई बीमारी उत्पन्न होती है। अनाज की गुणवत्ता समाप्त कर उसका उपयोग किया जाता है। जैसे अनाज का छिलका में ही मूल तत्व रहता है जिसे निकाल कर अनाज का इस्तेमाल किया जाता है। जैसे दूध से क्रीम निकाल देने से तथा दही से छाली निकाल देने से दूध की गुणवत्ता चली जाती है। धोकर सहित गेहूँ, मंसूर के दाल, बगैर पॉलिस किए गए चावल आदि इस्तेमाल किए जाए तो वे रोग प्रतिरोधक का कार्य करेगें तथा गैस्ट्रीक, कब्ज, ब्लडप्रेसर, डायबिटीज, मोटापा, किडनी आदि से सुरक्षित रहा जा सकता है। अब तो लोग पानी पीने एवं भोजन करने के तरीके भी भूल गए है। बैठकर पानी पीने से गठिया, बात नहीं होती है। इसी तरह जमीन पर बैठकर खाने से गैस्ट्रीक, कब्ज, ब्लडप्रेसर, थायराइड नहीं होती है। ●

यह कहानी एक बहुत ही साधारण परिवार के बेटे की है जमुई के एक छोटे से गांव सिकंदरा शायद आपने नाम सुना होगा में पले बढे इस आईपीएस अधिकारी की सफलता की कहानी काफी दिलचस्प है। पैदल चला, लालटेन में पढ़ा, मेहनत की, आईपीएस बना, माँ-पिता का सपना पूरा किया, लेकिन आज इस आशीष को 'आशीष' देने के लिए माँ नहीं रही। कहाँ से शुरू करूँ, कहाँ से खत्म, कुछ समझ में नहीं आया। तो आइये जानते हैं युवा आईपीएस कुमार आशीष के बारे में....।

● अमित कुमार/धर्मेन्द्र सिंह

आपको को मालूम हो की किशनगंज पुलिस कप्तान कुमार आशीष 9वीं की पढाई मुंगेर के संग्रामपुर स्थित सरकारी स्कूल से पूरी की। उबड़-खाबड़ रोड, हाथ में अलुमुनियम का बस्ता और बस्ते में सलेट, कॉपी, किताब व 2/2 का बोड़ा, एक किलोमीटर तक पैदल चलकर स्कूल जाना, झाड़ू लना, फिर मस्त बस्ते से वो 2/2 का बोड़ा निकालकर बिछाना फिर पढाई करना यह सब आज भी इन्हें याद है। तकलीफ तो थी लेकिन मास्टर जी अच्छे थे, इसलिए बोड़ा पर बैठने वाली बात पर आज भी इन्हें गुस्सा नहीं आता। ठेंठ गवई अंदाज में कहा कि मास्टर साहब पढ़ाते अच्छा थे। बिजली तो मानो उन दिनों सपने जैसा था। लालटेन वाला युग था गांव में। 10वीं की पढाई श्री कृष्ण विधालय सिकंदरा व 12वीं की पढाई धनराज सिंह कॉलेज, सिकंदरा से पूरी की। पिता ब्रजनंदन प्रसाद सिंचाई विभाग में क्लर्क थे, माँ स्वर्गीय मुद्रिका देवी, तीन भाई व तीन बहन का पूरा परिवार था। सभी भाइयों ने संघर्ष के दौर को देखा था। बड़े भैया संजय कुमार रेलवे में एएसएम, मंझले भैया डॉ0 मुकेश कुमार आर्मी हास्पिटल, बीकानेर में पोस्टेड हैं। मैं छोटा था। इसलिए सभी का सहयोग भी काफी मिला। फिर आगे की पढाई के लिए बाहर जाने की सोचता रहा। उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली जाने की जुगाड़ में लगा रहा। वर्ष 2001 में जेएनयू के एंट्रेंस एग्जाम में आल इंडिया टॉपर रहा। स्कालरशिप मिली और कुमार आशीष ने फ्रेंच विषय में नामांकन लिया। मात्र 1200 रुपए में दिल्ली में जिंदगी कैसे कटती। फिर इन्होने ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया। चार साल आल इंडिया रेडियो में काम की। आर्थिक तंगी को लेकर कभी मै बिचलित नहीं हुआ बल्कि हालात से लड़कर परिस्थितियों को अपनी तरफ मोड़ने की कोशिश की। मैं डरा नहीं, लड़ा। संघर्ष के न जाने कितने बसंत को देखा होगा। अब बिना किसी भूमिका के मैं उस व्यक्त्वि का नाम बता ही देता हूँ। बस एक लाइन और,फिर डायरेक्ट बात। यह वर्दी मेरी आन बान और शान है मेरी पहचान का तमाशा दुनियां को ना दिखा। हाँ, मैं बात कर रहा हूँ एक ऐसे शख्सियत की जिसने आज भी जमीन की सच्चाई को ही अपने जीने का मकसद बना लिया। जिसका नाम है कुमार आशीष, एक ऐसा पुलिस कप्तान जिसने पुलिसिंग के मायने ही बदल डाले। बिहार पुलिस के दबंग अफसर कुमार आशीष, इनका नाम सुनते ही जहां अपराधियों के पसीने छूटने लगते हैं। इनके बहादुरी और दबंगता की किस्सा से तो सभी परिचित हैं लेकिन कुमार आशीष अपराधियों के लिए जितने सख्त है उतने ही ये आम लोगों के लिए एक नेक इंसान भी हैं। आज इनकी लोकप्रियता इस बात की बानगी है कि अगर आप पुलिस अच्छे हैं तो समाज अच्छा होगा। कहा जाता है की अगर इंसान में संघर्ष और कठिन मेहनत करने की क्षमता हो तो दुनिया में ऐसा कोई मुकाम नहीं है जिसे हासिल ना किया जा सके। कवि रामधारी सिंह दिनकर ने सही ही कहा है की हम मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है। कोई भी माँ बाप कितने भी तकलीफ में हो पर सबका सपना होता है की उनका बच्चा खूब पढाई करे। आगे कुमार आशीष

बताते हैं कि प्लस टू के बाद आगे की पढाई के लिए उन्होंने अपना कदम दिल्ली की ओर बढ़ाया। जेएनयू में दाखिला लिया। फ्रेंच भाषा में बी.ए, एम.ए, एम.फिल व पीएचडी की पढाई की, हालाँकि डिग्री लेने के लिए असाइनमेंट जमा करना बाकि है। जूनियर रिसर्च फेलोशिप मिला, फ्रेंच की पढाई की। घर से पापा या भैया ने कभी प्रेसर नहीं दिया। शादी वादी के लिए किसी ने जल्दी नहीं दिखायी। सभी ने भरपूर सहयोग किया। वर्ष 2006 में फ्रांस गए। कुमार आशीष ने बताया कि जब वे फ्रांस गए तो वहां एक फ्रेंच परिवार थी। जिन्हें भारत का मतलब सिर्फ राजस्थान, दिल्ली, केरल व गोवा ही पता होता था। उस परिवार में एक आंटी थी जिनका नाम निकोल था। जब मैंने बिहार की संस्कृति व छठ पूजा के बारे में बताया तो वो काफी हैरान हुई। उन्होंने कहा कि तुम इसपर लिखो। फिर जो उन्होंने कहा वो मैं आपको बताता हूँ। पता है तुम्हारा बिहार क्यों पिछड़ा है क्योंकि वहां के लोग अपनी प्रतिभा को अपने राज्य के विकास में नहीं लगाते न ही योगदान देना चाहते हैं। उनका इशारा ब्रेन ड्रेन की तरफ वही से मैंने सोचा कि ये लेडी तो ठीक कह रही हैं। मैंने तय किया कि मैं अपने गांव जाऊंगा, समाज के लिए कुछ करूँगा। फिर मैं वापस भारत आया और फ्रंच में छठ के ऊपर 16 पेज का आर्टिकल लिखा जो आई.सी.सी.आर में छपी। फिर 2 साल फ्री में जेएनयू में ही जूनियर्स को फ्रेंच भाषा पढाई। सिविल सेवा की तैयारी शुरू की। आईएएस बनना चाहते थे लेकिन

आईपीएस बने। आईएएस क्यों, तब उन्होंने बताया कि 1997 में जब पहली बार सिकंदरा में डीएम राजीव पुन्हानी ने मुझे प्रश्न प्रतियोगिता में फस्ट प्राइज दिया तो मैं सोचता था कि मैं भी बड़ा होकर आईएएस बनूँगा। मेरी सोच को फैमली व भैया का सपोर्ट मिला लेकिन सिलेक्शन आईपीएस के लिए हुआ लेकिन सोच वही कि जिस नौकरी में जाऊंगा अपना बेस्ट देने की कोशिश करूँगा। बिहार के विकास की सोच थी, सो कैडर भी बिहार मिला। फिर मैंने वर्ष 2012 में भारतीय पुलिस सेवा ज्वाइन किया। मोतिहारी में ट्रेनी रहा। जून 2014 में एसडीपीओ दरभंगा के रूप में

पहली पोस्टिंग हुई। काम किया, नाम हुआ। सोशल मीडिया से लोग जुड़े और एक लंबा कारवां बनता चला गया। अपराधी व मनचले अपने अपने बिल में दुबक गए। फिर हुआ ट्रांसफर। बेगुसराय के बलिया में पोस्टिंग हुई। काम का टेम्पो यहाँ भी कम नहीं हुआ और 1 अगस्त 2015 को मधेपुरा एसपी की कमान सौंप दी गयी। कल्चरल पुलिसिंग व कम्युनिटी पुलिसिंग के बदौलत मधेपुरा के लोगों को अहसास कराया कि 'मैं हूँ न'। स्पोर्ट्स के बूते युवाओं को जोड़ा। इसी बीच एसपी कुमार आशीष को 'आशीष' देने के लिए माँ नहीं रही। ये वो दौर था जिसने कुमार आशीष को बुरी तरह से तोड़ दिया। माँ,स्वर्गीय मुद्रिका देवी जिनके ममता के आँचल में पल बढ़ कर कुमार आशीष बड़े हुए, बुरे वक्त को देख अपने माँ-पिता के लिए कुछ अच्छा करना चाहा। बेटा आईपीएस हो चूका था। लेकिन ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। माँ चली गयी, उनकी याद आज भी उस गीत के दो बोल 'रूठके हमसे कहीं जब चले जाओगे तुम,ये ना सोचा हमसे कहीं जब चले जाओगे तुम, ये ना सोचा था कभी इतने याद आओगे तुम' आशीष याद करके भावुक हो जाते है और भावना की आँसू आँखों से छलक पड़ता है। फिर नालंदा में बतौर पुलिस कप्तान इनकी पोस्टिंग हुई। आते ही सफलताओं के झंडे गाड़े और कम ही समय में लोगों के चहेते एसपी बन गए। मैं भी मिला, काम करने के अंदाज को समझा। अच्छा कर रहे है बाकि एक पत्रकार की हैसियत से जो दिखता है वो लिखता हूँ। जब अच्छा तो अच्छा, बुरा हो तो बुरा सुनना ही पड़ेगा। अब सर सुनते भी है और समझते भी है। बाकि समझने व समझाने के लिए जनता कुमार आशीष से फेसबुक से जुडी

है। एक अच्छा प्लेटफार्म है। सुनवाई भी होती है अगर नहीं हुआ तो थानेदार की सुनवाई सबसे पहले होती है। जनता इनके लिए ज्यादा प्रिय है। फिर अप्रैल 2016 में शादी हुई। काफी धूम धाम से शादी सम्पन हुई। लेकिन जाइयेगा नहीं, पंडित जी का मन्त्र खत्म हुआ है क्लाइमेक्स अभी बाकि है। आईपीएस कुमार आशीष और दिल्ली उच्च न्यायालय की अधिवक्ता देव्यानी शेखर के परिणय सूत्र में बंधने के पीछे की कहानी को आज मैंने उन्ही की जुबानी सुनी। आजकल की युवा पीढ़ी का दम फूल जायेगा। एक साधारण परिवार से निकलकर इस तरह सूबे का चर्चित आईपीएस अधिकारी बनकर लगातार सफलता हासिल करना कुमार आशीष के लिए शायद इतना आसान न होता अगर पिछले आठ साल से कुमार आशीष और देव्यानी शेखर एक-दूसरे की ताकत न बनते। सर तो आईआईटी दिल्ली में फ्रेंच पढ़ाने गए थे और मैडम पढ़ने। पढाई लिखाई खत्म हुआ और दोस्ती कब प्यार में बदला पता ही नहीं चला। प्यार हुआ लेकिन 'टू स्टेट' वाली कैरेक्टर इनके सामने आ गयी। दो संस्कृति दो कास्ट, कभी लगा कि कैसे मनाये अपने अपने माँ-पिता को, समाज को, उस रूढ़िवादी सोच को। कुमार आशीष इसी बीच संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास कर आईपीएस बन गए व वही दूसरी तरफ देव्यानी ने अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन में ग्रेजुएशन के बाद प्रतिष्ठित बीएचयू से कानून की पढ़ाई की और करीब दो दशकों के रिकॉर्ड को तोड़ते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त किया। फिर पुलिस कप्तान की माँ मान गयी। दोनों परिवारों की प्रतिष्ठा को और अधिक ऊंचाई तक ले जाने का एहसास अभिभावकों को

आशीष और देव्यानी को परिणय सूत्र में बंधने को राजी कर गया। शादी से पहले ही बहु को आशीर्वाद दिया। इस दुनिया में माँ का ना रहना कुमार आशीष को तो खलेगा ही लेकिन पिता के मजबूत कंधो का सहारा व भाई बहनो का प्यार व सपोर्ट और पत्नी का साथ शायद इस टीस को कुछ हद तक पाट सके। देव्यानी शेखर समस्तीपुर की मूल निवासी है। पिता बैंक मैनेजर रहे हैं और माता फैशन डिजायनर। लिखते-लिखते तो मैं भी भावुक हो गया कि जिस हँसते हुए एसपी को आज मैं दिन भर देखता हूँ वो सही में डाउन टू अर्थ है। लास्ट में वे कहते हैं कि स्कूल प्राइवेट हो या सरकारी, इच्छा शक्ति खुद की होनी चाहिए। तभी सफलता की राह आसान हो जाती है। तो दोस्तों सफलता कोई एक रात का खेल नहीं है जो पलक झपकते ही किस्मत बदल जाएगी, आपको कठिन मेहनत करनी होगी खुद को संघर्ष रुपी आग में तपाना होगा, फिर देखिये दुनिया आपके कदमो में झुक जाएगी। आपको मालूम हो की अभी कुमार आशीष किशनगंज के पुलिस कप्तान है और श्री कुमार यहाँ आते ही आम जनों के दिलो में अपना जगह बना लिए है आम लोगो का कहना है की अधिकारी तो आते जाते रहते हैं लेकिन अधिकारी के साथ इंसान का आना जाना कम ही दिखता है। जो कुमार आशीष में हम लोगो को देखने को मिला। आपको मालूम हो की किशनगंज जिला के अव्वाम में पुलिस महकमा से जुड़े कामों में बेहतरी आने की उम्मीद जगी है। किशनगंज एसपी कुमार आशीष किसी तरह की भी लापरवाही बरते जाने के खिलाफ काफी सख्त तेवर हैं। इसी लापरवाही की वजह से उन्होंने कांडों को लंबित रखने वाले 27 अनुसन्धानकों पर एवं 03 थानाध्यक्षो पर कारवाई शुरू कर दी गई है। जेएनयू से पढ़े लिखे कुमार आशीष अपने नवाचारों से पुलिसिंग को कुछ और बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। कुमार आशीष ने पुलिस और पब्लिक के बीच की खाई को पाटने के प्रयास किए हैं।जिसका चर्चा आम लोगो मे है। ●

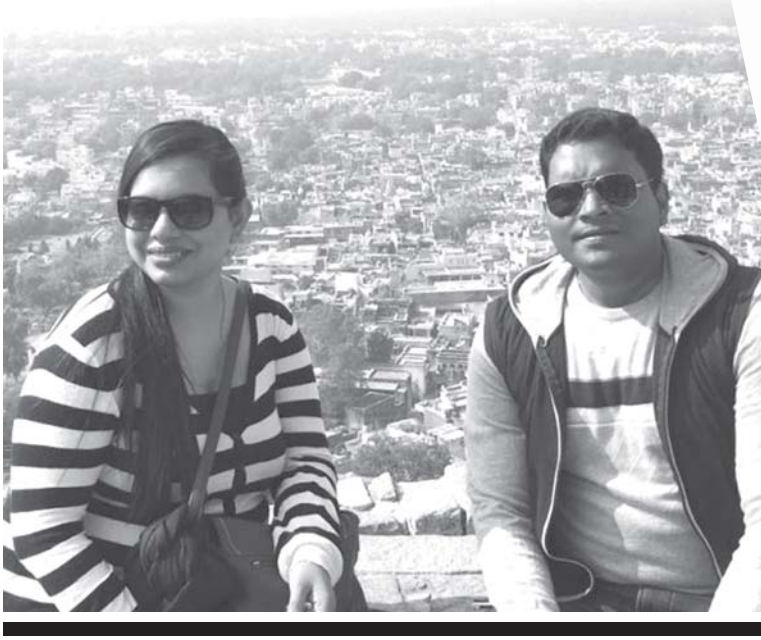

वासना के आग में पिता ने अपने बेटे को मार डाला

● सौरभ पाण्डेय

12 वर्षीय एक बच्चे को अपने पिता की दूसरी पत्नी का विरोध करने को लेकर पिता द्वारा जिंदा जलाकर मार दिया गया। इस घटना की जानकारी लोगों को उस वक्त हुई, जब अरवल जिले के नगर थाना पुलिस ने अहियापुर गांव के एक नहर से बोरे में बंद एक नाबालिक बच्चे को अधजले अवस्था में बरामद किया। इस शव की शिनाख्त करने पर मृत बच्चे को उसकी माँ के द्वारा पहचान किया गया कि वह बच्चा उसका बेटा शिवम उर्फ टुनटुन है। शव मिलने के बाद अनुसंधान के क्रम में मामला खुलता चला गया और यह बात सामने आया कि दूसरी औरत के साथ अवैध संबंध को जायज करार करने को लेकर बच्चा बाधक बन रहा था, और पिता ने अपने ही बच्चे की निर्मम हत्या कर डाली। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार खुदवां थाना क्षेत्र के बड़पिशाच गांव की महिला पूनम देवी ने 4 मार्च को अपने 12 वर्षीय बेटे शिवम के अपहरण की प्राथमिकी खुदवां थाने में दर्ज करायी थी। दर्ज प्राथमिकी में पूनम ने बताया कि उसका पुत्र घर से पढ़ने के लिए पथरा स्कूल गया हुआ था, लेकिन वह वापस नहीं आया। उसने अपने पति सतीश शर्मा एवं उसकी दूसरी पत्नी सुधा तथा उसके ससुर पुलेन्द्र शर्मा तथा उसकी सास धर्मशीला देवी के ऊपर अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कराया है। उसके बाद कांड के अनुसंधान में जुटे खुदवां थानाध्यक्ष को यह सूचना मिली की अरवल के अहियापुर गांव में किसी बच्चे का शव पुलिस ने बरामद किया है और उसका हुलिया उस बच्चे से मिल रही है। पूरी जानकारी लेने के बाद थानाध्यक्ष जब पूनम देवी को लेकर अरवल पहुंचे तो वहां उसकी पहचान शिवम के रूप में हुई। थानाध्यक्ष द्वारा बताया गया कि सतीश शर्मा की दूसरी शादी का विरोध उसकी पत्नी और मृतक बच्चे के द्वारा किया जाता था और तभी सतीश ने अपने बेटे को रास्ते से हटाने की नियत से उसकी हत्या कर साक्ष्य छिपाने के लिए शव को जलाने का प्रयास किया और उसे अधजला छोड़कर फरार हो गया। शव मिलने के बाद मृतक की माँ ने भी इस घटना के पीछे अपने पति और उसकी दूसरी पत्नी पर आरोप लगाया। मामले के उद्‌भेदन के बाद पूनम का पति सतीश और दूसरी पत्नी तथा सास-ससुर गांव से फरार हो गये। अब देखना यह है कि पुलिस पूनम को कब तक और कैसे इंसाफ दिला पायेगी? ●

फार्म IV (नियम 8 देखें)

01. प्रकाशन का स्थान	:- पटना
02. प्रकाशन की आवर्तिता	:- मासिक
03. मुद्रक का नाम	:- ब्रजेश मिश्र
क्या भारतीय नागरिक हैं?	:- हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम)	:- लागू नहीं
पता	:- पूर्वी अशोक नगर रोड नं-14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
04. प्रकाशक का नाम	:- ब्रजेश मिश्र
क्या भारतीय नागरिक हैं?	:- हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम)	:- लागू नहीं
पता	:- पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
05. संपादक का नाम	:- ब्रजेश मिश्र
क्या भारतीय नागरिक हैं?	:- हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम)	:- लागू नहीं
पता	:- पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
06. उन लोगों के नाम और पते जो समाचार पत्र के मालिक हों, या जिनके पास कुल पूंजी का एक फीसदी से अधिक हो	:- मालिक ब्रजेश मिश्र पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)
07. कुल पूंजी में एक फीसदी से अधिक की हिस्सेदारी रखने वाली शेयरधारकों के नाम और पते	:- मालिक ब्रजेश मिश्र पूर्वी अशोक नगर रोड नं- 14, कंकड़बाग पटना-800020 (बिहार)

मैं ब्रजेश मिश्र घोषणा करता हूं कि ऊपर दिया गया ब्योरा मेरी जानकारी और मान्यता के अनुसार सही है।

हस्ताक्षर (ब्रजेश मिश्र)

दिनांक:- 05 मार्च 2019 प्रकाशक का हस्ताक्षर

जाँच तथा विचारणों के बारे में साधारण उपबन्ध
(General Provisions as to Inquiries and Trials)

☞ सह अपराधी के क्षमा देने की शक्ति मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट या महानगर मजिस्ट्रेट या कोई भी प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट।

☞ सह अपराधी को क्षमादान करने की शर्त होगी कि वह अपराध की वास्तविक घटना तथा उससे सम्बन्धित व्यक्तियों के बारे में न्यायालय को सही-सही जानकारी दें।

★ निम्नलिखित प्रकार के अपराधों में सह-अपराधी को क्षमादान किया जा सकता है-

☞ वह अपराध जो अनन्यत: सेशन न्यायालय द्वारा विचारणीय है।

☞ वह अपराध जो दण्डविधि संशोधान अधिनियम, 1952 के अधीन नियुक्त विशेष न्यायाधीश के न्यायालय द्वारा विचारणीय है।

☞ ऐसे अपराध जो सात वर्ष की या इससे अधिक अवधि के कारावास से दण्डनीय है।

☞ क्षमादान सम्बन्धी मजिस्ट्रेटों की अधिकारिता में उच्च न्यायालय द्वारा किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता है।

☞ धारा 309 के अन्तर्गत अभियुक्त को एक समय में 15 दिन से अधिक अवधि के लिए अभिरक्षा में प्रतिप्रेषित नहीं किया जा सकता है।

☞ धारा 309 (2) में प्रथम परन्तुक में उल्लिखित प्रतिप्रेषण (Remand) और अभिरक्षा और धारा 167 के अधीन अभिरक्षा में निरोध में अन्तर यह है कि प्रतिप्रेषण अपराध का संज्ञान किये जाने के पश्चात्वर्ती चरण से सम्बन्धित है, और यह केवल न्यायिक अभिरक्षा होती है, जबकि धारा 167 के अधीन निरोध अन्वेषण के चरण से सम्बन्धित है और यह पुलिस अभिरक्षा या न्यायिक अभिरक्षा में हो सकता है।

☞ आवश्यक साक्षी को समन करने या उपस्थित व्यक्ति की परीक्षा करने की शक्ति धारा 311 में वर्णित है।

☞ धारा 313 के अन्तर्गत अभियुक्त की परीक्षा की जाती है।

☞ यह धारा न्यायालय का मजिस्ट्रेट को अभियोजन का साक्ष्य लेने के पश्चात् अभियुक्त का परीक्षण करने की शक्ति प्रदान करती है।

☞ धारा 313 के अधीन मजिस्ट्रेट द्वारा अभियुक्त के परीक्षण में अभिलिखित कथन साक्ष्य नहीं होते हैं।

☞ धारा 320 उन अपराधों का उल्लेख करती है, जिसका विधि पूर्ण समन किया जा सकता है।

☞ यदि अभियुक्त पूर्वदोषसिद्धि के कारण किसी अपराध के लिए या वर्धित दण्ड से या भिन्न किस्म के दण्ड से दण्डनीय है तो ऐसे अपराध का शमन न किया जायेगा।

☞ धारा 321 में किसी व्यक्ति के विरूद्ध अभियोजन वापस किये जाने (प्रत्याहरण) की प्रक्रिया का उल्लेख है।

कानूनी सलाह
शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☞ इस धारा के उपबन्धों के अनुसार किसी मामले में निर्णय सुनाये जाने के पूर्व लोक अभियोजक या सहायक लोक अभियोजक न्यायालय की अनुमति से किसी व्यक्ति के विरूद्ध अभियोजन वापस ले सकता है।

☞ यदि अभियोजन वापस आरोप विरचित किये जाने से पूर्व किया जाता है तो अभियुक्त ऐसे अपराध या अपराधों के बारे में उन्मोचित कर दिया जायेगा।

☞ यदि आरोप विरचित किये जाने के पश्चात् अभियोजन वापस किया जाता है तो अभियुक्त दोषमुक्त कर दिया जायेगा।

अपीलें (Appeals)

☞ धारा 375 के अन्तर्गत यह उल्लेख है कि यदि किसी मामले में अभियुक्त दोषी होने का अभिवचन करें, तो उस अभिवचन के आधार पर की गयी दोषसिद्धि के विरूद्ध कोई भी अपील नहीं हो सकेगी, बशर्ते कि ऐसी दोषसिद्धि उच्च न्यायालय द्वारा की गयी हो किन्तु यदि दोषसिद्धि सेशन न्यायालय, महानगर मजिस्ट्रेट, या प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट या द्वितीय वर्ग मजिस्ट्रेट द्वारा की गयी है, तो अपील, दण्ड के परिमाण या उसकी वैधता के बारे में हो सकती है।

★ धारा 376 में कतिपय ऐसे मामलों का उल्लेख है जिनके लिए अपील नहीं हो सकती है-वे निम्नलिखित है :-

☞ उच्च न्यायालय द्वारा पारित छ: मास से अनधिक अवधि का कारावास या एक हजार रूपये से अनधिक जुर्माने का या ऐसे कारावास और जुर्माने, दोनों का दण्डादेश।

☞ सेशन न्यायालय या महानगर मजिस्ट्रेट द्वारा पारित तीन माह से अनधिक की अवधि के कारावास का या दो सौ रूपये से अनधिक जुर्माने का या ऐसे कारावास और जुर्माने दोनों का दण्डादेश।

☞ प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट द्वारा पारित केवल एक सौ रूपये से अनधिक जुर्माने या दण्डादेश अथवा

☞ संक्षिप्त विचारण के मामले में धारा 260 के अंतर्गत कार्य करने के लिए सशक्त मजिस्ट्रेट द्वारा पारित केवल दो सौ रूपये से अनधिक जुर्माने का दण्डादेश।

नालंदा खुला विश्वविद्यालय के भवनों का निर्माण अगस्त 2020 तक पूरा हो : मुख्यमंत्री

● अमित कुमार/त्रिलोकी नाथ प्रसाद

बीते 1 मार्च को बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने नालंदा जिले के सिलाव अंचल स्थित बड़गाँव में नालंदा खुला विश्वविद्यालय, नालंदा के प्रस्तावित विभिन्न भवनों के निर्माण कार्य का शिलान्यास रिमोट के माध्यम से शिलापट्ट का अनावरण कर किया। नालंदा खुला विश्वविद्यालय के प्रस्तावित भवनों का निर्माण 89 करोड़ रुपये की लागत से 40 एकड़ भूमि में होना है। मुख्यमंत्री ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया। नालंदा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रवींद्र कुमार सिन्हा ने मुख्यमंत्री को पुष्प–गुच्छ, अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर उनका अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री सहित मंच पर मौजूद अतिथियों ने नालंदा खुला विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार एग्जामिनी श्री एस0पी0 सिन्हा द्वारा लिखित नालंदा खुला विश्वविद्यालय के इतिहास पर आधारित पुस्तक का विमोचन किया। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 32 सालों बाद यहाँ नालंदा खुला विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी गयी, इसकी मुझे बेहद खुशी है। नालंदा खुला विश्वविद्यालय बनाने को लेकर वर्ष 1987 में ही अध्यादेश जारी किया गया था। उस समय से आज तक यह विश्वविद्यालय पटना के विस्कोमान भवन में किराए पर चल रहा है, जिससे वर्तमान में करीब डेढ़ लाख विद्यार्थी जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 डॉ0 आर0के0 सिन्हा को डॉलफिन सिन्हा के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिए काफी अभियान चलाया है। इन्हीं के सुझाव और मेरे प्रस्ताव पर डॉलफिन को राष्ट्रीय जल पशु घोषित किया गया इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि वे नालंदा खुला विश्वविद्यालय को भी अच्छे ढंग से चलाएंगे। आगे मुख्यमंत्री ने कहा कि नालंदा खुला विश्वविद्यालय के माध्यम से निजी और सरकारी सेवा में लगे लोगों के साथ ही पढाई में रुचि रखने वाले सजायाफ्ता लोग भी अपनी

पढ़ाई जारी रखने के लिए यहाँ अपना नामांकन कराते हैं। ऐसे लोगों के लिए यहाँ विशेष सुविधा उपलब्ध है इसलिए इस विश्वविद्यालय का काफी महत्व है। उन्होंने कहा कि सब डिवीजन स्तर पर हमलोगों ने डिग्री कॉलेज खोलने का निर्णय लिया है और 18 सब डिवीजन ऐसे हैं, जहाँ डिग्री कॉलेज नहीं है, वहाँ हमलोगों ने डिग्री कॉलेज स्थापित करने का निर्णय लिया है। हमलोगों ने तय किया है कि नालंदा खुला विश्वविद्यालय के माध्यम से वैसे सभी ब्लॉकों में इस विश्वविद्यालय का अध्ययन केंद्र स्थापित किया जाएगा, जहाँ डिग्री कॉलेज नहीं है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नवंबर 2005 में हमारी सरकार बनी, उसी समय से ही हमलोगों ने शिक्षा के विकास के लिए अनेक कदम उठाये। हमने आंकलन कराया तो पता चला कि 12.5 प्रतिशत बच्चे स्कूलों से बाहर हैं, जिसे देखते हुए 21 हजार नए स्कूलों की स्थापना करायी गयी। पुराने स्कूलों में नए क्लास रूम का निर्माण कराने के साथ ही 3 लाख से अधिक शिक्षकों का नियोजन किया गया। इसके बाद पुनः आंकलन कराया तो पता चला कि सबसे अधिक महादलित और अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चे स्कूलों से बाहर हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्कूल पहुँचाने के लिए 30 हजार लोगों को लगाया गया। महादलित के बच्चों को स्कूल पहुंचाने के लिए टोला सेवक और तालिमी मरकज बनाकर अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों को शिक्षा स्वयं सेवकों के माध्यम से विद्यालय पहुंचाया गया, जिसका नतीजा हुआ कि अब एक प्रतिशत से भी कम बच्चे स्कूलों से बाहर हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि गरीबी के कारण माता–पिता अपनी बेटियों को प्रारंभिक शिक्षा के बाद छठी क्लास में नहीं भेजते थे क्योंकि वे अपनी बच्चियों के लिए अच्छे कपड़े खरीदने में असमर्थ थे, जिसे देखते हुए मिडिल स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियों के लिए बालिका पोशाक योजना शुरू की गई। इसके बाद हमने सोचा कि सिर्फ आठवीं क्लास तक लड़कियों के पढ़ने से काम नहीं चलेगा, कम से कम उनकी पढ़ाई मैट्रिक तक की होनी चाहिए। इसके लिए हमने 9वीं क्लास में पढ़ने वाली लड़कियों के लिए साइकिल

योजना की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि 2008 में जब हमने साइकिल योजना की शुरुआत की, उस समय 9वीं क्लास में पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या 1 लाख 70 हजार से भी कम थी, जो अब बढ़कर 9 लाख के करीब हो गई है। जब लड़कियां समूह में साइकिल चलाती हुईं स्कूल जाने लगीं तो इससे लोगों की मानसिकता में बदलाव आया और पूरा परिदृश्य ही बदल गया। लड़कियों का सशक्तिकरण हुआ और उनके अरमानों को पंख लग गये। उसके बाद जगह–जगह से लड़कों ने भी मांग शुरू की, जिसे देखते हुए लड़कों को भी साइकिल योजना का लाभ दिया जाने लगा। उन्होंने कहा कि अब तो मिडिल स्कूल में कहीं–कहीं लड़कियों की संख्या लड़कों से ज्यादा है और हाई स्कूल में लड़कियों की संख्या लड़कों के बराबर है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इंटर के बाद आगे की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों की संख्या बिहार में काफी कम थी, जिसके कारण बिहार का ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो 13.9 था, जबकि देश का औसत 24 प्रतिशत है। बिहार ज्ञान की भूमि रही है इसलिए हमने ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो को राष्ट्रीय औसत से भी आगे 30 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य तय किया है। इसके लिए हमने सात निश्चय योजना की शुरुआत कर स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड के माध्यम से इंटर से आगे की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों के लिए 4 लाख रुपये तक के शिक्षा ऋण का प्रावधान कराया। बैंकों के ढुलमुल रवैये के कारण राज्य शिक्षा वित्त निगम बनाकर 4 प्रतिशत के साधारण ब्याज पर शिक्षा ऋण मुहैया कराया जा रहा है ताकि उच्च शिक्षा की ओर अधिक से अधिक बच्चे आकर्षित हो सकें। इसमें लड़कियों, दिव्यांगों एवं ट्रांसजेंडरों को केवल एक प्रतिशत ब्याज पर यह ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। समारोह में शामिल लोगों से आग्रह करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आप सभी अपने बच्चों को पढ़ाइये। उन्होंने कहा कि स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना के माध्यम से मिलने वाले ऋण को छोटे–छोटे किस्तों में लौटाना है और अगर उच्च शिक्षा हासिल करने के बाद भी रोजगार नहीं मिलता है तो ऐसी स्थिति में उनका ऋण भी माफ किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रजनन दर में कमी लाने के लिए प्रत्येक पंचायत में प्लस टू स्कूल खोलने का निर्णय लिया गया और 2000 पंचायतों में हाई स्कूल को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में उत्क्रमित किया गया है, जो शेष पंचायतें हैं, उस दिशा में काम आगे बढ़ रहा है। संबोधन के क्रम में मुख्यमंत्री ने बिहार शैक्षणिक आधारभूत संरचना निगम लिमिटेड के अधिकारियों से कहा कि 15 अगस्त 2020 तक नालंदा खुला विश्वविद्यालय के भवनों का निर्माण कार्य और फर्निशिंग का काम पूरा करा दें तो मुझे खुशी होगी। इस पर अधिकारियों ने 15 अगस्त 2020 तक भवनों का निर्माण कार्य पूरा कराने के प्रति मुख्यमंत्री को आश्वस्त किया। उन्होंने कहा कि माना जाता है कि बख्तियारपुर में ही कैम्प करके बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कराया था। उसी बख्तियारपुर के वासी भी नालंदा विश्वविद्यालय को पुर्नस्थापित कराने के प्रति संकल्पित हैं। यहॉ नव नालंदा महाविहार भी है और अब इस धरती पर नालंदा खुला विश्वविद्यालय भी स्थापित हो रहा है। नालंदा खुला विश्वविद्यालय को एन0एम0ई0आई0सी0टी0, एक जिगाबाइट की मेमोरी से जोड़ा गया है। यह विश्वविद्यालय तेज गति से चलने वाले इंटरनेट से जुड़ गया है। उन्होंने कहा कि इग्नू के लिए भी हमलोगों ने ही जमीन दी है, जिसका भवन 5 दिन पहले बनकर पटना के मीठापुर में तैयार हुआ है। इग्नू से 40 हजार विद्यार्थी जुड़े हुए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि नालंदा खुला विश्वविद्यालय के लिए और भी जमीन की आवश्यकता होगी तो राज्य सरकार मुहैया कराएगी। अब तक इस विश्वविद्यालय को राज्य सरकार से किसी अनुदान की जरूरत नहीं पड़ी है। विश्वविद्यालय की जमीन और भवन के लिए हमलोगों ने पैसे दिये हैं और जब भवन बनकर तैयार हो जाएगा तो उसका रख–रखाव करना आवश्यक होगा। इसके लिए राज्य सरकार प्रतिवर्ष अनुदान सुनिश्चित कर देगी, जिसके ब्याज से आप काम करते रहेंगे ताकि नालंदा विश्वविद्यालय की तरह ही नालंदा खुला विश्वविद्यालय की ख्याति हो। उन्होंने कहा कि एक भी बच्चा अनपढ़ नहीं रहे क्योंकि पढ़ेगा तभी आगे बढ़ेगा। समारोह में शामिल लोगों से आह्वान करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राजनीतिक बातें सुननी है तो 3 मार्च को पटना के गांधी मैदान में आयोजित संकल्प रैली में जरूर हिस्सा लें। उन्होंने कहा कि समाज मे सहिष्णुता, सद्भाव और आपसी भाईचारा कायम रहेगा, तभी समाज आगे बढ़ेगा और विकास का पूरा लाभ आप सब को मिलेगा इसलिए हर हाल में शांति का वातावरण कायम करने में आप सभी अपनी महती भूमिका निभाएं। समारोह को उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, शिक्षा मंत्री श्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा एवं नालंदा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 डॉ0 रवींद्र कुमार सिन्हा ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर ग्रामीण विकास मंत्री श्री श्रवण कुमार, ग्रामीण कार्य मंत्री श्री शैलेश कुमार, सांसद श्री कौशलेंद्र कुमार, विधायक श्री जितेंद्र कुमार, विधायक श्री सुनील कुमार, विधायक श्री चन्द्रसेन जी, विधान पार्षद श्रीमती रीना यादव, मुख्यमंत्री के परामर्शी श्री अंजनी कुमार सिंह, अपर मुख्य सचिव श्री आर0के0 महाजन, नालंदा खुला विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 कृतेश्वर प्रसाद सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति, नालंदा खुला विश्वविद्यालय के शिक्षकेतर, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं आमलोग उपस्थित थे। ●

स्थापित : 1983

फोन नं.:-06112-290288

सभी छात्र, छात्राओं, शिक्षक, शिक्षिकाओं, कर्मियों एवं अभिभावकों को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

के.एस.टी. कॉलेज

(मगध विश्वविद्यालय की एक स्थायी संबद्धन प्राप्त इकाई)

U.G.C. से 2 एफ तथा 12 बी से मान्यता प्राप्त संस्थान

इंटर तथा डिग्री में साइंस, आर्ट्स एवं कॉमर्स की पढ़ाई की व्यवस्था।

वोकेशनल कोर्स बीसीए, लाईब्रेरी साइंस, बी.बी.एम., डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर एण्ड रिर्सोसेज, डिप्लोमा इन डेयरी टेक्नोलॉजी एवं BBOSE के तहत असफल विद्यार्थियों को सफलता देने वाला एकमात्र संस्थान।

इच्छुक विद्यार्थी कॉलेज के कार्यालय में सम्पर्क करें :-

सलेमपुर, सोहसराय, बिहारशरीफ, नालंदा-803118

Contact : 9386349436, 9334879491

Website :-www.kstcollege.com, E-mail :-principal@kstcollege.com

रंगों का त्योहार पावन पर्व होली एवं रामनवमी के शुभ अवसर पर समस्त भोजपुरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

निवेदक :- पूनम देवी, मुखिया

ग्राम पंचायत-सियाडिह, भोजपुर

होली के शुभ अवसर पर सभी सम्मानित अभिभावक, शिक्षकवृन्द और छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ।

17 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर

माँ सेन्ट्रल पब्लिक स्कूल

मुन्दीपुर, भगवानपुर हाट, सिवान

Class :- L.K.G to X

An English Medium School

नामांकन प्रारंभ है।

"शिक्षा का दीप जलाएँ, सहयोग का हाथ बढ़ाएँ"

ग्राम पंचायत राज मशरक पूर्वी के सभी सम्मानित जनता को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

कभी ना हारूंगी हिम्मत, छोड़ूंगी न कभी सत्य का साथ।
हर एक जगह को जीतूंगी, जब-जब मिलेगा आपका साथ॥

-: निवेदक :-

पंचायत का चहुंमुखी विकास हमारा उद्देश्य

अमर सिंह
मुखिया प्रतिनिधि
सह समाजसेवी
मो० :-9162830107

मृदुला देवी
मुखिया,
ग्राम पंचायत राज
मशरक पूर्वी, मशरक सारण

कार्यालय नगर परिषद् दानापुर निजामत

की ओर से नगरवासियों को होलीपर्व की हार्दिक शुभकामना

अपील

- वर्तमान वर्ष (2018-19) एवं बकाया होल्डिंग टैक्स (संपत्ति कर) का भुगतान 31 मार्च 2019 से पूर्व निश्चित रूप से करें।
- नगर परिषद दानापुर द्वारा नक्शा पास होने के बाद ही मकान का निर्माण करें।
- सड़क के किनारे/सार्वजनिक स्थल पर बालु/मिट्टी जमा नहीं करें।
- घर का कूड़ा-कचड़ा निर्धारित स्थल पर ही डालें।
- प्लास्टिक बैग/पोलिथिन का उपयोग न करें।
- दानापुर शहर को स्वच्छ सुन्दर एवं स्वस्थ्य बनाने में सहयोग करें।

डॉ. अनु कुमारी
मुख्य पार्षद
नगर परिषद् दानापुर निजामत

संजीव कुमार
कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद् दानापुर निजामत

राजकिशोर सिंह
उपमुख्य पार्षद
नगर परिषद् दानापुर निजामत